

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182314

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. *H 51* Accession No. *6.11.1313*

Author *M. N.*
Title *नजीर, सकबशवादी /*
नजीर की बानी / 1953

This book should be returned on or before the date last marked below

नज़ीरकी बानी

सम्पादक

रघुपति सहाय 'फ़िराक़'



प्रकाशक

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

१९५३ }

[मूल्य २।७]

Checked 1965

प्रथम संस्करण १९५३

Checked 1969

मुद्रक और प्रकाशक

जे० के० शर्मा इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

भूमिका

ये कवितायें कैसे पढ़ी जायं ?

जब इनमेंसे कोई कविता पढ़ना शुरू करे तो उसके छन्दके ताल-सम और झनकार और छन्दकी लयको पकड़िये। इसका ध्यान रखिये कि छन्दकी मात्राओं और छन्दके खटकोके अनुसार निम्नलिखित मात्रायें कभी बढ़ाकर (दीर्घ स्वरसे) कभी घटाकर (लघु या ह्रस्व स्वरसे) पढ़ना जरूरी हैं :—

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, औ, ओ,

जहाँ इन्हें छोटा करके पढ़ना छन्दके अनुसार आवश्यक है वहाँ इनको अलगसे मात्रा गिनी नहीं जाती जैसे—‘दोहरा’ में ‘ओ’ की मात्रा गिनी नहीं जाती यानी यह शब्द पाँच मात्राओंका नहीं बल्कि चार मात्राओंका माना जाता है। ‘द’ के उच्चारणमें ही ‘ओ’ का उच्चारण मिला दिया जाता है। ऐसा ही ‘तेहरा’ के उच्चारणमें भी करना पड़ता है। मिसालके तौरपर उर्दूकी निम्नलिखित पक्तियोंको देखिये :—

न कुछ हम हँसके सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं

जो कुछ थोड़ा-सा सीखे हैं किसीके होके सीखे हैं

पहली पक्तिमें दो बार ‘के’ शब्द आया है और दोनों स्थानोंपर यह शब्द एक मात्राका है यानी ‘ए’ की मात्राको ह्रस्व करके पढ़ना चाहिये। दूसरी पक्तिमें ‘सा’ में ‘आ’ की मात्रा ह्रस्व है और ‘थोड़ा-सा’ बराबर है ‘थोड़ा-स’के। लेकिन पहली और दूसरी दोनों पक्तियोंमें ‘सीखे’ में ‘ए’ की मात्रा दीर्घ है और दूसरी पक्तिमें ‘होके’ में ‘के’ की मात्रा ह्रस्व है।

तुम्हारी तहजीब अपने हाथोंसे आप ही खुदकुशी करेगी

जो शास्त्रे-नाजुक पै आशियाना बनेगा ना पायदार होगा

पहली पंक्तिमें ‘तुम्हारी’ की ‘ई’ ह्रस्व, ‘अपने’ में ‘ए’ ह्रस्व, ‘से’ में

‘ए’ ह्रस्व, ‘खुदकुशी’ और ‘करेगी’ में ‘ई’ और ‘ए’ दीर्घ। दूसरी पक्ति में ‘जो’ में ‘ओ’ ह्रस्व, ‘शाखे’ में ‘ए’ ह्रस्व, ‘पै’ में ‘ऐ’ ह्रस्व, ‘बनेगा’ में ‘आ’ ह्रस्व, ‘ए’ दीर्घ, बाकी शब्दोंमें हर स्वर दीर्घ।

‘औ’ की मात्रा कहाँ दीर्घ और कहाँ ह्रस्व करके पढ़नी चाहिये ? गालिबके इस मिसरेके :—

क्या खूब क्रयामतका है गोया कोई दिन और

‘और’ शब्दमें ‘औ’ की मात्रा दीर्घ है लेकिन गालिबके इस शेरके :—

तू और आराइशे-खमे-काकुल

में और अन्देशहाय दूर-ओ-दराज

दोनों मिसरोंके ‘और’ शब्दमें ‘औ’ को ह्रस्व करके पढ़ना पड़ेगा। यहाँ और दो मात्राका शब्द हो जाता है और ‘आ’ या ‘का’ के बराबर हो जाता है। ‘ऊ’ की मात्रा दीर्घ है लेकिन गालिबके इस मिसरेके :—

मैं हूँ और अफ़सुर्दगीकी आरजू गालिब कि दिल

‘और’ में ‘औ’ की मात्रा ह्रस्व है और ‘हूँ’ में ‘ऊ’ की मात्रा ह्रस्व है जिसे ‘हुँ’ पढ़ना चाहिये। ‘ऐ’ की मात्रा :—

कन्या अब कामिनी है होने वाली

आँखोंको नयन बनाने वाले दिन है

पहली पक्तिमें ‘है’ में ‘ऐ’ की मात्रा ह्रस्व है दूसरी पक्तिमें ‘है’ में दीर्घ है। ‘बनाने’ में ‘ऐ’ की मात्रा ह्रस्व है ‘वाले’ में दीर्घ। ‘दिन है’ में ‘ऐ’ की मात्रा दीर्घ है।

‘यह’ और ‘वह’ के शब्द जब उर्दू कवितामें आते हैं तो प्रायः ‘ह’ का उच्चारण नहीं किया जाता और ये शब्द बोले जाते हैं—‘ये’ और ‘वो’। ‘ये’ में ‘ए’ की मात्रा कभी ह्रस्व होती है कभी दीर्घ, और ‘वो’ में भी ‘ओ’ की मात्रा कभी ह्रस्व कभी दीर्घ।

हिन्दीके जितने छन्द हैं उन सबमें उर्दू शायरी हो सकती है और एकाध छन्द छोड़कर सबमें सुन्दरसे सुन्दर उर्दू शायरी हो चुकी है।

इन छन्दोके अतिरिक्त उर्दूमे अनेक ऐसे छन्दोका भी प्रयोग किया गया है जिनमे खडी बोली बहुत सुगम और स्वाभाविक रूपसे ढल गई है। हिन्दी कवि यदि इन छन्दोकी ओर ध्यान दे तो हिन्दी और उर्दू एक दूसरेके बहुत निकट आ जायेंगी।

आजकल प्रयोगवादकी एक फुलभडी हिन्दी कवितामे कुछ लोगोने छोड रखी है। इन लोगोने प्रयोगवादकी जैसी मिसाले पेश की है उसे मैं “भखमारवाद” कहता हूँ। ‘जजीरे टूटती है’^१ नामक पुस्तकमे आपको सच्चे प्रयोगवादकी कई एक सफलतम मिसाले मिलेगी।

अत्फ़ और इजाफ़त

हमारी बोलीमे अधिकसे अधिक शब्द तद्भव और देशज हैं। इन शब्दोके बाद जो शब्द सबसे अधिक हमारी बोलीमे घुल-मिल गये हैं वे फारसीके शब्द हैं। फारसी भी आर्यभाषा है और फारसीके शब्द भी तत्सम् सस्कृत शब्दोके तद्भव रूप हैं। फारसीके बाद हमारी बोलीमे लगभग एक हजार सरल और सुगम अरबी शब्द घुल-मिल गये हैं। तत्सम् सस्कृत शब्द हमारी बोलीमे सबसे कम हैं। उर्दूमे फारसी-अरबी शब्द अधिकतर फुटकर रूपमे आते हैं। कुछ शब्दोके जोडे होते हैं। सस्कृत और हिन्दीमे ये जोडे शब्द बिना किसी सयोजकके, समासके रूपमें आते हैं जैसे—धन-धान्य, मान-मर्यादा। यहाँ तक कि जब एक शब्द सस्कृत या हिन्दीका हो और दूसरा फारसी या अरबीका हो तब भी ये शब्द बिना किसी सयोजकके साथ-साथ आते हैं जैसे—धन-दौलत, इज्जत-पानी, रंग-रूप, खेल-तमाशा, बाल-बच्चे, शादी-ब्याह। लेकिन जब जोडे शब्दोमे या समासके रूपमे साथ लाये जानेवाले दोनो शब्द फारसी या अरबीके हो तो ‘ओ’ का सयोजक बीचमे लाया जाता है ‘ओ’ का अर्थ है ‘और’। हम गंगा-जमुना कहते हैं लेकिन फारसीमे इसे ‘गंगा-ओ-जमन’ कहते हैं, हम ‘आग-पानी’ कहते हैं, फारसीमे इसे ‘आतिश-ओ-आव’ कहते

^१यह पुस्तक भी इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेससे प्रकाशित हुई है।

हैं, इस 'ओ' के संयोजकको 'अत्फ' कहते हैं यानी संज्ञाओंको मिलानेवाला । इन कविताओंमें अनेक स्थानोपर 'अत्फ' का प्रयोग किया गया है । 'अत्फ'-को 'ओ' कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है यह बात छन्दपर निर्भर है ।

यो तो समास आठ तरहके होते हैं और इन सबमें जो विभक्तियाँ छिपी हुई हैं वह आठ तरहकी होती हैं । समासके स्थानपर उर्दू कवि अक्सर 'इजाफत' का प्रयोग करते हैं जिसका सूचक 'ए' का अक्षर है जो कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है । इजाफतमें शब्दक्रम बदल जाता है जैसे हृदय-पीडाको दर्दे-दिल कहेंगे, प्रेमीके हृदय-पीडाको दर्दे-दिले-आशिक कहेंगे । हिन्दीमें इजाफतोके अर्थ करनेका सीधा ढंग यह है कि पहले अन्तिम शब्दका अर्थ किया जाय और उसके बाद 'का' या 'के' लगाकर पहले आनेवाले शब्दका अर्थ किया जाय । इस तरह दर्दे-दिले-आशिकका अर्थ हुआ आशिकके दिलका दर्द । गालिबके इस शेरकी पहली पक्तिमें इजाफत और अत्फ दोनोंकी मिसाले साथ ही मिल जायँगी :—

**क़ंदे-हयात-ओ-बन्दे-गम, अस्लमें दोनों एक हैं
मौतसे पहले आदमी गमसे निजात पाये क्यों**

“अर्थात् जीवनका बन्धन और गमका बन्धन वास्तवमें दोनों एक हैं इसलिए मौतसे पहले आदमीको गमसे मुक्ति या छुटकारा कैसे मिले ।” पहली पक्तिमें “क़ंदे और बन्दे” में 'ए' की मात्राएँ इजाफत हैं और दोनोंको ह्रस्व पढ़ना चाहिये । 'ओ' का शब्द 'अत्फ' है जिसका अर्थ है और । अत्फको व करके न कभी लिखना चाहिये न कभी पढ़ना चाहिये । उपरोक्त पंक्तिमें 'ओ' को भी ह्रस्व पढ़ना चाहिये । लेकिन छन्दके अनुसार इजाफत में 'ए' की मात्रा और अत्फमें 'ओ' की मात्रा दीर्घ करके भी पढ़ी जा सकती है ।

नज़ीर अकबराबादी

कविके वारेमे कई साहित्य-प्रेमियोकी धारणा और कल्पना प्रायः ऐसी रही है कि कवि इस हलचलसे भरी हुई दुनिया, आवादीकी भीड़-भाड़, धरो, मुहल्लो, बाज़ारो और मेलो-ठेलोके शोर-ओ-गुलसे बिल्कुल अलग रहकर एक सुन्दर कल्पित संसारमे रहता है । धरतीके मैदानों, जंगलों, आवादियोमे अगर रहता भी है तो एकान्तवासीके तौरपर रहता है । यह धारणा और कल्पना उन कवियोके सम्बन्धमें कुछ ग़लत नहीं है जो अपने ही भावों और हृदयके उद्गारोमे निमग्न रहते हैं लेकिन अगर हम संसारके महाकवियोको देखें तो उनमेसे शायद एक आधको छोड़कर सभी जीवनकी हल-चल, जीवनकी रंगारंगी, जीवनकी भीड़-भाड़, जीवनके प्रकार और आये दिनके व्यवहारोसे घनिष्ठ संबंध रखनेका सबूत देते हैं । इन महाकवियोंकी चेतना, कल्पना और उनका जीवन धान-पान नहीं होता । ये महाकवि ऊंचे कलाकार होते हुए भी बड़े साधारण और दुनियादार होते हैं । इनकी असाधारण प्रतिभाका भेद साधारण जीवनसे उनके प्रेम और इस जीवनसे उनके तादात्म्यमें छुपा होता है । ये महाकवि दुनियासे अलग नहीं रहते और न दुनिया उनसे अलग रहती है । ये दुनियामे रहते हैं और दुनिया इनमें रहती है । ये दुनियाके होते हैं और दुनिया इनकी होती है । एक दिव्य अर्थमे ये महाकवि बड़े साधारण, बड़े मामूली लोग होते हैं । दुनिया उनसे हसती बोलती है और ये दुनियासे हंसते बोलते हैं । दुनियावी जीवनमें ये डूबे रहते हैं और इसी भवसागरमें नहा-नहाकर और गोते लगा-लगाकर अमर कविताके मोती हमारे लिए निकाल लाते हैं ।

नज़ीर अकबराबादी भी दुनियाके रंगमें रंगे हुए एक महाकवि थे । उनकी कविताओंमें रहती दुनिया हंसती-बोलती, जीती जागती, चलती-

फिरती और जीवनका त्योहार मनाती हुई नज़र आती है। नजीरकी कविताओमें उनके समयका जीवन, हर स्तर, हर वर्ग, हर तरह, हर रंग, हर ढग, हर अवस्था, हर स्थितिका जीवन इतने भरपूर ढगसे अपनी पूरी गति-शीलताके साथ और इतने स्वाभाविक और सजीव रूपमें चित्रित हुआ है कि भाषा, संस्कृति, सम्प्रदाय, जाति-धर्म सब भेद मिट गये हैं और नजीर एकमात्र ऐसे कवि माने गये हैं जिन्हें उर्दू और हिन्दीवालोंने किसानों, मजदूरों, मध्यमवर्ग, उच्च वर्ग, बच्चों-जवानों, बूढ़ों, स्त्रियों और पुरुषों सबने समान रूपसे अपनाया। राम-रहीम एक हो या अनेक, हिन्दू-मुसलमान एक जाति हो या दो जातियाँ हिन्दी-उर्दू एक भाषा हो या दो भाषाएँ सौ बातोंकी एक बात यह है कि सब भेद भाव समेत जनता एक है और हमारा रंगारंग समाज एक अखंड अछेद और अभेद समाज है। इसका बोलता हुआ सबूत नज़ीर अकबरावादीकी लगभग पचास हजार पक्तियोंमें फैली हुई वो कविताये हैं जिनमें हमारे जीवनकी चहकार सुनाई देती हैं।

नजीरका कोई कलाम या उनकी कोई वानी ऐसी नहीं जिसमें कुछ “छल बल” न हो। कोई ‘रेंगीलापन’ न हो और एक किस्मकी “ऐड” मौजूद न हो। नजीरने इन तमाम लक्षणों और गुणोंके मेलको चुटकुले वाज़ी कहा है। चुटकुलेवाज़ हमारे समाजका वह व्यक्ति है जो बच्चोंसे लेकर बूढ़ों तक, गरीबोंसे लेकर अमीरों तक हर उम्र और हर तबकेकी महफ़िलमें अपनी जगह पैदा कर लेता है, जो कभी “बारे खातिर” नहीं बल्कि हमेशा “यारे शातिर” साबित होता है और जिसकी हस्ती तकल्लुफ़ और बनावटसे बिल्कुल पाक होती है। उसकी जिन्दगीका आशावादी पहलू हमेशा सबकी नज़रोंके सामने रहता है। वह खुद हसे या न हसे लेकिन दूसरोंके दिलकी कली खिला देता है। वो एक अहला गहला और चौचाल लेकिन अहानिकर व्यक्ति होता है कि उससे सब मुहब्बत करते हैं। मत मतान्तरोंकी संकीर्णतासे वह हमेशा अलग रहता है। वह एक निहायत दिलचस्प किस्मका हँसमुख आदमी होता है जो दुनियाको दूसरोंकी निगाहोंसे

देखनेका ज्यादा अभिलाषी होता है । समाजके अन्दर अपनेको जड़ करके अपने व्यक्तित्वको भी सामूहिक चीज बना देता है । दूसरोके साथ घुल मिलकर जिन्दगी बसर करना उसका लक्ष होता है और दिलपर चोटें खानेके बाद भी हर वकन मुसकुराते रहना उसका स्वभाव और व्यवहार होता है । उसकी नबीअतकी रगीनी सीखी सिखाई चीज नहीं होती बल्कि सरासर स्वाभाविक होती है और इसीलिए वह कभी मौका पर चूकता नहीं और होठोपर आई हुई बातको रोकता नहीं । बोली ठोली, जिला जुगत, फब्ती, फिकरावाजी और बातसे बात पैदा करनेकी उसमे असाधारण क्षमता होती है । महफिलका जो रग होता है उसीमे वो डूब जाता है । ऐसा आदमी अजान और शख दोनोकी आवाजोसे मुहब्बत करता है । उसकी जिन्दगी कहकहा, हमहमा, जिन्दादिलीकी तस्वीर होती है और उसकी मुसीबते भी एक ऐसा रगीन असर छोड़ जाती है कि उसकी मौन भी जिन्दगीका नया अनुभव करा देती है ।

विद्वान् समालोचक योरोपीय डाक्टर फेलन जिन्होंने उर्दू भाषा और साहित्यका गहरा अध्ययन किया था कहते हैं कि नजीर ही एक शायर है जो अंग्रेजोकी कसौटीपर सच्चा उतरता है । उसकी शायरीने जनसाधारणके दिलोमे राह की है, उसकी कविताये सडको, खेतो और गलियोमे गाई जाती है । वह एक आजाद आदमी था । वो कुछ चाहता ही न था । सौभाग्य दुर्भाग्य उसके लिए बराबर थे जैसा उसने खुद कहा है कि वो अपनी खालमें मस्त था । वह आला दर्जेका साहित्यिक चित्रकार और आविष्कारी, विचारक और जगतका दोस्त था । इन्सानियतसे उसको गहरी हमदर्दी थी । वह हर चीजमे खूबी पाता था ।

अच्छे भी आदमी ही कहाते हैं ए नजीर
और सबमें जो बुरा है सो है वो भी आदमी

उसके दिल-ओ-दिमागकी सफाई और उसकी तहरीरकी लताफत इस

दर्जेकी है कि जब वो कोई फहश (अश्लील) खयाल भी पैदा करता है तो उसपर इस लताफ़तके साथ पर्दा डाल देता है कि उसकी अश्लीलता खटकती नहीं। इतना जानदार कलाम, इतना शोख और चंचल कलाम दुनियाके बहुत कम शायरोके यहां मिलता है। अंग्रेज़ीमें ऐसा काम चाँसर और शेक्सपियर कर सके हैं। उसे अपने ऊपर इतना भरोसा था कि शब्दोंको नये साचेमे ढाल लेता है। वह हिन्दुस्तानके इने गिने सबसे बड़े यथार्थवादी कवियोमे है।

डाक्टर फ़ेलनकी राय आप सुन चुके। अब नज़ीर की बानीकी कुछ और विशेषताएँ सुनिये। नज़ीर जीवन और प्रकृतिके अध्ययनका बादशाह है। मसलन होली हिन्दुओका त्योहार है। जब नज़ीर होलीको देखता है तो उसके सूक्ष्मसे सूक्ष्म अशोपर निगाह डालता चला जाता है। बरसातका दृश्य देखिये। आसमान पर भूरे बादल, ऊँदी बदलियाँ, काली घन घोर घटाएँ, पपीहेका जोर, मोरका शोर, हवाका चलना, पेड़ोंका लहलहाना, हरियालीसे तमाम जंगलमे मखमली फर्श बिछ जाना, भीलों, तालाबो, डबरोँका लबालब होना सब चीज़े ऐसी हैं जिनसे हम प्रभावित होते हैं। मगर नज़ीर और आगे बढ़ जाता है। वह मुहल्लों और मकानोकी दीवारोंमे पड़ी हुई दरारोंको भी देखता है। फिसलनकी भी तस्वीर खींचकर रख देता है। छतोका टपकना, मकानोका गिरना, धुआ, ऊमस, मुफलिस, गरीब, हाथी सवार, पालकी नशीन, पियादा, सवार, नौकर, मालिक, सबको फिसला देता है और कीचडमे गिरनेकी ऐसी-ऐसी तस्वीरें खेचता है कि मज़ा आ जाता है। नज़ीरकी कला और कल्पनाके लिए कोई विषय तुच्छ नहीं था। जैसे हवा स्वतन्त्र है वैसे ही नज़ीर भी कही बन्द नहीं है। मच्छर, खटमल, सांपका बच्चा, गिलहरी, कबूतर, बयेका बच्चा, पतंग बाजी, तैराकी, चूरन, खोचेवाले, रीछका बच्चा, तरबूज़, ककड़ी, छोटे मकान, बड़े मकान, नालों और नाबदानोंसे लेकर जमुनाका विस्तार, कृष्णकी बांसरी, अनगिनत मेले, रंगारंग पेशे और व्यवसाय क्या है जिसे नज़ीरकी कलमने सजीव करके

नहीं दिखा दिया । जीवनसे इस कविका कितना अगोघ प्रेम था ! हिन्दू त्योहारोपर तो ऐसी कविताएँ हिन्दीमें भी कम ही मिलेंगी ।

एक और बात कहनेकी है लेकिन है बहुत संभलकर कहनेकी । वो यह कि जो स्निग्धता, सुकुमारता लालित्य, कल्पनाकी सूक्ष्म और नाजुक गति, जो बनाव और रचाव, जो निजाकते और लताफते, शैलीकी जो सजावटे, जो अलंकृत रूपरेखा हम अनेक महान साहित्यिकोमें पाते हैं वह नजीरके यहाँ नहीं पाते । लेकिन यह बात ऐसी ही है कि जितनी सुसज्जित कला कालिदास और भवभूतिकी है उतनी आदि कवि वाल्मीकि-की नहीं है । या फिरदौसीके यहाँ हाफिजकी सतरंग कला नहीं है या चौसरके यहाँ शेक्सपियरका रस, रंग, और संगीत नहीं है । या होमरके यहाँ मिलटन-की वाते नहीं । या मलिक मुहम्मद जायसीके यहाँ तुलसीदासकी सुकोमल कला नहीं । कलामें ये अलंकार किसी भाषाके बहुत विकसित हो जानेके बाद पैदा होते हैं । एक उर्दू कवि कहता है ।

वो लड़कपनके थे दिन और ये जवानी की बहार

पहले भी रुखपर तेरे तिल था मगर क्रातिल न था

नजीरकी वानीके मुखपर जो तिल है वो अनीस, चकबस्त, अकबर, एकबाल और जोश मलीहाबादीके कलामके मुखपर कातिल बन गया है । नजीरने उर्दू भाषाके बचपन या लड़कपनके दिनोमें अपनी रचनाएँ की हैं । वह ठेठ उर्दू लिखता है । लेकिन ठेठपन और सादगीके बावजूद ये उर्दू कितनी जादूभरी है । दागका शेर याद आता है ।

भर दी है क्या अदाएं उस शोख सीमतनमें

एक टेढ़ सादगीमें एक सीध बांकपनमें

यही है नजीरकी शैली और भाषा-कला । अंग्रेजीके आदिकवि चौसरके बारेमें उसके मरनेके तीन सौ बरस बाद अपने समयके सबसे बड़े अंग्रेजी कवि और साहित्यकार ड्राइडेनने कहा था कि यहाँ (चौसरके

यहा) हम सचमुच परमात्माकी देन या सृष्टिकी प्रचुरता देखते हैं (Here indeed we have God's plenty). बिल्कुल यही बात हम नजीर अकबरावादीके बारेमें कह सकते हैं । और यह बात या इतनी बड़ी बात हम उन उर्दू कवियोंके बारेमें भी नहीं कह सकते जिनका अभी हमने नजीरके साथ नाम लिया है और जिन्होंने दृश्य चित्रण या दृश्य वर्णनमें नजीरकी रूप रेखाओको और चमकाया या और काव्यात्मक बनाया । विषय प्रचुरता और वर्णनमें अनेक अशो और हिस्मोको कवितामें उभारनेका जहातक सबध है अनीस, हाली, अकबर, एकवाल कोई नजीरकी गर्द तकको नहीं पहुचता । अगर नजीरके करीब कोई पहुचता है तो 'जोश' मलीहाबादी । उर्दूके किसी कविको मजमूई हैसियतसे नजीरसे बड़ा मानने या बड़ा बतानेका साहस गम्भीर समालोचक नहीं कर सकता । यह भी याद रखना चाहिए कि अनेक अवसरो पर नजीर विद्वत्तापूर्ण भाषा और शब्दावली या शैलीमें मीर, गालिब, एकवाल और 'जोश' से जरा भी नीचे या पीछे नहीं रहता । लेकिन उसकी दिव्य साधारणता प्रायः उसकी शैलीको रगारग बोली-ठोलीके स्तरसे ऊपर नहीं उठने देती । नजीरकी बानी, नजीरकी कला, नजीरका काव्य ससार एक कभी न समाप्त होनेवाला अखड रास-लीला है जिसमें बराबर अवीर, गुलाल, रग, तरग, थाप, भ्रकार दिखाई और सुनाई देते हैं । ऐसी सदा बहार और सदा सुहाग शायरी विश्व-साहित्यमें बहुत अधिक नहीं मिलती ।

कविताको जीवनकी समालोचना बताया गया है । ये समालोचना प्रायः जीवनके चित्रणके रूपमें होती है और समालोचनात्मक उक्तिया इस चित्रणमें कही-कही और कभी-कभी आती हैं । नजीर महात्मा या दार्शनिक या ऋषि-मुनिकी पगडी बाधकर हमारे सामने नहीं आता । वह एक साधारण दोस्त पड़ोसी और समकालीन नागरिककी हैसियतसे हमसे बातें करता है । वो इन्सानियतकी कमजोरियोंसे हमदर्दी करता है । वो सहृदय मित्र बनकर हमारा मनोविनोद करते हुए जीवनकी भीड़-भाड़में

हमारी गर्दनोमे हाथ डालकर हमे घसीट लाता है और हँसी छेडमें जीवनपर समालोचना भी कर जाता है । उसकी चुटकुलेबाजीमे कभी नर्म और कभी तेज चुटकिया छुपी हुई होती है और इन्ही चुटकियोमे, चेतनाकी इसी गुदगुदीमे नजीरकी जीवन समालोचना व्यक्त होती है । उसके यह हसमुख सख्यभाव और व्यवहार, उसकी यह यारी उसके जीवनकी समालोचना है । हम जितना महात्माओसे सीखते हैं उससे कहीं अधिक अपने जैसे साधारण लोगोसे सीखते हैं । नजीरकी असाधारण साधारणता, उसकी प्रतिभाकी कमौटी और दर्पण है । यही मानवीय स्पर्श नजीरको हमारे सामूहिक जीवनका एक सजीव अंश बना देता है । नजीर शेक्सपियर तो नहीं है लेकिन उसी बिरादरीके शायर हैं । दोनोने वही किया है जिसे शेक्सपियर कहता है to hold the mirror up to nature अर्थात् प्रकृति को आइना दिखाना ।

कहा जाता है कि मिया नजीर सन् १७३५ ईस्वीमे आगरेमे पैदा हुए । जब उन्होने होश सम्भाला तो आगरेके अर्बो-फारसीके प्रसिद्ध शिक्षको और आचार्योसे तालीम हासिल की । एक रवायत यह भी है कि नजीर आगरेमें नहीं दिल्लीमे पैदा हुए थे । यह वह ज़माना था जब मुगल साम्राज्यका सितारा डूब रहा था । सन् १७५७ मे जब अहमदशाह अब्दालीने चढाई की तो नजीर २२-२३ सालकी उम्रमे अपनी मा और नानीके साथ दिल्ली छोडकर अपने पुराने वतन आगरेमें मिठाई वाले पुलके पास आके आबाद हो गए । जवानी रग-रलियोमे कटी । पचीसी, जुआ, गजफा, चौसर, शतरज, कबूतर बाजी, लाल लड़ाना, पतंग बाजी, पैराकी, लकड़ी या चटकी डाड या पटेबाजी और नज़रबाजी ये थे उनके जवानीके मशगले । हिन्दू त्योहारोसे बहुत दिलचस्पी लेते थे और दिल-ओ-जानसे लुत्फ उठाते थे । ये वो वक्त था कि हिन्दू और मुसलमानोमे कोई बेगानगी न थी । नजीर मुकामी सभ्यता और संस्कृतिमें रंग गये थे । जवानी ऐसे ही भ्रमेलों और भेलों ठेलोंमें गुज़री । एक औरत जिसका नाम मोती था या जिसे नजीर

मोतीके नामसे याद करते हैं उसे दिल दे बैठे थे । जब वो २८ वर्षके हुए तो जाटोने आगरा लूट लिया और वहा अपना राज स्थापित करके जनताको बहुत सताया । नजीर भी लुट गए । अब रोजी कमानेकी फिक्र हुई । विद्याकी दौलत तो छिन नही सकती थी । मकतब पढाने लगे । लाला विलास राय खत्रीसे राहरस्म हो गई । उन्होने नजीरको सर आंखोपर बिठाया और अपने बच्चोको पढना-लिखना सीखनेके लिए उन्हे सौप दिया । लाला विलास राय खत्रीका परिवार अब तक आगरेमे आबाद है या आबाद रहा है ।

मुहल्ला ताजगजसे टट्टूपर सवार होकर कही जा रहे थे । टट्टूके चाबुक मारा तो एक राहगीरके लग गया । नजीर इतना पछताए कि उसी दिनसे बे चाबुकके टट्टूपर सवार होने लगे । नवाब वाजिदअलीशाहने उनके पास बहुत-सा रुपया भेजकर बुलाया । इतने रुपये आनेसे उन्हे रातभर नीद न आई । कहने लगे कि अदना ताल्लुकसे तो इतने तरदुद हैं जब पूरा ताल्लुक होगा तो खुदा जाने क्या हाल हो । फेको इस रुपयेको । रुपये वापस कर दिये और लखनऊ न गए ।

मिया नजीर राह चलते नज्मे कहा करते थे । शहर आते हुए टट्टुआनी कुछ ऐसी सघ गई थी कि किसीने मियाको सलाम किया और वो ठहर गई । कुजडा मिला, उसने कहा मिया ककडी पर भी कुछ कह दो । फ़कीर बोला कोई किस्सा कह दीजिए कि उसे गा-गाके भीक मागू । एक बार चन्द औरतोंने रोक लिया और तक्राजा किया कि हमारे लिए कुछ कह दो । उन्होने बहुत टाला मगर वो काहेको मियाको छोडती । मजबूर होकर उनके नाम पूछे । एकने कहा “जमुना”, दूसरीने कहा “गंगा” । नजीर बोले :

यारब मेरी दुआको जल्दी क़बूल कीजे

जमुनामे लगा बल्ली गंगाको पार कर दे

कनारी बाज़ार जाते हुए कोठेपरसे एक रंडीने कहा कि मियां हमको

अपना कलाम सुनाओ । गाएंगे और कमायेंगे । नजीरने फौरन कहा—

लिखें हम ऐशकी तस्ती पे किस तरह ऐ जां

कलम जमीनके ऊपर दवात कोठे पर

वो भेपकर चुप हो गई ।

मियां नजीरमें नम्रता बहुत आ गई थी । जिस मजलिसमें बैठते अपने शिष्टाचारके कारण चराग मा मा धेड उम्रमें शादी कर ली थी और मोरी दरवाजा उठ आये टा-सा मकान बना लिया था । तमाम उम्र उसीमें रहे औ खाक हुए ।

मीठे चावल और खिचडी बहुत । नीबूका अचार, गुलगुले, चिल्ले, फलोंमें मऊका खरबूजा, आ फा, अपनी-अपनी फसिलपर शौकसे खाते । दावतमें कम जाते । ज़ कुछ लोग उनके घर पहुँचे, कुंडी खटखटाई । थोड़ी देरमें देखते हैं कि मियां नजीरने दरवाजा खोला तो तमाम वदनपर आटा और करका गुबार लगा हुआ है । सबने पूछा मिया खैर तो है । बोले तुम्हारे भावज बिगड बैठी है । आटा कौन पीसता ? रोटी कौन पकाता ? सोचा खुद ही आटा पीसकर रोटी डाल लूं कि इतनेमें तुम लोग आ गए । सबन कहा तुम अपना काम कर चुके, अब हम अपना काम किये देते हैं । सब मिलजुलकर खाना पकाया और खुद भी खाया । और “रूठी भावज” यानी मियां नजीरकी बीबीको मना कर खिला-पिला दिया । सन् १८३०में जब नजीर ६५ वर्षके थे, उनपर फालिज गिरा । अब मकतब पढ़ाना नामुमकिन हो गया । बेटेको बुलाया और कहा भइया अब तुम इस मकतबदारीका काम संभालो वरना कहाँसे गुजारा होगा । वो बोले कि मैंने गुलिस्तां बोस्तासे आगे फ़ारसी नहीं सीखी । कठिन किताबें कैसे पढ़ा सकूंगा । नजीर लड़खड़ाई हुई आवाज़में बोले जाओ मियां खुदाका नाम लो पढ़ाओ । ये पढ़ाने लगे और इस काममें सफल हुए । १६ अगस्त १८३० को नजीरका देहान्त हुआ । जनाज़ेकी नमाज़ दो मरतबे

पढाई गयी । मुन्नियोने अलग पढी, शियोने अलग । हजारहा हिन्दू मुसल-
मान जनाजेमे शरीक हुए । अपने मकान हीमें दफन किये गये जहा सालाना
उर्स होता था । गाना बजाना होता था । और यह मेला रातभर होता था ।
अब भी होता है लेकिन अब बहुत कमीपर है । भारतमें जिस नये सांस्कृतिक
जागरणके चिह्न उभर रहे हैं उससे यह आशा बधती है कि नजीर अकबरा-
बादीका स्मारक उनकी कृतियोंके अनुसार बनेगा और यह मेला और
उत्सव हर साल हिन्दी-उर्दू प्रेमी लखोकी सख्यामे धूमधामसे मनायेगे ।

—फ़िराक़

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
धर्म		ऋतु और ऋतुकी चीजें	
१—मोजझए हज़रत अली	१	१२—बहार	५५
२—मद्दह नानकशाह गुरु	९	१३—चाँदनी	५९
संस्कृति		१४—भङ्गी	६१
३—होली	१२	१५—बरसात और	
४—समधिन	१४	फिसलन	६४
५—सामान दिवालीका	१५	१६—बरसातकी बहारे	६७
मेले		१७—ऊमस	७८
६—आगरेकी तैराकी	२०	१८—कोरा बरतन	८१
खेल-तमाशे		१९—आगरेकी ककड़ी	८५
७—रीछका बच्चा	२४	२०—तरबूज	८८
देश-प्रेम		२१—ऑंधी	९१
८—शह आशोब	२८	२२—जाडेकी बहारे	९४
जीवनके तीन भाग		जीवन समालोचना	
९—बचपनके मजे	३८	२३—मौत	९६
१०—जवानी	४०	२४—फ़कीरोकी सदा	
११—बुढ़ापा	४३	(१) बुरलकी बुराइयां	१०१
		२५—फ़कीरोकी सदा (२)	
		सफ़रे-आखिरतकी	
		तय्यारी	१०६

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
२६—बनजारा नामा	१०९	रूप और प्रेम	
२७—भोपडा	११२	४०—जुदाई	१६४
२८—आईना	११४	४१—दीदबाजी	१६८
२९—दुनिया दारुलमकाफात है	११७	४२—खमसा वर गजल खुद	१७५
३०—दुनिया भी क्या तमाशा है	१२०	४३—ख्वाबका तिलस्म	१७८
३१—दुनिया धोकेकी टट्टी है	१२६	४४—हुस्न-ओ-जमालको गनीमत समझो	१८३
३२—कलजुग	१३१	४५—परीका सरापा	१८७
३३—पैसा	१३५	कहानियाँ	
३४—मुफलिसी	१४०	४६—किस्सा हस	१९२
३५—आटे दालका भाव (१)	१४८	४७—कौव्वे और हिरनकी दोस्ती	१९७
३६—आटे दालका भाव (२)	१५०	भाँकियाँ और भलकियाँ	
३७—रोटियाँ	१५३	४८—जनम कन्हैयाजी	२००
३८—चपाती	१५७	४९—हरकी तारीफ़	२०८
३९—आदमीनामा	१६०	५०—तबकुल या तर्क-तमा	२१५
		५१—महादेवजीका ब्याह	२१८

मोज़ज़ए-हज़रत अली

(हज़रत अलीका चमत्कार)

सुनते हो ए अलीके मुहिब्बाने-दोस्तदार^१
इक मोज़ज़ा^२ मैं कहता हूं उस शहका आशकार^३
है ताज़ा वारदात ये अज़ नक्ले रोज़गार^४
था कोई शख्स दौलतो-ओ-हशमत^५ मे नामदार
इक रोज़ वो गया था कहीं खेलने शिकार

जिस दशतमे शिकारको गुज़रा था वो ग़नी^६
वां एक शेर रहता था और उसकी शेरनी
था एक चश्मा पानीका और सब्ज़ थी बनी^७
दो बच्चे उस बनीमे थी वो शेरनी जनी
दस बीस रोज़के थे अभी तिफ़ले-शीर ख़वार^८

बच्चोंको अपनी छाती पे रखे वो बे ज़बां
दोनोंको बैठी दूध पिलाती थी शादमां
बंदूक़की जो आई सदा इसमे नागहां^९
नर मादा दोनों भाग गये होके नीम जां^{१०}
बच्चे अकेले रह गये जंगलमे बेकरार

^१अलीके प्रेमी ^२चमत्कार ^३उद्धाटित प्रकट ^४सुनी सुनाई
^५धन सम्पत्ति मान ^६उदार ^७हरा भरा छोटा-सा बन ^८दूध पीते बच्चे
^९अकस्मात ^{१०}अधमरे

अलक़िस्सा जब शिकारसे फ़ारिग^१ हुआ वो शाह
नागाह दोनों बच्चों पै उसकी पड़ी निगाह
रखवाके उनको ऊंट पै जल्दीसे ख्वामखाह
ली उस शिकार-गाह^२ से फिर अपने घरकी राह
महलोंमें अपने आन के उसने लिया करार

जब आये शेर-ओ-शेरनी बा हालते-तबाह
और दोनों बच्चे घरमें न आये उन्हें निगाह
वो शेर खाके राश गिरा इक बार करके आह
और शेरनीने ली नजफ़ अशरफ़की^३ वोही^४ राह
सर पीटती चली वो बयाबांसे सोगवार^५

अलक़िस्सा कितने रोज़में वो शेरनी गरीब
भूकी पियासी फेरती होंटों पै खुश्क जीब
शौहरसे छूटी और हुई बच्चोसे बे नसीब
आ पहुंचो यकबयक नजफ़ अशरफ़के अन क़रीब
पंजोसे अपने सर पै उड़ाती हुई गुबार

बाज़ारमें नजफ़के जब आई वो नीम जां
हर इक दुकांसे वांकी उठा शेर और फ़ुग़ां
कोई पुकारा दोड़ियो कोई पुकारा हां
हैबत^६ से उसकी छुपने लगे पीर और जवां
चारों तरफ़से धूम मची आके एक बार

^१निवृत्त

^२शिकारकी जगह, जहाँ शिकार खेला जाय

^३नजब अशरफ़—वह स्थान जहाँ हज़रत अलीका मजार है

^४अब वही बोलते हैं

^५दुखी, शोकाकुल

^६भय

वो तो किसी तरफ़को न घुरकी बताती थी
नै मुंहको फेरती थी न पंजा उठाती थी
आंखोंसे उस हजूममे आंसू बहाती थी
शाहे नजफ़के रौजे पै फ़रयादी जाती थी
लोग इस पर अपने खौफ़से कहते थे मार मार

जिस दम वो पहुंची है दरे-सफ़दर^१के दर तलक
दरबान उसके खौफ़से यक सर गये सरक
दाखिल हुई वो रौजए अनवरमे यक बयक
रौने लगी वो सामने सरको पटक पटक
आंसूकी दोनों आंखोंसे बहने लगीं क्रतार

आंखोंसे उसके आंसूकी नदी जो बहती थी
बच्चोंका दाग़ अपने कलेजे पै सहती थी
कुछ मुंहसे शोर करती थी कुछ देख रहती थी
गोया वो शहसे अपनी जुबांमे ये कहती थी
बच्चे मेरे दिलाइये या शेरें-किरदगार^२

रोती थी यों वो शेरनी आंसू बहा-बहा
मजलूम^३ जैसे रोये है आदिल^४के पास आ
और कुछ जुबांसे अपनी सुनाती थी बग़बग़ा^५
निकले थी आग़ा आग़ाकी मुंह उसके-से सदा
कह 'आक्रा आका' दर्दसे रोती थी ज़ार-ज़ार

^१हजरत अली

^२खुदाके शेर, अलीकी एक उपाधि

^३पीड़ित

^४न्यायाधीश

^५फ़रियाद

फ़रियादी बनके साक्रिये कौसर^१के सामने
 मुहताज बनके साहबे-क़न्बर^२के सामने
 यूँ देखती थी रौज़ए-अनवर^३के सामने
 मज़लूम जैसे आनके दावर^४के सामने
 करता है उसके हुक्म का रह रहके इन्तज़ार

लोगोंके दिलसे जब तो हुआ खौफ़ इसका कम
 सब उसके पास आनके देखे थे उसका ग़म
 हर आन अपने सरको पटक करके चश्मे-नम^५
 पंजोको इस तरह वह उठाती थी दमबदम
 फ़रियादी दाद मांगे हैं जूँ हाथको पसार

फ़रियाद वह तो मांगे थी आकासे भूम भूम
 यानी फ़लक^६ने मुझको दिखाया ये रोज़े-शूम^७
 इस बातसे तमाम नजफ़मे पड़ी ये धूम
 गिर्द उसके मर्द-ओ-ज़नका हुआ आनके हज़ूम
 हैरतमे थे तमाम चे नादां चे होशियार^८

कोइ पानी उसके वास्ते कोइ खाना लाता था
 लेकिन उसे तो रोने सिवा कुछ न भाता था
 बच्चोका दाग़ होश सब उसके उड़ाता था
 जो उसको देखता था उसे रोना आता था
 ऐसी तरहसे सरको पटकती थी बारबार

^१स्वर्ग की एक हौज का नाम कौसर है ^२कंवरके स्वामी
 कंवर अलीके गुलामका नाम था ^३मज़ार, ^४ईश्वर ^५सजल नेत्रोंसे
^६जैसे ^७आकाश ^८बुरा दिन ^९चाहे नादान चाहे बूढ़े

जब तीन दिन वो शेरनी भूकी पड़ी रही
नाचार उन शरीफोंने देख उसकी बेकली
जिस तरह वां क़दीम^१से कहनेकी राह थी
उस तरहसे जनाबे-मुक़द्दस^२मे अर्ज़ की
बा-सीनये-अलम-कश-ओ-बा चश्मे-अश्क बार^३

आई निदा^४ ये शेरनी देती दुहाई है
इक शरूसके ये जुल्म-ओ-सितमकी सताई है
बच्चोंने इसके क़ैदकी आफ़त जो पाई है
सो अब हमारे रौजे पै फ़रियादी आई है
कल इसका भेद होवेगा तुम सब पै आशकार^५

यां तो शरीफ़को ये इनायत हुआ जवाब
वां जा पलंग उलट दिया उसका बऐने-ख़्वाब
फ़रमाया वो जो शेरके बच्चे हैं दिल कबाब
भिजवा दे उनको शहरे-नजफ़मे तू कल शताब^६
वरना तू इस गुनहसे बहुत होगा शर्मसार

मां उनकी उनके वास्ते आंसू बहाती है
और तीन दिन हुए हैं न पीती न खाती है
फ़रियादी होके रोती है और गुल मचाती है
गश हो हमारे रौज़ेमे जीको खपाती है
जल्दीसे उनको भेज दे, कर ऊंट पर सवार

^१पुराने समयसे
बहाती आँखोंके साथ
निद्राकी अवस्थामें

^२(अलीकी) सवामे
^३आवाज
^४तुरन्त

^५दुखी हृदय और आंसू
^६प्रकट
^७ठीक

वो थरथराके कांप उठा होके उज्र खाह^१
 जाना ये उसने ये है शहं-शाहे-दीं पनाह^२
 बोला नजफ़ तो पन्द्रह दिन की है यांसे राह
 भिजवा दूँ किस तरहसे उन्हें कल मैं पुर-गुनाह^३
 इतना तो इस गुलाममे कब हैगा एखतियार

तब हुक्म ये हुआ उसे जिस वक़्त हो सहर^४
 जल्दीसे दोनों बच्चोंको रखवाके ऊंटपर
 भेजवा दे अपने शह्रकी आबादीसे उधर
 जब पहुंचेगे ये शह्रके दरवाजेके ऊपर
 वां पैदा होगा गैबसे इक नाक-ओ-सवार^५

होते ही सुबह उसने मंगाकर वो दो बचे
 रखवाके एक ऊंट पै जल्दी रवां किये
 जब लोग आये शह्रके दरवाजेके कने
 क्या देखे एक शरस को वां आधी रातसे
 है मुंतज़िर वो ऊंटकी पकड़े हुए महार^६

जाते ही दोनों बच्चे उन्होंने उसे दिये
 बा-एहतियात^७ सौपके फिर शह्रको फिरे
 वो इन बच्चोंको लेके चला इस शताबसे
 आ पहुंचा उस मकानमे इक पहर दिन चढ़े
 यक बार उसका शहरे-नजफ़मे हुआ गुजार

^१क्षमा मागता हुआ^२शरण^३पापपूर्ण, पापी^४सुबह^५ऊंट और सवार^६नकेल^७सावधानीके साथ

बच्चोंके आने आनेके जब गुल हुए कड़ोड़
 वो शेरनी भी तकने लगी अपने मुंहको मोड़
 जब लाके उसके सामने बच्चे दिये वो छोड़
 यों खुश हो चाटने लगी उलफ़तसे वो भंभोड़
 इन्सान जैसे करता है बच्चोंको अपने प्यार

बच्चे भी दौड़ मांके गलेसे लिपट गये
 यूँ जैसे कोई दर्दका बिछड़ा हुआ मिले
 छाती पे लोट लोटके जा दूधसे लगे
 उस शेरनीके जैसे कलेजेमे दाग थे
 वैसे ही उसके मुंह पे खुशीकी हुई बहार

जब उसने बच्चे पाये तो होकर वो शदमां
 बच्चों समेत उठके वो हेवान-बेजबां
 रौजेके सात बार तसद्दुक^१ हुई वहां
 फिर आस्ताना^२ चूम हुई वांसे वो रवां
 जा पहुंची अपने दस्तमे खुश होके एक बार

शेरे-खुदा के अद्लकी ये देख रस्म-ओ-राह
 खिलकत तमाम बांकी पुकारी कि वाह वाह
 इन्साफ़ ऐसा चाहिये ए शाहे-दी-पनाह
 हामी व मुनसिफ़ और नहीं कोई तुम सा शाह
 है खतम तुम पर अद्ल^३ व हिमायतका कारोबार

^१ निछावर

^२ मजार

^३ न्याय

हैंवां तुम्हारे लुत्फ़से जिस वक़्त होवें शाद
 इन्सान फिर यहांसे फिरे क्योंकि नामुराद
 जैसे तुम्हारे दरसे मिली शेरनीको दाद
 एहसान ऐसे ऐसे बहुत ए करम नहाद^१
 हैंगे तुम्हारे सफ़हए आलम^२मे यादगार

ए शाह ये 'नज़ीर' तुम्हारा गुलाम है
 रखता सिवा तुम्हारे किसीसे न काम है
 आसी^३ है पुरगुनाह है और नातमाम है
 दिन रात उसका आपसे अब ये कलाम है
 रख लीजो मेरी आबरू या शेर किरदिगार^४

^१करम, दया करनेके लिए मशहूर ^२दुनियाके पृष्ठपर ^३गुनाहगार
^४खुदाके शेर (हज़रत अलीकी उपाधि)

मद्ह नानकशाह गुरु

(गुरु नानककी वन्दना)

हैं कहते नानक शाह जिन्हे वो पूरे हें आगाह^१ गुरु
वो कामिल रहबर^२ जगमे हैं यूं रोशन जैसे माह^३ गुरु
मकसूद, मुराद, उमीद सभी बर लाते हैं दिलखाह^४ गुरु
नित लुत्फ-ओ-करमसे करते हैं हम लोगोंका निर्बाह गुरु
इस बख्शिशके इस अजमत^५के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास^६ करो और हर दम बोलो बाह गुरु

हर आन दिलों बिच यां अपने जो ध्यान गुरुका लाते हैं
और सेवक होकर उनके ही हर सूरत बीच कहाते हैं
गुरु अपनी लुत्फ व इनायतसे मुख चैन उसे दिखलाते हैं
खुश रखते हैं हर हाल उन्हें सब मनका काज बनाते हैं
इस बख्शिशके इस अजमतके हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हरदम बोलो बाह गुरु

जो आप गुरुने बख्शिशसे इस खूबीका इरशाद किया
हर बात वो है इस खूबीकी तासीरने जिसपर स्वाद^७ किया
या जिस जिसने उन बातोंको हैं ध्यान लगाकर याद किया
हर आन गुरुने दिल उनका खुश वक्त किया और शाद किया

^१जानी ^२पूर्ण पथ प्रदर्शक ^३चाँद ^४मनचाहा ^५महानता ^६बंदना

^७स्वाद एक अक्षर है जिससे 'सही' शब्द लिखा जाता है। किसी बात पर स्वाद करनेका अर्थ है सही करना, समर्थन करना

इस बख़्शिशके इस अज़मतके है बाबा नानक शाह गुरु
 सब सीस नवा अरदास करो और हरदम बोलो बाह गुरु
 दिन रात सभोंने यां दिल बिच है यादे गुरुसे काम लिया
 सब मनके मकसद भर पाये खुश वक्तीका हंगाम' लिया
 दुःख दर्दमे अपने ध्यान लगा जिस वक्त गुरुका नाम लिया
 पल बीच गुरुने आन उन्हें खुश हाल किया और थाम लिया
 इस बख़्शिशके इस अज़मतके है बाबा नानक शाह गुरु
 सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो बाह गुरु
 यां जो जो दिलकी ख़्वाहिश की कुछ बात गुरुसे कहते हैं
 वो अपनी लुत्फ-ओ-शफ़कत^१ से नित हाथ उन्हीके गहते हैं^२
 अल्लाफ़^३ से उनके खुश होकर सब ख़्बीसे ये कहते हैं
 दुःख दूर उन्हीके होते हैं सौ मुखसे जगमे रहते हैं
 इस बख़्शिशके इस अज़मतके है बाबा नानक शाह गुरु
 सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो बाह गुरु
 जो हर दम उनसे ध्यान लगा उमीद करमकी धरते हैं
 वो उन पर लुत्फ-ओ-इनायतसे हर आन तबज्जह करते हैं
 असबाब खुशी और ख़्बीके घर बीच उन्हीके भरते हैं
 आनन्द इनायत करते हैं सब मनकी चिन्ता हरते हैं
 इस बख़्शिशके इस अज़मतके है बाबा नानक शाह गुरु
 सब सीस नवा अरदास करो और हर दम बोलो बाह गुरु
 जो लुत्फ-ओ-इनायत उनमे है कब वस्फ़^४ किसीसे उनका हो
 वो लुत्फ-ओ-करम जो करते हैं हर चार तरफ़ है जाहिर वो

^१मुखका अवसर^२कृपा और स्नेह^३मजबूती से हाथ पकड़ते हैं^४लुत्फका बहुवचन^५गुणगान

अलताफ़ जिन्हों पर हैं उनके सौ खूबी हासिल है उनको
हर आन 'नज़ीर' अब यां तुम भी या बाबा नानक शाह कहो
इस बख़्शिशके इस अज़मतके है बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अरदास करो और हरदम बोलो बाह गुरु

होली

जब फागुन रंग भूमकते हों तब देख बहारे होलीकी
और दफ़'के शोर खड़कते हों तब देख बहारे होलीकी
परियोंके रंग दमकते हों तब देख बहारे होलीकी
खुम,^१ शीशे, जाम छलकते हों तब देख बहारे होलीकी
महबूब^२ नशेमे छकते^३ हों तब देख बहारे होलीकी
हो नाच रंगीली परियोंका बैठे हों गुलरू^४ रंग भरे
कुछ भीगे ताने होलीके कुछ नाज़-ओ-अदाके ढंग भरे
दिल भोले देख बहारोंको और कानोंमे आहंग भरे
कुछ तबले खड़के रंग भरे कुछ ऐशके दम मुंह जंग भरे
कुछ घुंघरू ताल छनकते हों तब देख बहारे होलीकी
सामान जहां तक होता है इस इशरतके मतलूबोंका^५
वो सब सामान मुहय्या हो और बाग खिला हो खूबों^६ का
हर आन शराबे ढलती हों और ठठ हो रंगके डूबोंका
इस ऐश मजेके आलममे इक गोल खड़ा महबूबोंका
कपड़ोंपर रंग छिड़कते हों तब देख बहारे होलीकी
गुलज़ार खिले हों परियोंके, और मजलिसकी तैय्यारी हो
कपड़ों पर रंगके छींटोंसे खुश रंग अजब गुलकारी हो

^१ चग ^२ सुराही ^३ सुन्दर प्रेमिकाएँ ^४ मस्त हो, बहकते हों
^५ 'फूलो जैसे सुन्दर मुखड़ेवाले ^६ भोग-विलासके प्रेमियो ^७ सुन्दरियों

मुंह लाल, गुलाबी आंखें हों, और हाथोंमें पिचकारी हो
 इस रंग भरी पिचकारीको, अंगिया पर तक कर मारी हो
 सीनोंसे रंग ढलकते हों, तब देख बहारे होलीकी
 इस रंग रंगीली मजलिसमें, वो रंडी नाचनेवाली हो
 मुंह जिसका चांदका टुकड़ा हो, और आंख भी मयकी^१ प्याली हो
 बद मस्त, बड़ी मतवाली हो, हर आन बजाती ताली हो
 मयनोशी^२ हो बेहोशी हो “भड्डुए”की मुंहमें गाली हो
 भड्डुवे भी भड्डुवा बकते हों, तब देख बहारे होलीकी
 और एक तरफ दिल लेनेको महबूब मवय्योंके लड़के
 हर आन घड़ी गत भरते हों कुछ घट-घटके कुछ बढ़-बढ़के
 कुछ नाज जतावे लड़-लड़के कुछ होली गावे अड़-अड़के
 कुछ लचके शोख कमर पतली कुछ हाथ चले कुछ तन फड़के
 कुछ काफिर नैन मटकते हों तब देख बहारे होलीकी
 ये धूम मची हो होलीकी और ऐश मजेका भक्कड़ हों
 उस खींचा खींचकी कुश्तीमें और भड्डुवे रंडीका फक्कड़ हो
 माजून^३ शराबे, नाच, मजा और टिकिया, सुलफ़ा, कक्कड़ हो
 लड़भिड़के ‘नज़ीर’ फिर निकला हो कीचड़ में लत्थड़ पत्थड़ हो
 जब ऐसे ऐश भूमकते हों तब देख बहारे होलीकी

^१शराबकी^२मदिरा पान^३कई प्रकारकी शराबोंको

समधिन

सरापा^१ हुस्ने-समधिन गोया गुलशनकी ब्यारी है
परी भी अब तो बाजी हुस्नमे समधिनसे हारी है
खिची कंधी गुधी चोटी जमी पट्टी लगा काजल
कमाँ अबू^२ नज़र जादू निगह हर एक दुलारी है
जबीं^३ महताब^४ आँखे शोख शीरीं लब गोहर-दन्दाँ^५
बदन मोती दहन गुंचा अदा हँसनेकी प्यारी है
नया किमल्लाबका लहंगा भूमकते ताशकी अँगिया
कुचे तस्वीरसी जिनपर लगा गोटा किनारी है
मुलायम पेट मल्लमलसा कलीसी नाफ़की^६ सूरत
उठा सीना सफा पेड़ अजब जोबनकी नारी है
लटकती चाल मदमाती चले बिच्छूको^७ भनकाती
अदामे दिल लिए जाती अजब समधिन हमारी है
भरे जोबन पे इतराती भूमक अँगियाकी दिखलाती
कमर लँहगेसे बल खाती लटक घँघटकी भारी है

^१सिरसे पैर तक

^२भवे कमानकी तरह

^३ललाट

^४चाँद

^५गोहर=मोती, दन्दाँ=दाँत यानी मोतीकी तरह दाँत

^६नाभि

^७पैरकी अँगुलीमे पहननेवाला जेवर, बिछुवा

सामान दिवालीका

हर इक मक़ामे जला फिर दिया दिवालीका
हर इक तरफ़को उजाला हुआ दिवालीका
सभीके जीको समां भा गया दिवालीका
किसीके दिलको मजा खुश लगा दिवालीका
अजब बहारका है दिन बना दिवालीका

जहामे यारो अजब तरहका है ये त्यौहार
हर इक दुकामे चिरागोंकी हो रहो है बहार
खिलौने, खिलों, बताशोंका गर्म है बाजार
किसीने नक़द लिया और कोई करे है उधार
सभीको फ़िक्र है अब जा बजा दिवालीका

खिलौने मिट्टीके घरमे कोई ले आता है
चिराग़ दान कोई हडियां मंगाता है
सोहाली गोचा व मटरी कोई पकाता है
दिवाली पूजे है हँस हँस दिये जलाता है
हर एक घरमे समां छा गया दिवालीका

जहामे वो जो कहाते हैं सेठ साहूकार
दोशाला, शाल, ज़रो, ताश बादलेकी बहार
खिलौने खिलों, बतासोंके लग रहे अंबार
चिराग़ जलते हैं घर हो रहा है सब गुलज़ार
खिला है सामने इक बाग़-सा दिवालीका

मिठइयोंकी दुकाने लगाके हलवाई
 पुकारते हैं कि “लाला दिवाली है आई”
 बतासे ले कोई बरफ़ी किसीने तुलवाई
 खिलौनेवालोंकी इनसे ज़ियादा बन आई
 गोया उन्हींके हाथ राज आ गया दिवालीका
 कोई कहे है इस हाथीका बोलो क्या लोगे
 ये दो जो घोड़े हैं इनका भी क्या भला लोगे
 कोई कहे है कि इस बैलका टका लोगे
 वो कहता है कि, मियां जाओ बैठो क्या लोगे
 टकेको ले लो कोई चौघड़ा दिवालीका
 कोई खड़ा फ़कत इक चौघड़ा चुकानेको
 कोई जो गजरीका पैसा लगा बतानेको
 वो कहता है कि मैं बेंचूंगा पांच आनेको
 ये पैसा रखो तुम अपने अफ़ीम खानेको
 कि जिसकी लल्लूमे देखो मज़ा दिवालीका
 हटा है मोर पै लड़का किसीका या चेला
 कोई गिलहरीके नौ दाम दे है या धेला
 वह धेला फेकके इसका कुम्हार अलबेला
 खिलौना छीनके कहता है ‘चल’ मुझे दे ‘ला’
 तू ही तू आया है गाहक बड़ा दिवालीका
 कबूतरोंका किसीने लिया न बेल^१ चुका
 कोई छदामको रखता है भोर-बेल^२ चुका
 वो कहता है कि ‘मियां लो जी, इसका मेल चुका

ये धुन है दिलमें तो लड़का तुम्हारा खेल चुका
चबेना लड़केको दो तुम दिला दिवालीका

इधर ये धूम उधर जोश पर जुए खाने
कुमारबाज लगे जाबजासे वां आने
अशर्फी कौड़ी व पैसे रूपे लगे आने
तमाम ज्वारी हुए माल-ओ-जरके दीवाने
सभोंके सर पे चढ़ा भूत-सा दिवालीका

सिरफ़ हरामकी कौड़ीका जिनका है व्योपार
उन्होंने खाया है उस दिनके वास्ते ही उधार
कहे हैं हँसके करज ख्वाहसे हर इक इक बार
दिवाली आई है सब दे दिलायंगे ए यार
खुदाके फ़ज़लसे है आसरा दिवालीका

हुआ मिलाप सभोंमे गई दिलोंकी रूठ
हर एक हाथ लगे दांव आने सच और भूठ
चढ़ा है मीर बिसातोंके मुंह पे रंग अनूठ
सोलहियां फेकते हैं और कहीं हैं नक्की मूठ
कि जिस के शोरसे घर भर गया दिवालीका

मकान लीपके ठिलिया जो कोरी रखवाई
जला चिराग़को कौड़ी वह जल्द भनकाई
असल जुवारी थे उनमे तो जान-सी आई
खुशीसे कूद, उछलकर पुकारे 'ओ भाई
शगून पहले करो तुम ज़रा दिवालीका'

शगुनकी बाज़ी लगी पहली बार गंडेकी
फिर उससे बढ़के लगी तीन चार गंडेकी

बड़ी जो ऐसी तरह बार-बार गंडेकी
 तो आगे लगने लगी फिर हजार गंडेकी
 कमाल निखर लगा फिर तो आ दिवालीका
 किसीने घरकी हवेली गिरो रक्खा, हारी
 जो कुछ थी जिन्स मुयस्सर बना-बना, हारी
 किसीने चीज किसीकी चुरा छिपा, हारी
 किसीने गठरी पड़ोसिनकी अपनी ला हारी
 ये हार-जीतका चर्चा पड़ा दिवालीका
 किसीको दाँव पै ला नक्की मूठने मारा
 किसीके घर पै धरा, सोख्ताने अंगारा
 किसीको नर्दने चौपड़के, कर दिया ज़ारा
 लंगोटी बांधके बैठा, अज़ार तक हारा
 ये शोर आके मचा जा बजा दिवालीका
 किसीकी जोरु कहे है पुकार “वै भड़वे
 बहूकी नौग्रही, बेटेके हाथके खड़वे”
 जो घरमे आवे तो सब मिल कहे है “सौघड़वे
 निकल तू यांसे तेरा काम यां नहीं भड़वे
 खुदाने तुझको तो शुहदा किया दिवालीका”
 वो उसके भोंटे पकड़कर कहे है “मारुंगा
 तेरा जो गहना है सब तार तार उतारुंगा
 “हवेली अपनी तो इक दाँव पर मैं हारुंगा
 “ये सब तो हारा हूं, खंडी^३, तुझे भी हारुंगा
 “चढ़ा हूँ मुझको अभी तो नशा दिवालीका

“तुझे खबर नहीं, खन्दी, ये लत वो प्यारी है
 “किसी ज़मानेमे आगे हुआ जो ज्वारी है
 “तो उसने जोरुकी नथ और इज्जार उतारी है
 “इज्जार क्या है कि जोरु तलक भी हारी है
 “मुना ये तूने नहीं माजरा दिवाली का”

जहांमे ये जो दीवालीकी सैर होती है
 तो जरसे होती है और जर बगैर होती है
 जो हारे उन पे खराबीकी फ़ैर होती है
 और उनमे आनके जिन जिनकी खैर होती है
 तो आड़े आता है उनके दिया दिवालीका

ये बाते सच हैं, न झूठ इनको जानियो यारो
 नसीहतें हैं, उन्हें दिलसे मानियो यारो
 जहांको जाओ, ये किस्सा बखानियो, यारो
 जो ज्वारी हो, न बुरा उसका मानियो, यारो
 ‘नज़ीर’ आप भी हैं ज्वारिया दिवालीका

आगरेकी तैराकी

जब पैरनेकी रुतमे दिलदार पैरते हैं
आशिक भी साथ उनके गम ख़ुवार पैरते हैं
भोले, सयाने, नादाँ, हुशियार पैरते हैं
पीर-ओ-जवान, लड़के, अय्यार पैरते हैं
अदना, गरीब-ओ-मुफ़लिस, जरदार पैरते हैं
इस आगरेमे क्या क्या ए यार पैरते हैं

भरनेसे लेके यारो सहजाँका ताबा-नाला^१
छतरीसे बुज्ज ख़ूनी, दाराका चौतरा क्या
महताब बाग़, सैयद तेली, क़िला व रौज़ा
गुल शोरकी बहारे, अंबोहे-सैरे-दरिया^२
हर इक मक़ामे होकर हुशियार पैरते हैं
इस आगरेमे क्या-क्या ए यार पैरते हैं

बाग़े हकीम, और जो शिवदासका चमन हैं
उनमे जगह-जगह पर, मजलिस हैं अंजुमन हैं
मेवा, मिठाई, खाने और नाच दिल लगन हैं
कुछ पैरनेकी धूमे कुछ ऐशका चलन हैं
इशरतमे मस्त होकर हर बार पैरते हैं
इस आगरेमें क्या क्या ए यार पैरते हैं

^१ सहजाँके नाले तक, शायद किसी विशेष नालेसे मतलब है

^२ नदीकी सैरके लिए एकत्रित भीड़

बरसातमें जो आकर चढ़ता है खूब दरिया
हर जा खुरी, व चादर, बन्द और नांद चकवा
मेंडा भंवर, उछालन, चक्कर, समेट नाला
मेडा घुमेर, तरुता, कस्सी, पछाड़ करी
वां भी हुनरसे अपने हुशियार पैरते हैं
इस आगरेमे क्या क्या ए यार पैरते हैं

तिरबेनीमे अहाहा होती है क्या बहारे
खिलकृतके ठठ, हज़ारों पैराककी क़तारे
पैरे, नहावे, उछले, कूदे, लड़ें, पुकारे
ले ले वो छोटें, गोते खा-खाके हाथ मारे
क्या क्या तमाशे कर कर इज़हार, पैरते हैं
इस आगरेमे क्या क्या ए यार पैरते हैं

जमुनाके पाट गोया सहने-चमन है बारे
पैराक उसमे पैरें जैसे कि चांद तारे
मंह चांदके-से टुकड़े तन गोरे प्यारे-प्यारे
परियोंसे फिर रहे हैं मंजधार और कनारे
कुछ वार पैरते हैं कुछ पार पैरते हैं
इस आगरेमें क्या क्या ए यार पैरते हैं

कितने खड़े ही पैरे अपना दिखाके सीना
सीना चमक रहा है हीरोंका जूं नगीना
आधे बदन पे पानी आधे पे है पसीना
सरदों का बह चला है गोया कि इक क़रीना
दामन कमर पे बांधे दस्तार पैरते हैं
इस आगरेमें क्या-क्या ए यार पैरते हैं

जाते हैं उनमें कितने पानी पै साफ सोते
 कितनोंके हाथ पिंजरे कितनोंके सर पै तोते
 कितने पतंग उड़ाते कितने सूई पिरोते
 हुक्कोंका दम लगाते हँस-हँसके शाद होते
 सौ सौ तरहका कर-कर बिस्तार पैरते हैं
 इस आगरेमे क्या क्या ए यार पैरते हैं

कुछ नाचकी बहारे पानीके कुछ किनारे
 दरियामे मच रहे हैं इन्दरके सौ अखाड़े
 लबरेज गुल रुखोंसे दोनों तरफ़ करारे
 बजरे, व नाव चप्पू, डोंगे बने नवाड़े
 इन जमघटोंसे होकर सरशार^१ पैरते हैं
 इस आगरेमे क्या-क्या ए यार पैरते हैं

नावोंमे वो जो गुरू^२ नाचोंमे छक रहे हैं
 जोड़े बदनमे रंगीं गहने भूमक रहे हैं
 ताने हवामे उड़तीं तबले खड़क रहे हैं
 ऐश-ओ-तरबकी धूमे पानी छपक रहे हैं
 सौ ठाठके बनाकर अतवार पैरते हैं
 इस आगरेमे क्या-क्या ए यार पैरते हैं

हर आन बोलते हैं “सय्यद कबीरकी जय”
 फिर उसके बाद “अपने उस्ताद वीरकी जय”
 “मौर-ओ-मुकुट, कन्हैया, जमुनाके तीरकी जय”
 फिर गोलके सब अपने “खुर्द ओ-कबीर^३की जय”

^१ मस्त

^२ सुन्दर

^३ छोटी बडों

हर दम ये कर खुशीकी गुप्तार पैरते हैं
इस आगरेमे क्या क्या ए यार पैरते हैं

क्या-क्या 'नज़ीर' यांकी है पैरनेकी बानी
है जिनके पैरनेकी मुल्कोंने आन मानी
उस्ताद और खलीफ़ा शागिर्द यार जानी
सब खुश रहें, है जब तक जमुनाके बीच पानी
क्या क्या हंसी खुशीसे हर बार पैरते हैं
इस आगरेमे क्या-क्या ए यार पैरते हैं

रीछका बच्चा

कल राहमे जाते जो मिला रीछका बच्चा
ले आये वहीं हम भी उठा रीछका बच्चा
सौ नेमते खा-खाके पला रीछका बच्चा
जिस वक्त बड़ा रीछ हुआ रीछका बच्चा
जब हम भी चले साथ चला रीछका बच्चा

था हाथमे इक अपने सवा मनका जो सोंटा
लोहेकी कड़ी जिस पै खड़कती थी सरापा^१
काँधे पै चढ़ा भूलना और हाथमे प्याला
बाजारमें ले आये दिखानेको तमाशा
आगे तो हम और पीछे वो था रीछका बच्चा

था रीछके बच्चे पै वो गहना जो सरासर
हाथोंमे कड़े सोनेके बजते थे भूमककर
कानोंमें डुर और घुंगरू पड़े पाँवके अन्दर
वो डोर भी रेशमकी बनाई थी जो पुरज्जर^२
जिस डोरसे यारो था बँधा रीछका बच्चा

भुमके वो भूमकते थे पड़े जिस पै करनफूल
मक्क्रीशकी लड़ियोंकी पड़ी पीठ उपर भूल

^१ सिरसे पाँव तक

^२ सुनहरी

और उनके सिवा कितने बिठाये थे जो गुल फूल
यों लोग गिरे पड़ते थे सर पाँवकी सुध भूल
गोया वो परी था कि न था रीछका बच्चा

इक तरफ़को थीं सैकड़ों लड़कोंकी पुकारें
इक तरफ़को थीं पीर-ओ-जवानोंकी क्रतारें
कुछ हाथियोंकी क्रीक^१ और ऊँटोंकी डकारे
गुल शोर मज्जे भीड़ ठठ अंबोह बहारे
जब हमने किया लाके खड़ा रीछका बच्चा

कहता था कोई हमसे, “मियाँ आओ क़लंदर^२ !
वो क्या हुए अगले जो तुम्हारे थे वो बन्दर”
हम उनसे ये कहते थे “ये पेशा है क़लंदर
हाँ, छोड़ दिया, बाबा उन्हें जँगलेके अंदर
जिस दिनसे खुदाने ये दिया रीछका बच्चा”

“मुद्दतमे अब इस बच्चेको हमने है सधाया
लड़नेके सिवा नाच भी है इसको सिखाया”
ये कहके जो ढपलीके तई गत पै बजाया
इस ढबसे उसे चौकके जमघटमे नचाया
जो सबकी निगाहोंमे खुबा रीछका बच्चा
फिर नाचके वो राग भी गाया तो वहाँ वाह
फिर कहरवा नाचा तो हर इक बोली ज़बाँ वाह
हर चार तरफ़से थे कहें पीर-ओ-जवाँ “वाह”
सब हँसके ये कहते थे “मियाँ वाह मियाँ वाह
“क्या तुमने दिया ख़ूब नचा रीछका बच्चा”

^१ हाथीकी बोली

^२ मदारी

इस रीछके बच्चेमे था इस नाचका ईजाद करता था कोई कुदरते-खालिकके तई याद हर कोई ये कहता था “खुदा तुमको रखे शाद” और कोई ये कहता था “अरे बाहरे उस्ताद” “तू भी जिये और तेरा सदा रीछका बच्चा”

जब हमने उठा हाथ कड़ोंको जो हिलाया खम ठोंक पहलवाँकी तरह सामने आया लपटा वो तो कुश्तीका हुनर आन दिखाया जो छोटे बड़े जितने थे उन सबको रिभाया इस ढबसे अखाड़ेमे लड़ा रीछका बच्चा

जब कुश्तीकी ठहरी तो वहीं सरको जो भाड़ा ललकारते ही इसने हमे आन लताड़ा गह^१ हमने पछाड़ा उसे गह उसने पछाड़ा इक डेढ़ पहर फिर हुआ कुश्तीका अखाड़ा गो हम भी न हारे न हटा रीछका बच्चा

ये दाँवमे पेचोंमे जो कुश्तीमे हुई देर यूँ पड़ते रुँ पैसे कि आँधीमे गोया बेर सब नक्द हुए आके सवा लाख रुँ ढेर जो कहता था हर इकसे इसी तरहसे मुँह फेर “यारो तो लड़ा देखो ज़रा रीछका बच्चा”

कहता था खड़ा कोई जो कर “आह अहाहा” “इसके तुम्हीं उस्ताद हो वाल्लाह, अहाहा”

रीछका बच्चा

“ये सहे^१ किया तुमने तो नागाह, अहाहा
 क्या कहिए गरज आखिरश ए वाह, अहाहा”
 ऐसा तो न देखा न सुना रीछका बच्चा”

जिस दिनसे ‘नज़ीर’ अपने तो दिल शाद यही है
 जाते हैं जिधरको उधर इरशाद यही हैं
 सब कहते हैं “वो साहबे ईजाद यही हैं
 क्या देखते हो तुम खड़े ? उस्ताद यही हैं
 कल चौकमे था जिनका लड़ा रीछका बच्चा”

शह आशोब

पुराने ज़मानेमें फारसी और उर्दूके कवि पूरे देश या पूरी जाति-की मुसीबतें या बरबादियाँ नहीं लिखते थे । उस समय उस भावनाका विकास बहुत कम हुआ था जिसे हम जातीयता या देश प्रेम कहते हैं । पूरे देशकी और जातिकी बरबादी भी राजधानी या बड़े नगरोंमें भकलती थी । ऐसे अवसरो पर किसी नगरकी बरबादी या नगर निवासियोंकी मुसीबतकी कहानी दोहराई जाती थी । अक्सर ऐसी कविताका शीर्षक 'शह आशोब' होता था यानी नगरमे गड़बड़ और नगर निवासियोंके जीवनकी मुसीबतें, घरबार लुट जाना, कारबार बन्द हो जाना और बेरोजगारी फैल जाना । नज़ीर उस समयके आगरेका हाल लिख रहे हैं जब मुगल सल्तनत पर जवाल आ चुका है । जाट, रोहेले और दूसरी छोटी छोटी जातियाँ लूट मार कर रही हैं । अंग्रेजोंका भी असर बढ़ रहा है और नगरके व्यवसाय धंधों पर मुसीबत आ रही है ।

हैं अब तो कुछ सुखनका मेरे एख्तियार बन्द
रहतो हैं तबअ^१ सोचमे लैल-ओ-निहार बन्द^२
दरिया सुखनकी फ़िक्रका हैं मौजदार, बन्द
हो किस तरह न मुंहमें जबों बार बार बन्द
जब आगरेकी खलकका^३ हो रोज़गार, बन्द

^१तबियत, मन

^२रात-दिन

^३जनता

बेरोजगारीने ये दिखाई है मुफ़लिसी
कोठेकी छत नहीं है, ये छाई है मुफ़लिसी
दीवार-ओ-दरके बीच समाई है मुफ़लिसी
हर घरमे इस तरहसे फिर आई है मुफ़लिसी
पानीका टूट जावे है जूँ एकबार बन्द
कड़ियाँ जो सालकी थीं बिकीं वो तो अगले साल
लाचार क़र्ज-ओ-दामसे छप्पर लिये है डाल
फूस और फेड़े इसके है जूँ सरके बिखरे बाल
उस बिखरे फूससे है ये उन छप्परोँका हाल
गोया कि इनके भूल गये है चमार, बन्द
दुनियामे अब क़दीमसे^१ है जरका बन्दोबस्त
और बेजरीमे^२ घरका न बाहरका बन्दोबस्त
आक्राका इन्तज़ाम न नौकरका बन्दोबस्त
मुफ़लिस जो मुफ़लिसीमे करे घरका बन्दोबस्त
मकड़ीके तारका है वो नाउस्तवार^३ बन्द
कपड़ा न गठरी बीच, न थैलीमे ज़र रहा
ख़तरा न चोरका न उचक्केका डर रहा
रहनेको बिन किवाड़का फूटा खंडर रहा
खंखार^४, जागनेका , न मुतलक़ असर रहा
आनेसे भी जो हो गये चोर-ओ-चकार बन्द
अब आगरेमें जितने है सब लोग है तबाह
आता नज़र किसीका नहीं एकदम निबाह

^१पुराने ज़माने ^२सोना, यहाँ धनसे मतलब है ^३कम टिकाऊ

^४खंखारने और जागने

माँगो अजीजो ऐसे बुरे वक्तसे पनाह
 वो लोग एक कौड़ीके मुहताज अब है आह
 कस्बे-हुनरके याद है जिनको हज़ार बन्द
 सराफ़, बनिये, जौहरी, ओर सेठ साहूकार
 देते थे सबको नक़द, सो खाते है अब उधार
 बाज़ारमें उड़े हं पड़ी खाक बेशुमार
 बैठे हैं यों दुकानों पे अपनी दुकानदार
 जैसे कि चोर बैठे हों क़ंदी कतार बन्द
 सौदागरोंको सूद, न ब्योपारीको फ़लाह^१
 बज्जाजको है नफ़अ न पंसारीको फ़लाह
 दल्लालको है याफ़त,^२ न बाज़ारीको फ़लाह
 दुखियाको फ़ायदा न पिसनहारीको फ़लाह
 याँ तक हुआ है आनके लोगोंका कार बंद
 मारे हैं हाथ हाथ पे सब याँके दस्तकार
 और जितने पेशेवर हैं सो रोते हैं ज़ारज़ार
 कूटे हैं तन लोहार, तो पीटे हैं सर सुनार
 कुछ एक दोके कामका रोना नहीं है यार
 छत्तीस पेशेवालोंके है कारोबार बन्द
 ज़रके^३ भी जितने काम थे वो सब दबक गये
 और रेशमी क़वाम^४ भी यक सर चटक गये
 ज़रदार उठ गये तो बटइय्ये सरक गये
 चलनेसे काम तारकशोंके भी थक गये
 क्या हाल बाल खींचे जो हो जावे तार बन्द

^१ लाभ^२ आय^३ सोना^४ रेशमी कपड़े

बैठे बिसाती राहमे तिनकेसे चुनते हैं
जलते हैं नानबाई तो भड़भूँजे भुनते हैं
धुनिये भी हाथ मलते हैं और सरको धुनते हैं
रोते हैं वो जो मशरूए दाराई बुनते हैं
और वो तो मर गये जो बुने थे इज्जार बन्द

गर कागज़ीके हालके कागज़को देखिये
मुतलक उसे खबर नहीं कागज़के भावसे
रद्दी क़लम दुक़ाँमे, न टुकड़े हं टाटके
याँ तक कि अपनी चिट्ठीके लिखनेके वास्ते
कागज़का माँगना हं हर इकसे उधार बन्द

लूटे हैं गिर्द-ओ-पेश जो क़ज़ाक़, राहमार'
व्योपारी आते जाते नहीं डरसे ज़ीनहार
कुतवाल रोये, खाक उड़ाते हैं चौकीदार
मल्लाहोंका भी काम नहीं चलता मेरे यार
नावे हैं घाट-घाटकी सब वारपार बन्द

हरदम कमाँगरोँके^१ उपर पेच्-ओ-ताब हैं
सहहाफ^२ अपने हालमे गमकी किताब हैं
मरते हैं मीनाकार मुसख़िर कबाब हैं
नक्काश इन सभोंसे ज़ियादा खराब हैं
रंग-ओ-क़लमके हो गये नक्श-ओ-निगार बन्द

बेचे न थे जो गूँधके फूलोंके बद्धिहार
मुरभा रही हैं दिलकी कली, जी हैं दाग़दार

^१ डाकू

^२ कमान बनाने वालेके

^३ पत्रकार

जब आधीरात तक न बिकी, जिन्से आबदार
 लाचार फिर वो टोकरी अपनी ज़मीं पै मार
 जाते हैं कर दुकानको आखिर वह हार बन्द
 हज्जामपर भी याँ तई^१ है मुफ़लिसीका जोर
 पैसा कहाँ जो सान पै हो उस्तरोंका शोर
 काँपे हैं सर भिगोते हुए इसकी पोर-पोर
 क्या बात एक बाल कटे या तराशे कोर
 याँ तक हैं उस्तरे व नहरनीकी धार बन्द
 डमरू बजाके वो जो उतारे हैं ज़ह्रमार^२
 आपी वो खेलते हैं, हिला सरज़मीं पै मार
 मन्तर तो जब चले कि जो हो पेटका उधार
 जब मुफ़लिसीका साँप हो उनके गलेका हार
 क्या खाक फिर वो बाँधे, कहीं जाके मार^३ बन्द
 लज्जत हैं जिनको हुस्नके नक्श-ओ-निगारसे
 महबूब हैं जो गुंचादहन^४ गुलअज़ारसे
 आवे अगर वो लाख तरहकी बहारसे
 कोई न देखे उनको नज़र भरके प्यारसे
 ऐसे दिलोंके हो गये आपसमें कार बन्द
 फिरते हैं नौकरीको जो बनकर रिसालदार
 घोड़ोंके हैं लगाम न ऊँटोंके हैं महार
 कपड़ा न लत्ता, पाल, न परतल, न बोझभार
 यूँ हर मक़ामे आके उतरते हैं सोगवार
 जंगलमे जैसे देते हैं लाकर उतार बन्द

^१यहाँ तक ^२साँपका ज़हर ^३साँप ^४कली जैसे कोमल मुँहवाला

कोई पुकारता है पड़ा “भेज या खुदा
अब तो हमारा काम थका, भेज या खुदा
कोई कहे है हाथ उठा “भेज, या खुदा
ले जान अब हमारी तू या भेज या खुदा
क्यों रोजी यूँ है ऐ मेरे परवरदिगार बन्द”

मेहनतसे हाथ-पाँवके कौड़ी न हाथ आये
बेकार कब तलक कोई कर्ज-ओ-उधार खाये
देखो जिसे वो करता है रो-रोके हाय-हाय
आता है ऐसे हाल पै रोना हमे तो, हाय
दुश्मनका भी खुदा न करे कारोबार बन्द

आमद न खादिमोंके तई मक़बरोँके बीच
बाम्हन भी सर पटकते हैं सब मंदिरोंके बीच
आजिज हैं इल्मवाले भी सब मदरसोंके बीच
हैराँ हैं परीजादे भी अपने घरोंके बीच
नज़ा-ओ-नियाज़ हो गई सब एक बार, बन्द

इस शह्रके फ़क़ीर भिकारी जो है तबाह
जिस घर पै जा सवाल वो करते हैं ख़वामख़वाह
“भूके हैं कुछ भिजाइयो बाबा खुदाकी राह”
वाँसे सदा ये आती है, “फिर माँगो” जब तो आह
करते हैं होंट अपने वो हो शर्मसार बन्द
क्या छोटे कामवाले, वो क्या पेशावर नजीब^१
रोज़ीके आज हाथसे आजिज हैं सब ग़रीब

^१ कुलीन

होती हैं बैठे-बैठे जब आ शाम अनकरीब
 उठते हैं सब दुकानसे कह करके “या नसीब
 किस्मत हमारी हो गई बेएखतियार बन्द”
 किस्मतसे चार पैसे जिन्हें हाथ आते हैं
 अलबत्ता रूखी-सूखी वो रोटी पकाते हैं
 जो खाली आते हैं वो क्ररज लेते जाते हैं
 यूँ भी न पाया कुछ तो फ़क़त ग़म ही खाते हैं
 सोते हैं कर किवाड़को, इक आह मार, बन्द
 क्योंकर भला न माँगिये उस व़क्तसे पनाह
 मुहताज हो जो फिरने लगी दरबदर सिपाह
 याँ तक अमीरज़ादे सिपाही हुए तबाह
 जिनकी ज़िलोमे चलते थे हाथी व घोड़े आह
 वो दौड़ते हैं औरके पकड़े शिकार बन्द
 हैं जिन सिपाहियों कने बन्दूक़ और सनाँ
 कुन्देके उनके नाम न चिल्लेका हैं निशाँ
 चाँदीके बंद, तार तो पीतलके हैं कहाँ
 नाचार अपनी रोज़ीका बाइस^१ समझके हाँ
 रस्सीके उनमे बाँधे हैं प्यादे सवार बन्द
 जो घोड़ा अपना बेचके जींको गिरो रखे
 या तेग़ और सिपरको^२ लिये चौकमे फिरे
 पटका जो बिकता आवे तो क्या खाक देके ले
 जब पेशकब्ज़ बिकके पड़े रोटी पेटमे
 फिर उसका कौन मोल ले वो लच्छेदार बन्द

^१ कारण

^२ ढाल

जितने सिपाही यों थे न जाने किधर गये
दक्खिनके तईं निकल गये या बेशतर गये
हथियार बेच होके गदा घरबघर गये
जब घोड़े भालेवाले भी यों दरबदर गये
फिर कौन पूछे इनको जो अब हैं कटारबन्द

ऐसा सिपाह मर्दका दुश्मन जमाना है
रोटी सवारको है न घोड़ेको दाना है
तनख्वाह, नै तलब है न पीना न खाना है
प्यादे दवालबन्दका फिर क्या ठिकाना है
दर-दर खराब फिरने लगे जब नकारबन्द

जितने हैं आज आगरेमे कारखानाजात
सबपर पड़ी है आनके रोजीकी मुशकिलात
किस-किसके दुःखकी रोइये और किसकी कहिये बात
रोजीके अब दरख्तका मिलता नहीं है पात
ऐसी हवा कुछ आके हुई एक बार बन्द

है कौनसा वो दिल जिसे फ़रसूदगी^१ नहीं
वो घर नहीं कि रोजीकी नाबूदगी^२ नहीं
हरगिज़ किसीके हालमे बहबूदगी^३ नहीं
अब आगरेमे नामको आसूदगी^४ नहीं
कौड़ीकी आके ऐमी हुई रहगुज़ार बन्द

है बाग़ जितने याँके सो ऐसे पड़े हैं ख़वार
काँटेका नाम उनमे नहीं फूल दरकिनार

^१ उदामी ^२ लोपता ^३ सतोष ^४ सम्पन्नता

सूखे हुए खड़े हैं दरख्ताने मेवादार
 क्यारीमे खाक, धूल, रविश पै उड़े गुबार
 ऐसी खेजोंके हाथों हुई हैं बहार बन्द
 देखे कोई चमन तो पड़ा है उजाड़-सा
 गुंचा, न फल, न फूल, न सब्जा हराभरा
 आवाज कुमरियोंकी, न बुलबुलकी है सदा
 नै हौजमे है आब न पानी है नह्का
 चादर पड़ी है खुश्क तो है आबशार^१ बन्द
 बेवारिसीमे आगरा ऐसा हुआ तबाह
 टूटी हवेलियाँ है, तो फूटी शहरपनाह
 होता है बागबाँसे हर इक बागका निबाह
 वो बाग किस तरह न लुटे और उजड़े आह
 जिसका न बागबाँ हो न मालिक न खारबन्द
 क्यों यारो इस मकामे ये कैसी चली हवा
 जो मुफ़लिसीसे होश किसीका नहीं बजा
 जो है सो इस हवामे दिवाना-सा हो रहा
 सौदा हुआ मिजाजे जमानाको या खुदा
 तू है हकीम खोल दे अब इसके चारबन्द
 है मेरी हकसे अब ये दुआ शाम और सहर
 हो आगरेकी खल्क^२ पै अब मेहकी^३ नज़र
 सब खावे-पीवे शाद रहें अपने-अपने घर
 इस टूटे शहरपर भी इलाही तू फ़रल कर
 खुल जावे एक बार तो सब कारोबार बन्द

^१ भरना^२ जनता, निवासी^३ कृपा, दयाकी

आशिक कहो असीर^१ कहो आगरेका है
 मुल्ला कहो दबीर^२ कहो आगरेका है
 मुफ़लिस कहो फ़कीर कहो आगरेका है
 शायर कहो नज़ीर कहो आगरेका है
 इस वास्ते ये उसने लिखे पाँच-चार बन्द

^१ कैदी, बन्दी

^२ मुशी

बचपनके मज़े

क्या वक्त था वो हम थे जब दूधके चटोरे
हर आन आँचलोंके मामूर^१ थे कटोरे
पाँचोंमे काले टीके हाथोंमे नीले डोरे
याँ चाँद-सी हो सूरत, या साँवरे व गोरे
क्या सैर देखते हैं ये तिफ़ल शीरखोरे^२
गुलकी तरहसे हरदम सीने पे फूलते थे
पी-पीके दूध माँका खुश होके फूलते थे
माँ-बाप उनकी खिदमत सरपर क़बूलते थे
हाथोंमे खेलते थे भूलोंमे भूलते थे
क्या सैर देखते हैं ये तिफ़ल शीरखोरे
नै दोस्ती किसीसे नै दिलमे उनके कीना
जाने न बेक़रीना, नै समझे कुछ करीना
नै गर्मियोंसे वाक़िफ़, नै जानते पसीना
छातीसे माँकी लिपटे खुश उनको दूध पीना
क्या सैर देखते हैं ये तिफ़ल शीरखोरे
जो देखे उनकी सूरत, ले प्यारमे खिलावे
हाथों उपर उछाले, और छोड़कर हँसावे
चूमे कभी दहनको,^३ छाती कभी लगावे
कोई चुसनी मुहमे देवे कोई भुनभुना लगावे
क्या सैर देखते हैं ये तिफ़ल शीरखोरे

^१भरे पूरे

^२दूध पीते बच्चे

^३मुँह

छोटासा कोई कुर्ता उनका निकालता है
 या छोटी छोटी टोपी सरपर सँभालता है
 माँ दूध है पिलाती और बाप पालता है
 नाना गले लगावे दादा उछालता है
 क्या सैर देखते हैं ये तिफ़ल शीरखोरे
 क्या उम्र है अजीजो और क्या ये वक्त हैगा
 जब घुटनियों पै आये फिर और कुछ तमाशा
 पाऊँ चले तो वाँ से फिर और प्यार ठहरा
 सब ज़िन्दगीका हज़ है उनको 'नज़ीर' अहाहा
 क्या सैर देखते हैं ये तिफ़ल शीरखोरे

जवानी

क्या ऐशकी रखती है सब आहंग^१ जवानी
करती है बहारोंके तई दंग जवानी
हर आन पिलाती है मय^२ और बंग^३ जवानी
करती है कहीं सुल्ह कहीं जंग जवानी
इक ढबके मज्जे रखती है और ढंग जवानी
आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी

अल्लाने जवानीका वो आलम है बनाया
जोहर कहीं आशिक कहीं रुसवा कहीं शैदा
फन्देमे कहीं जी है कहीं दिल है तड़पता
मरते है सिसकते है बिलकते है अहाहा
इस ढबके मज्जे रखती है और ढंग जवानी
आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी

नै मयका न माजूनके^४ मँगवानेका कुछ राम
नै दिलके लगानेका न गिल^५ खानेका कुछ राम
गालीका न आँखोंके लड़ा आनेका कुछ राम
हँसनेका न छातीसे लिपट जानेका कुछ राम
इस ढबके मज्जे रखती है और ढंग जवानी
आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी

^१मेल ^२शराब ^३भंग ^४वह शीरा जो चीनी और भंग
मिलाकर बनाया जाता है ^५मिट्टी

लड़ती है कहीं आँख कहीं दिश्ट^१ कहीं सैन^२
 झूठा है कहीं प्यार किसीसे है लगे नैन
 वादा कहीं एकरार कहीं सैन कहीं नैन
 नै जीको फ़रागत^३ है न आँखोंके तई चैन
 इस ढबके मजे रखती है और ढंग जवानी
 आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी
 उलफ़त है कहीं मेह-ओ-मुहब्बत है कहीं चाह
 करता है कोई चाह कोई देख रहा राह
 साकी है सुराही है परीजाद है हमराह^४
 क्या ऐश है क्या ऐश है क्या ऐश है बल्लाह
 इस ढबके मजे रखती है और ढंग जवानी
 आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी
 गर रात किसी पास रहे ऐशमे गलतान^५
 और वांसे किसी औरके मिलनेका हुआ ध्यान
 घबराके उठे जब तो गिरे पावोंपर हर आन
 कहती है “हमे छोड़के जाते हो किधर जान”
 इस ढबके मजे रखती है और ढंग जवानी
 आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी
 रस्तेमें निकलते है तो होती है ये चाहें
 वो शोख कि हों बन्द जिन्हें देखके राहें
 खाँसे है कोई हँसके कोई भरती है आहें
 पड़ती है हर इक जासे निगाहों पे निगाहें
 इस ढबके मजे रखती है और ढंग जवानी
 आशिकको दिखाती है अजब रंग जवानी

^१दृष्टि ^२आँख का इशारा ^३फ़ुरसत, छुट्टी ^४साथ ^५नाचते, चकराते

जाते हैं तवायफ़मे तो वाँ होते हैं ये चाव
 कहती हैं कोई “इनके लिये पान बना लाव”
 कोई कहती है “याँ बैठो,” कोई कहती है “याँ आव”
 नाचे हैं कोई शोख़ बताती हैं कोई भाव
 इस ढबके मज़े रखती हैं और ढंग जवानी
 आशिक़को दिखाती हैं अजब रंग जवानी
 हँस-हँसके कोई हुस्नकी छलबल है दिखाती
 मिस्सी कोई सुर्मा कोई काजल है दिखाती
 चितवनकी लगावट कोई चंचल है दिखाती
 कुर्ती कोई अँगिया कोई आँचल है दिखाती
 इस ढबके मज़े रखती हैं और ढंग जवानी
 आशिक़को दिखाती हैं अजब रंग जवानी
 कहती हैं कोई “रात मेरे पास न आये”
 कहती हैं कोई “हमको भी खातिरमे न लाये”
 कहती हैं कोई “किसने तुम्हे पान खिलाये”
 कहती हैं कोई “घरको जो जाये हमे खाये”
 इस ढबके मज़े रखती हैं और ढंग जवानी
 आशिक़को दिखाती हैं अजब रंग जवानी
 क्या तुझसे ‘नज़ीर’ अब मैं जवानीकी कहूँ बात
 इस सिनमे गुजरते हैं अजब ऐशसे औकात
 महबूब परीज़ाद चले आते हैं दिनरात
 सँरे हैं बहारे हैं तवाज़ा है मदारात^१
 इस ढबके मज़े रखती हैं और ढंग जवानी
 आशिक़को दिखाती हैं अजब रंग जवानी

बुढ़ापा

क्या कह^१ है यारो जिसे आ जाये बुढ़ापा
और ऐसे जवानीके तई खाये बुढ़ापा
इशरतको मिला खाकमे गम लाये बुढ़ापा
हर कामको हर बातको तरसाये बुढ़ापा
सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
जो लोग खुशामदसे बिठाते थे घड़ी-पह^२
छातीसे लपटते थे मुहब्बतकी जता लह
सो आके बुढ़ापेने किया हाय ये कुछ कह
अब उनके कने जाते हैं लगते हैं उन्हें जह
सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
आये तो परीजाद ये कहते थे हमे घेर
आते थे चले आप जो लगती थी ज़रा देर
सो आके बुढ़ापेने किया हाय ये अन्धेर
जो दौड़के मिलते थे वो अब लेते हैं मुंह फेर
सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
थे जब तलक ऐय्यामे-जवानीके^३ हरे रूख
महबूब वो मिलते थे न हो देख जिन्हे भूख

^१ मुसीबत

^२ पहर

^३ जवानीके दिनके

बैठे थे परन्द आनके जब तक थे हरे रूख
 अब क्या है जो पतझड़ हुआ और जड़ भी गई सूख
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

आगे थे जहाँ गुलबदन और यूसफ़े-सानी^१
 देते थे हमे प्यारसे छल्लोंकी निशानी
 मर जाये तो अब मुँहमे न डाले कोई पानी
 किस दुःखमे हमे छोड़ गई हाय जवानी
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

याद आते हैं हमको वो जवानीके जो हंगाम
 और जाम दिल आराम मजे ऐश और आराम
 उन सबमे जो देखूँ तो नहीं एकका अब नाम
 क्या हम पे सितम कर गई ये गर्दिशे ऐय्याम^२
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

मजलिसमे जवानोंकी तो सागर है छलकते
 चुहले है बहारे है परीरू है भमकते
 हम उनके तई दूरसे है रश्क^३से तकते
 वो ऐश-ओ-तरब करते हैं हम सर हैं पटकते
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

^१ दूसरे यूसुफ, पैगम्बर यूसुफ अद्वितीय सुन्दर माने जाते थे
 समयका चक्र ^३ईर्ष्या

अब पाँव पड़े उनके तो हरगिज न बुलावें
जा बैठे तो एकदममे खफ़ा होके उठावे
इतना तो कहाँ अब जो कोई जाम पिलावे
गर जान निकलती हो तो पानी न चुवावे
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

जब ऐशके मेहमान थे अब ग्रमके हुए ज़ैफ़^१
अब खूनजिगर खाते हैं जब पीते थे सौ कैफ़^२
जब ऐठके चलते थे सिपर बाँध उठा सैफ़^३
अब टेकके लाठीके तई चलते हैं सदहैफ़^४
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

थे हम भी जवानीमे बहुत इश्क़के पूरे
वो कौनसे गुलरू^५ हैं जो हमने नहीं धूरे
श्रव आके बुढ़ापेने किये ऐसे अधूरे
पर भड़ गये दुम उड़ गई फिरते हैं लँडूरे
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

क्या यारो उलट हमसे गया हाय ज़माना
जो शोख़ कि थे अपनी निगाहोंके निशाना
छड़े हैं कोई डालके दादाका 'बहाना
हँसकर कोई कहता है "कहाँ जाते हो नाना"

^१शिकार ^२सौ नशे, सैकड़ो नशे ^३तलवार ^४दुख, अफ़सोस
^५सुन्दर मुखड़ेवाले

सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 पूछे जिसे कहता है वो "क्या पूछे है बुढ़े"
 आवे तो ये गुल हो "कि कहाँ आवे है बुढ़े"
 बैठे हों तो ये धूम "कहाँ बैठे है बुढ़े"
 देखे जिसे कहता है वो "क्या देखे है बुढ़े"
 सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

क्या यारो कहें गोकि बुढ़ापा है हमारा
 पर बूढ़े कहानेका नहीं तो भी सहारा
 जब बूढ़ा हमे कहके जहाँ हाय पुकारा
 काफिरने कलेजेमे गोया तीर-सा मारा
 सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

खूबामे^१ अगर जावे तो होती है ये फकड़ी
 खींचे है कोई हाथ कोई पकड़े है लकड़ी
 पट्टे कहीं और मूँछे कहीं जाती है पकड़ी
 दाढ़ीको पकड़ खींच कोई भाड़े है मकड़ी
 सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

कहता है कोई छीन लो इस बुढ़ेकी लाठी
 कहता है कोई शोख कि हों खींच लो डाढ़ी

इतनी किसी काफ़िरको समझ अब नहीं आती
क्या बूढ़े जो होते हैं तो क्या उनके नहीं जी
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

इक वक़्त वो था हम भी मजे करते थे गिन-गिन
महबूब परीज़ाद न रहते थे मिले बिन
इक वक़्त ये है हाय जो सब करते हैं अब घिन
या एक वो ऐय्याम थे या एक है ये दिन
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

बूढ़ोमे अगर जावे तो लगता नहीं वां दिल
क्यों के लगे दिल तो है ये महबूबोंका मायल
महबूबोंमे जावे है तो सब छोड़े है मिल-मिल
क्या सख़्त मुसीबत है पड़ी आनके मुश्किल
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

पनघटको हमारी अगर असवारी गई है
तो वां भी लगी साथ ये ही ख़वारी गई है
सुनते हैं कि कहती हुई पनिहारी गई है
“लो देखो बुढ़ापेमे ये मत मारी गई है”
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

पगड़ी हो अगर लाल गुलाबी तो ये आफ़त
कहता है हर इक देखके “क्या ख़ूब है रंगत”

ठठ्ठेसे कोई कहता है कर शकल पै रहमत
 “लाहौलविला देखिये बूढ़ेकी हिमाक़त”
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 गर ब्याहमे जावे तो ये ज़िल्लत है उठाना
 छुटते ही बने बाप निकाहीका निशाना
 रिन्दोंमें अगर जावे तो मुश्किल है फिर आना
 अफ़सोस किसी जा नहीं बूढ़ेका ठिकाना
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 है भांवली तालीका जनानोंमे ये चर्चा
 गर उनमे कभी जावे तो है ये सितम आता
 दाढ़ीको जगत बोले कोई आंखको मटका
 ठठ्ठेसे कोई कहता है आ आ मेरे दादा
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 दरियाके तमाशेको अगर जाये तो यारो
 कहता है हर इक देखके “जाते हो कहांको”
 और हँसके शरारतसे कोई पूछे है बदखूँ
 “क्यों खैर है क्या ख़िज़्र^१से मिलनेको चले हो”
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

^१पियक्कडोमें

^२शरीर, चंचल

^३एक पैगम्बर जिनकी बड़ी लम्बी आयु थी

गर आजको होते वो जवानीके जमाने
 क़ुदरत थी जो यूँ छेड़ते भडुवे व जनाने
 मुश्किल अभी पड़ जाती उन्हें पीछे छुड़ाने
 इक दममे अभी लगते, वो ही हाय मचाने
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

गर नाचमे जावे तो ये हसरत है सताती
 जो नाचे है काफ़िर^१ वो नहीं ध्यानमे लाती
 औरोंकी तरफ़ जावे तो आंखे है लड़ाती
 पर हमको तो काफ़िर वो अंगूठा है दिखाती
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

गर नायिका उनमे कोई बूढ़ी है कहाती
 अलबत्ता बुढ़ापे पे वो टुक रह्य है खाती
 फीकी सी पुरानी सी लगावट है जताती
 पर कह है वो हमको ज़रा खुश नहीं आती
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

चकलेके जो अन्दरकी वो कहलाती है कस्बी
 गर उनमें कभी जावे तो होती है ख़राबी
 मुंह देखते ही कहती है सब “आवो बड़े जी
 क्या आये हो यां करनेको पीरी व मुरोदी”

^१सितम ढानेवाली सुन्दरी

सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 गर जाये तवायफ़मे तो लगती है सताने
 “क्या आये हो हज़रत हमे क़ुरआन पढ़ाने”
 हंस हंस कोई पूछे है नमाज़ोंके दुगाने^१
 ठठ्ठेसे कोई फेके है तसबीहके^२ दाने
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 गर भुक्के कमर पांवसे सर आन लगा है
 पर दिलमे तो खूबांका वही ध्यान लगा है
 कहते है जिसे “हमको ये अरमान लगा है”
 कहता है वो “क्या बूढ़ेको शैतान लगा है”
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 नक़ले कोई इन पोपले होंटोंकी बनावे
 चलकर कोई कुबड़ेकी तरह क़दको भुकावे
 डाढ़ीके कने उंगलीको ला-लाके नचावे
 ये ख़वारी तो अल्लाह किसीको न दिखावे
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 ये जैसे जवानीमे किये धूम धड़क्के
 वैसे ही बुढ़ापेमे छुटे आनके छक्के
 सब उड़ गये काफ़िर वो नज़ारे वो भुमक्के
 अब ऐश ज़बानोंको है और बूढ़ोंको धक्के

^१ नमाज़ पढ़नेकी क्रिया, ढग ^२ माला

सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 गर हिंससे दाढ़ीको खिजाब अपनी लगावे
 भुरी जो पड़ी मुंह पै उसे कथोंके मिटावे
 गो मक्कसे हंसनेके तई दांत बंधावे
 गर्दन तो पड़ी हिलती है क्या खाक छिपावे
 सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 आंखोंसे ये दीदार^१की लज्जत नहीं छुटती
 और दिलसे भी महबूबकी उलफत नहीं छुटती
 सब छुट गया पर दीदकी ये लत नहीं छुटती
 बूढ़े हुए पर हुस्नकी चाहत नहीं छुटती
 सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 सुनते हो जवानो ये सुखन^२ कहते हैं तुमसे
 “करने हों जो कर लो वो मज्जे ऐश-ओ-तरब^३ के
 “जावेगी जवानी तो फिर अफ़सोस करोगे
 तुम जैसे हो वैसे तो कभी हम भी जवां थे”
 सब चीजको होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा
 अब जितने हो माशूक ये सब याद रखो बात
 “जो हो सो करो चाहनेवालोंकी मददारात
 “महबूबो गनीमत है जवानीके ये औक़ात^४
 जब बूढ़े हुए फिर तो हुए ढाकके दो पात

^१ दर्शन करनेकी^२ वात^३ नाच गानेका आनन्द^४ समय

सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

अब जिससे रहें साफ़ तो होता है वो गदला
अल्लाह न दिखलाये किसीको ये मल्लू^१
इम चख़ सितमगारने सीनेमें हसद ला
क्या हमसे जवानीका लिया आह ये बदला
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

थे जैसे जवानीमें पिये जाम सुबूके^२
वैसे ही बुढ़ापेमें पिये घूंट लहूके
जब आके गले लगते थे महबूब भबूके^३
अब कहिये तो बुढ़िया भी कोई मुंह पै न थूके
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

ये होंठ जो अब पोपले यारो हैं हमारे
इन होंठोंने बोसोंके बड़े रग हैं मारे
होते थे जवानीमें तो परियोंके गुज़ारे
और अब तो चुड़ैल आनके भी लात न मारे
सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
आशिक़को तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

महफ़िलमें वो मस्तीसे बिगड़ना नहीं भूले
साक़ीसे पियालों पै भगड़ना नहीं भूले

^१ दुखके

^२ शराबके

^३ जवानीकी आगसे गर्म

हँस हँसके परीक्षाओंसे लड़ना नहीं भूले
 वो गालियां वो बोसों^१पै अड़ना नहीं भूले
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

क्या दौर था सर दुखनेका होता था जदअफ़सोस
 हर गुंछादहन देखके करता था हदअफ़सोस
 अब मर भी अगर जावे तो होता है कदअफ़सोस
 अफ़सोस सदअफ़सोस सदअफ़सोस सदअफ़सोस
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

जब जानके बूढ़ा हमे छोड़े हैं ये दिल खाह
 और छोड़के मजलिससे उठाते हैं ब इकराह^२
 उस वक़्त तो हम यारो दमे सदेसे भर आह
 रो रोके यही कहते हैं, “अब क्यों मेरे अल्लाह”
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

वो जोश नहीं जिसके कोई ख़ौफसे दहले
 वो जोम^३ नहीं जिससे कोई बातको सहले
 जब फूस हुए हाथ थके पांव भी फँले
 फिर जिसके जो कुछ शौक्रमे आवे वही कहले
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिक्रको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

^१चुम्बनो

^२घृणापूर्वक

^३हौसला

करते थे जवानीमें तो सब आपसे आ चाह
 और हुस्न दिखाते थे वो सब आनके दिलखाह'
 ये कह बुढ़ापेने किया आह 'नज़ीर' आह
 अब कोई नहीं पूछता अल्लाह ही अल्लाह
 सब चीज़को होता है बुरा हाय बुढ़ापा
 आशिकको तो अल्लाह न दिखलाये बुढ़ापा

बहार

शबको चमनमे वाह वाह क्या ही बहार थी मची
 फूल खिले थे फूल फूल गुंछे खिले कली कली
 बेला चंबेली राय बेल मोतिया जूही सेवती
 बादे सबा^१ भी चलती थी इत्र-ओ-गुलाबमे बसी
 हौज पडे छलकते थे लहर हिलोरे लेती थी
 शोख बगलमे गुंचालब मय के नशोकी ताजगी
 ऐश-ओ-तरबकी लहरमे रात जब आधी ढल गई
 इसमे कहींसे है गजब निकली जो मकर चांदनी
 सुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राह ली
 हम भी दशमे आ गये मुफ्त बहार लुट गई
 रात तो क्या ही ऐशकी ठहरी थी आके अंजुमन
 तारे खिले थे महरतन फूल खिले चमन चमन
 नरगिस-ओ-नार-ओ-यासमन सोसन-ओ-तरा, नस्तरन^२
 कबक-ओ-तदरा^३ खन्दाजन^४ बुलबुल-ओ-कुमरी नाराजन
 यार बगलमे गुल बदन, सुख गलेमे पैरहन^५
 सीना बसीना तनबतन ऐश-ओ-तरबके सब बरन
 इसमे रकबी^६ दिल शिकन आया गजरका करके फन
 थाली कहींसे ला शताब दी हैं बजा ठनन ठनन
 सुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राह ली
 हम भी दशा मे आ गये मुफ्त बहार लुट गई

^१ प्रभात समीर ^२ फूलोके नाम ^३ कबूतर और एक जंगली
 सुन्दर पक्षी ^४ हँसनेवाले ^५ कर्ता ^६ प्रतिद्वन्द्वी

बाग़मे शबको^१ वाह वाह क्या ही मजोंके घोर थे
 तूती व बगले मोर थे फ़ास्तोंके भी शोर थे
 शोखपर अपने जोर थे उसके भी हम पै जोर थे
 तोड़े कड़े व बोर^२ थे छल्ले भी पोर-पोर थे
 यार हमारा चांद था चांदके हम चकोर थे
 दोनों चकई व चकवा थे दोनों पतंग व डोर थे
 मयके नशोंके शोर थे कपड़े भी शोरबोर थे
 बोला रक़ीब दिन दिये दौड़ियो यारो चोर थे
 सुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राहली
 हम भी दशामे आ गये मुफ़्त बहार लुट गई
 क्या ही मजे थे रातको यारो मैं तुमसे क्या कहूँ
 सहने-चमन अरमनमूं^३ डालियाँ भूमीं सरनगूं
 शोख बग़लमे पुरफ़नूं ऐश-ओ-तरब फ़ज़ूँ-फ़ज़ूँ
 मयके बहे थे आके खूँ चेहरे नशोंमे लालागूं
 यारके नाज़ और फ़सूँ अपने भी इश्क़ और जुनूं
 जाम पुकारे मुँह लगूं ऐश पुकारे दम न लूं
 इसमे रक़ीब बदशगूं^४ कुछ न बना तो वो ज़बूं^५
 पिछले ही पल्ल बनके मुर्ग़ बोला ही आके कुकड़कूं
 सुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राह ली
 हम भी दशामे आ गये मुफ़्त बहार लुट गई
 लूटे हैं क्या ही हमने वाह रात मजे बहारके
 अखड़ियों मुर्मादारके लाल मिसीनिगारके

^१रात ^२एक जेवर ^३स्वर्ग समान ^४बग़लमें, चन्चल
 प्रेमिका बग़लमें है और खूब खूब आनन्द है ^५मनहूस ^६बुरा

काकुले-मुझकबारके^१ तुर्रये आबदारके
मयके नशोंके तारके फूलोंके शाखसारके
बाँहे गलेमे यारके बोस-ओ-कनार प्यारके
हाथोंमे गजरे तारके लच्छे गलोंमे हारके
भागा रक्कीब यारके हाथों पे हाथ मारके
कुछ न बना तो दी अजाँ कोठे पे जा पुकारके
सुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राह ली
हम भी दगामे आ गये, मुप्त बहार लुट गई

रात हुई थे वाह वाह क्या ही नशे रसा-रसा
पीते थे मय बसा-बसा^२ फूलोंमे हम बसाबसा
शोख बगलमे चाँदसा देता था बोसे हँस हँसा
जुल्फोंमें उसकी दिल फँसा आन-ओ-अदामे जी फँसा
जामा बदनमे चुसचुसा फूल हुआ था बसबसा
नींदोंमे यार रसमसा ले था जमाई कसमसा
इसमे रक्कीब करकसा करके सहरका वसवसा
लाके नक्रारा या दुहल धूँ-धूँ बजाया कसकसा
सुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राह ली
हम भी दगामे आ गये मुप्त बहार लुट गई

क्या ही 'नज़ीर' रातको ऐशके थे मुक्काबले
मयके नशे उबल चले दिलके फ़राख^३ हौसले
जीपे खुशीके दर खुले रंज व तबअके^४ हौसले
शोखके नाज़ चुलबुले बोसोंके थे मुआमले

^१ सुगंधित केश

^२ बहुत बहुत

^३ उदार, बहुतसे

^४ रंज और दुख

नाज़-ओ-अदाके चोंचले ऐश-ओ-तरबके गुलगुले
 यार लिपट रहा गले दिलमे खुशीके बलबले
 इसमे रकीब दम न ले बोला ही करके उशगले^१
 बाँधो कमर मुसाफ़िरो कूच करे है काफिले
 मुब्हके डरसे हड़बड़ा यारने घरकी राह ली
 हम भी दगामे आ गये मुफ़्त बहार लुट गई

^१भगडेकी बात

चांदनी

महने-चमनमे वाह वाह जोर बिछी थी चांदनी
चाँद हिलोरे लेता था और खिली थी चांदनी
आया था यार गुलबदन पहनके बादला जरी
चमके थी तार-तारमे महकी झलक जरी-जरी
बोस-ओ-कनार जाम-ओ-मय ऐश-ओ-तरब हँसी-खुशी
इसमे कहीसे यकबयक मुर्गो-सहरने बाँग दी
सुब्ह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली
यार बगलसे उठ गया जी हीमे जीकी रह गई
क्या ही मज्जेसे ऐशकी रात थीं कामयाबियाँ
छूटी थीं माहताबकी^१ नहरोंमे माहताबियाँ
आगे चुनी थीं सफ बसफ मयकी कई गुलाबियाँ
हमको नशोकी मस्तियाँ यारकी नीमरूबाबियाँ
सीनोमे इज्जतराबियाँ आँखोमे बेहजाबियाँ^२
इसमे फलकने रश्कसे डाली ये कुछ खराबियाँ
सुब्ह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली
यार बगलसे उठ गया जी हीमे जीकी रह गई
शबको दिलोमे वाह वाह जोर मज्जोंके तार थे
हमसे दो-चार^३ यार था यारसे हम दो-चार थे
दोनों दिलोमे प्यार था दोनो गलोंमे हार थे
बस्लसे बेकरार थे ऐशके कारोबार थे

^१चाँद ^२बेचैनियाँ ^३बेशर्मी 'मिला हुआ, आमने सामने

सीनेमे आसमानके तीर हसदके^१ पार थे
 एक पलकमे नागहाँ सब वो मजे फ़रार^२ थे
 सुब्ह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली
 यार बग़लसे उठ गया जी हीमे जीकी रह गई

चाँदनी बाह चाँदनी करती थी क्या भलक-भलक
 चहक रही थीं बुलबुले बाग़ रहा था सब महक
 जामके लबसे हर घड़ी निकले थी मय छलक-छलक
 यार बग़लमे गुंचालब बोसोंकी सौ लपक-लपक
 ऐश-ओ-तरबकी लज्जते होने लगीं जो थकबयक
 ऐसे मजेमे ऐशमे आह कहींसे हक न धक
 सुब्ह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली
 यार बग़लसे उठ गया जी हीमे जीकी रह गई

बाग़ था या कि खुल्द^३ वो या कि बहिश्त या इरम^४
 यार था या कि हूर वो याकि परी वो या सनम
 चाँदनी थी वो चाँदनी चाँदीका रग जिससे कम
 पीते थे मय घड़ी-घड़ी लेते थे बोसे दमबदम
 दोनों नशोंमे मस्त हो सोये पलंग पे जब कि हम
 ऐन मज़ा था वस्लका इसमे नज़ीर है सितम
 सुब्ह हुई गजर बजा फूल खिले हवा चली
 यार बग़लसे उठ गया जी हीमे जीकी रह गई

^१ईर्ष्या^२भाग गये थे^३स्वर्ग^४स्वर्ग

भड़ी

रात लगी थी वाह वाह क्या ही बहारकी भड़ी
मौसमे-खुशबहार था अब्र-ओ-हवाकी^१ धूम थी
शमअ-ओ-चिराग गुलबदन बारादरी थी बागकी
यार बगलमे गुंचालब रात अँधेरी भुक रही
मेहके मजे हवाके गुल मयके नशे घड़ी-घड़ी
इसमे कहींसे है सितम ऐसी इक आ पवन चली
अब्र खुला हवा घुटी बूँदे थमीं सहर^२ हुई
पहलूसे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

शबको हुई अहा-अहा जोर मजोंकी मस्तियाँ
बिजलीकी शक्ले बनतियाँ बूँदे पड़ी बरसतियाँ
सज्ज दिलोंकी बस्तियाँ जिन्स खुशोकी सस्तियाँ
दोनोमे ऐश मस्तियाँ दोनोंमे मय परस्तियाँ
इसम फ़लकने यकबयक लूटीं दिलोंकी बस्तियाँ
सारे नशे वो लुट गये खो गई मय परस्तियाँ
अब्र खुला हवा घुटी बूँदे थमीं सहर हुई
पहलूसे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

बरसे थीं क्या ही भूमभूम रात घटाएँ कालियाँ
कोयले बोलीं कालियाँ बह चले नाले नालियाँ
बिजलियोंकी उजालियाँ बारहदरीकी जालियाँ
ऐशकी भूमें डालियाँ बाँहे गलोंमें डालियाँ

^१ बादल और हवा

^२ प्रभात

चलती थीं मयकी प्यालियाँ मुँह पै नशोंकी लालियाँ
 इसमे फ़लकने ढीङ़कर सब वो हवाएँ खालियाँ
 अब खुला हवा घुटी बूंदे थमीं सहर हुई
 पहलूसे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

अब-ओ-हवाके वाह वाह शबको अजब ही जोर थे
 भीग रहा था सब चमन मेहके झडाके जोर थे
 गोक पपीहे मोर थे भींगुरोके भी शोर थे
 बादाकशीके दौरे थे ऐश-ओ-तरबके दौरे थे
 बागसे ताबा बागबाँ जितने थे शोरबोर थे
 आ पड़े इसमे नागहाँ ये जो खुशीके चोर थे
 अब खुला हवा घुटी बूंदे थमीं सहर हुई
 पहलूसे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

चार तरफसे अबकी वाह उठी थी क्या घटा
 बिजलीकी जगमगाहटे राद^१ रहा था गड़गड़ा
 बरसे था मेह भी भूमभूम छाजों उमँड-उमँड पड़ा
 भोके हवाके चल रहे यार बगलमे लोटता
 हम भी हवाकी लहलहे पीते थे मय बढ़ा-बढ़ा
 देख हमे इस ऐशमे सीना फ़लकका फट गया
 अब खुला हवा घुटी बूंदे थमी सहर हुई
 पहलूमे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

जोर मजोंसे रातको बरसे था मेह भमक-भमक
 बूंदे पड़ीं टपक-टपक पानी पड़े भपक-भपक

^१ पीने, शराब पीने

^२ अकस्मात

^३ मेघ

जाम रहे छलक-छलक शीशा रहे भबक-भबक
 यार बगलमे बानमक ऐश-ओ-तरब थे बेधड़क
 हम भी नशोंमे खूब छक लोटते थे बहक-बहक
 क्या ही समों था ऐशका इतनेमे आह यकबयक
 अब खुला हवा घुटी बूंदे थमीं सहर हुई
 पहलूसे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

क्या ही मजा था बाहवाह अब-ओ-हवाका यारो कल
 बरसे था मेह सँभल-सँभल आगे रही थी शमश्रु जल
 ऐश व नशात बर महल बारहदरीका था महल
 शोखसे भर रही बगल दिलमे करार जीमे कल
 पीते थे मय मचल-मचल लेते थे बोसे पलबपल
 इसमे 'नज़ीर' यकबयक आके ये मच गये खलल
 अब खुला हवा घुटी बूंदे थमी सहर हुई
 पहलूसे यार उठ गया सब वो बहार बह गई

बरसात और फिसलन

बरसातका जहानमे लशकर फिसल पड़ा
बादल भी हर तरफसे हवापर फिसल पड़ा
झड़ियोंका मेह भी आके सरासर फिसल पड़ा
छत्ता किसीका शोर मचाकर फिसल पड़ा
कोठा झुका अटारी झुकी दर फिसल पड़ा
जिनके नये नये थे मकाँ और महल सरा
उनकी छते टपकती हैं छलनी हो जाबजा
दीवारे बैठती हैं छलोंका है गुल मचा
लाठीको टेककर जो सुतूँ है खड़ा किया
छज्जा गिरा मुँडरीका पत्थर फिसल पड़ा
झड़ियोंने इस तरहका दिया आके झड़ लगा
सुनिये जिधर उधर है धड़ाके हीकी सदा
कोई पुकारे है “मेरा दरवाजा गिर चला
कोई कहे है “हाय कहो मैं बताऊँ क्या
तुम दरको भीकते हो मेरा घर फिसल पड़ा”
बारों जब आके पुछता मकाँके तई हिलाये
कच्चा मकाँ फिर उसकी भला क्योंके ताब लाये
हर भोंपड़ेमे शोर है हर घरमे हाय हाय
कहते हैं यारो दौड़ियो जल्दीसे वाय वाय
पाखे पछेत सो गये छप्पर फिसल पड़ा

आकर गिरा है कसबी जो रडीका अब मकान
और उसके आशनाकी भी छत गिरती है जहाँ
कहता है ठट्टेबाज हर इक उनसे आके वाँ
“क्या बैठे छतको रोते हो तुम ए मियाँ यहाँ
वाँ चित लगनका’ आपके सब घर फिसल पड़ा”

याँ तक हर इक मकानके फिसलनेकी है जमी
निकले जो घरसे उसको फिसलनेका है यकी
मुफलिस गरीबपर ही ये मौकूफ^१ कुछ नहीं
क्या फीलका सवार है क्या पालकी नशी
आया जो इस जमीनके ऊपर फिसल पड़ा

देखो जिधर उधरको यही गुल पुकार है
कोई फँसा है और कोई कीचड़मे खवार है
प्यादा उठा जो मरके तो पिछड़ा सवार है
गिरनेकी धूमधाम ये कुछ बेशुमार है
जो हाथी रपटा ऊँट गिरा खर^२ फिसल पड़ा

कूचेमे कोई और कोई बाज़ारमे गिरा
कोई गलीमे गिरके है कीचड़मे लोटता
रस्तेके बीच पाँव किसीका रपट गया
उस सब जगहूँके गिरनेसे आया जो बचबचा
वो अपने घरके सहनमे आकर फिसल पड़ा
करती है गरचे सबको फिसलती जमीन खवार
आशिकको पर दिखाती है कुछ और ही बहार

आया जो सामने कोई महबूब गुलअज़ार
 गिरनेका मक्क करके उछल कूद एक बार
 उस शोख गुलबदनसे लिपटकर फिसल पड़ा
 कीचड़के हर मकाँसे तू बचता बहुत फिरा
 पर जब दिखाई दी खुले बालोंकी इक घटा
 बिजली भी चमकी हुस्नकी मेह बरसा नाज़का
 फिसलन जब ऐसी आई तो कुछ भी न बस चला
 आखिर वहाँ 'नज़ीर' भी आकर फिसल पड़ा

बरसातकी बहारें

हैं इस हवामे क्या क्या बरसातकी बहारे
मञ्जोकी लहलहाहट बागातकी बहारे
बूंदोंकी भ्रमभ्रमाहट कतरातकी^१ बहारे
हर बातके तमाशे हर घातकी बहारे
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
बादल हवाके ऊपर हो मस्त छा रहे हैं
झड़ियोंकी मस्तिथोसे धूमे मचा रहे हैं
पडते हैं पानी हरजां जल थल बना रहे हैं
गुलजार भीगते हैं सब्जे नहा रहे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
मारे हैं मौज डाबर दरिया रमंड रहे हैं
मोर-ओ-पपीहे कोयल क्या क्या उमंड रहे हैं
झड कर रही है झड़ियाँ नाले उमंड रहे हैं
बरमे हैं मेह झड़ाझड बादल घुमंड रहे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
जगल सब अपने तनपर हरयाली सज रहे हैं
गुल फूल झड बूटे कर अपनी धज रहे हैं
बिजली चमक रही है बादल गरज रहे हैं
अल्लाहके नक़ारे नौबतके बज रहे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

^१ बूंदो ^२ हर जगह ^३ भ्रम रहे हैं और बोल रहे हैं

बादल लगा टकोरे नौबतकी गत लगावे
 भींगुर भंगार अपनी मुरनाइयाँ बजावे
 कर शोर मोर बगले झडियोंका मुँह हिलावे
 पी पी करे पपीहे मेडक मलार गावे
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

हर जा बिछा रहा है सब्जा हरे बिछौने
 कुदरतके बिछ रहे हैं हर जा हरे बिछौने
 जंगलोमे हो रहे हैं पैदा हरे बिछौने
 बिछवा दिये हैं हकने क्या क्या हरे बिछौने
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

सब्जोंकी लहलहाहट कुछ अबकी सियाही
 और छा रही घटाएँ सुख और सफेद, काही
 सब भोगते हैं घर घर ले माह-ता-ब-माही^१
 ये रंग कौन रंगे तेरे सिवा इलाही
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

क्या क्या रखे हैं यारब सामान तेरी कुदरत
 बदले हैं रंग क्या क्या हर आन तेरी कुदरत
 सब मस्त हो रहे हैं पहचान तेरी कुदरत
 तीतर पुकारते हैं सुबहान तेरी कुदरत^२
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

कोयलकी कूकमे भी तेरा ही नाम हैगा
 और मोरकी रटलमे तेरा पयाम हैगा

^१प्रकृतिके चाँदसे लेके मछली तक

^२ईश्वर तेरी माया है

ये रग सौ मजेका जो सुब्ह-ओ-शाम हैगा
 ये औरका नही है तेरा ही काम हैगा
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 फूलोंकी सेज ऊपर सोते हैं कितने बन बन
 सोहन गुलाबी जोड़े फूलोंके हार अबरन
 कितनोंको घर है खाता सूना लगे जो आँगन
 कोनेमे पड़ रही है सर मुँह लपेट सोगन^१
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 बोले बये बटेरे क्रुमरी पुकारे कू कू
 पी पी करे पपीहा बगले पुकारे तू तू
 क्या हुदहुदोकी हक हक क्या फ़ाखतोकी हू हू
 सब रट रहे हैं तुझको क्या पंख क्या पखेरू
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 जो मस्त हों उधरके कर शोर नाचते हैं
 प्यारेका नाम लेकर क्या जोर नाचते हैं
 बादल हवासे गिर गिर, घनघोर नाचते हैं
 मेडक उछल रहे हैं और मोर नाचते हैं
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 जो खुश है वो खुशीमे काटे हैं रात सागी
 जो गममे है उन्हींपर गुज़रे हैं रात भारी
 सीनोंसे लग रही है जो है पियाकी प्यारी
 छाती फटे हैं उनकी जो है बिरहकी मारी
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

^१ बिरहणी स्त्रियाँ

जो वस्लमें^१ है उनके जोड़े महक रहे हैं
 भूलोंमें भूलते हैं गहने चमक रहे हैं
 जो दुःखमें है सो उनके सीने भड़क रहे हैं
 आँखें निकल रही हैं आँसू टपक रहे हैं
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारें

अब बिरहनोके ऊपर है सख्त बेकरारी
 हर बूँद मारती है सीनें उपर कटारी
 बदलीकी देख सूरत कहती है बारी बारी
 है है न ली पियाने अबके भी सुध हमारी
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारें

जब कोयल अपनी उनको आवाज़ है सुनाती
 सुनते ही गमके मारे छाती है उमड़ी जाती
 पी-पीकी धुनको सुनकर बेकल है कहती जाती
 मत बोल ए पपीहे फटती है मेरी छाती
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारें

हैं जिनकी सेज सूनी और खाली चारपाई
 रो रो उन्होंने हरबम ये बात है सुनाई
 परदेसीने हमारी अबके भी सुध भुलाई
 अबके भी छावनी जा परदेसमें है छाई
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारें

कितनोने अपनी गमसे अब है ये गत बनाई
 मँले कुचैले कपड़े आँखें भी डबडबाई

नै घरमे भूला डाला नै ओढ़नी रंगाई
 फूटा पड़ा है चूल्हा टूटी पड़ी कढ़ाई
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 गाती है गीत कोई भूले पै करके फेरा
 मारोजी^१ आज कीजे याँ रैनका ज़सेरा
 है खुश कोई किसीको है दर्द-श्रो-गमने घेरा
 मुंह जर्द बाल बिखरे और आँखोंमे अँधेरा
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 और जिनको अब मुहँय्या हुस्नोंकी ढेरियाँ है
 सुख और सुनहरे कपड़े इशरतकी घेरियाँ है
 महबूब दिलबरोकी जुल्फें बिखेरियाँ है
 जुगनू चमक रहे है राते अँधेरियाँ है
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कितने तो भंग पीपी कपड़े भिगो रहे है
 बाँहे गलोमे डाले भूलोंमे सो रहे है
 कितने बिरहके मारे सुध अपनी खो रहे है
 भूलेकी देख सूरत हर आन रो रहे है
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारें
 बँठे है कितने खुश हो ऊँचे छवाके बँगले
 पीते है मयके प्याले और देखते है जँगले
 कितने फिरे है बाहर खूबोंको अपने संग ले
 सब शादि हो रहे है उम्दा गरीब कँगले
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

कितनोंको महलों अन्दर है ऐशका नजारा
 या सायबान मुथरा या बाँसका उसारा
 करता है सैर कोई कोठेका ले सहारा
 मुफ़लिस भी कर रहा है पोले' तले गुजारा
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

छत गिरनेका किसी जा गुल शोर हो रहा है
 दीवारका भी धड़का कुछ होश खो रहा है
 डर डर हवेलीवाला हर आन रो रहा है
 मुफ़लिस सो भोंपड़ेमे दिलशाद हो रहा है
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

मुद्दतसे हो रहा है जिनका मकों पुराना
 उठके है उनको मेहमे हर आना छत पे जाना
 कोई पुकारता है "टुक मोरी खोल आना"
 कोई कहे है "चल भी क्यों हो गया दिवाना"
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

कोई पुकारता है "लो, ये मकान टपका
 गिरती है छतकी मिट्टी और सायबान टपका
 छलनी हुई अटारी कोटा निदान टपका
 बाकी था इक उसारा सो वो भी आन टपका"
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

ऊँचा मकान जिसका है पचखंडा सो आया
 ऊपरका खन टपककर जब पानी नीचे आया

उसने तो अपने घरमे है शोर-श्रो-गुल मचाया
 मुफ़लिस पुकारते है जाने हमारा जाया
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 सब्जों पे बिरबहूटी^१ टीलो उपर धतूरे
 पिस्सूसे मच्छड़ोसे रोये कोई बसूरे
 बिच्छू किसीको काटे कीड़ा किसीको घरे
 आँगनमे कनसलाई कोनोंमे खनखज़रे
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 फुन्सी किसीके तनमे सरपर किसीके फोड़े
 छाती पे गर्मी दाने और पीठमे दिदोड़े
 खा पूरियाँ किसीको है लग रहे मडोड़े
 आते है दस्त जैसे दौड़े इराक़ी घोड़े
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 जिस गुलबदनके तनमे पोशाक सौसनी^२ है
 सो दो परी तो खासी काली घटा बनी है
 और जिम पे मुख़ जोड़ा या ऊदी ओढनी है
 उसपर तो सब घुलावट, बरसातकी छनी है
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 पतली जहाँ किसीने दाल और कढ़ी पकाई
 मक्खीने दूँहीं बोली आ ऊँटकी बुलाई^३
 कोई पुकारता है “क्यों खैर तो है भाई”
 ऐसे जो खाँसते हो क्या काली मिर्च खाई
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

^१बीरबहूटी

^२एक फूलका नाम

^३बोली

बदनोंमें खप रहे हैं खूबोंके लाल जोड़े
 भ्रमके दिखा रहे हैं परियोंके लाल जोड़े
 लहरे बना रहे हैं लड़कोंके लाल जोड़े
 आँखोंमें छुप रहे हैं प्यारोंके लाल जोड़े
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 और जिस सनमके तनमें जोड़ा है ज़अफरानी
 गुलनार या गुलाबी या जर्द सुख धानी
 कुछ हुस्नकी चढ़ाई और कुछ नई जवानी
 भूलोमें भूलते हैं ऊपर पड़े हैं पानी
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कोई तो भूलनेमें भूलके डोर छोड़े
 या साथियोंमें अपने पाँउसे पाँउ जोड़े
 बादल खड़े हैं सरपर बरसे हैं थोड़े थोड़े
 बूंदोंसे भीगते हैं लाल और गुलाबी जोड़े
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कितने शराब पीकर हो मस्त छक रहे हैं
 मयकी गुलाबियां हैं प्याले छलक रहे हैं
 होता है नाच घर घर घुँघरू भनक रहे हैं
 पड़ता है मेह झड़ाझड़ तबले खड़क रहे हैं
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 हैं जिनके तन मुलायम मँदेकी जैसे लोई
 वो इस हवामें खासी ओढ़े फिरे हैं लोई
 और जिनकी मुक़लिसीने शर्म-ओ-हया हैं खोई
 हैं उनके सर पे सिरकी या बोरिये की खोई
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारें

कितने फिरे हैं ओढ़े पानीमें सुख पट्टू
जो देख सुख बदली होती है उन पै लट्टू
कितनोंके गाड़ी रथ हैं कितनोंके घोड़े टट्टू
जिस पास कुछ नहीं है वो हम-सा है निखट्टू
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

जो इस हवामे यारो दौलतमे कुछ बडे हैं
हैं उनके सरपै छतरी हाथी उपर चडे हैं
हमसे गरीब गुर्बा कीचड़मे गिर पडे हैं
हाथोंमे जूतियाँ हैं और पायँचे चडे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

हैं जिन कने मुहङ्ग्या पक्का पकाया खाना
उनको पलंग पै बैठे झड़ियोंका हज उड़ाना
हैं जिनकी अपने घरमे या नोन तेल लाना
हैं सरपै उनके पखा या छाज है पुराना
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

कितने खुशीसे बैठे खाते हैं खुश महलमे
कितने चले हैं लंने बनियेसे कर्ज पलमे
काँधे पै दाल आटा हल्दी गिरहकी बलमे
हाथोंमे घीकी प्याली और लक्ड़ियाँ बगलमे
क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

कोई रातको पुकारे "प्यारे मैं भीगती हूँ
क्या तेरी उल्फतोंके मारे मैं भीगती हूँ

“आई हूँ तेरी खातिर आ रे मैं भीगती हूँ
 कुछ तो तरस तू मेरा खा रे मैं भीगती हूँ
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कोई पुकारतो है “दिल सख्त भीगती हूँ
 काँपे है मेरे छाती यकलखत^१ भीगती हूँ
 कपड़े भी तरबतर है और सख्त भीगती हूँ
 जल्दी बुला ले मुझको कमबख्त भीगती हूँ”
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कोई पुकारती है “क्या क्या मुझे भिगोया”
 कोई पुकारती है “कैसा मुझे भिगोया
 नाहक़ करार करके झूटा मुझे भिगोया
 यँ दूरसे बुलाकर अच्छा मुझे भिगोया”
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 जिन दिलबरोँकी खातिर भीगे हैं जिनके जोड़े
 वो देख उनकी उल्फत होते हैं थोड़े थोड़े
 ले उनकी भीगी पगड़ी हाथोंमे धर निचोड़े
 चीरा कोई सुखावे जामा कोई निचोड़े
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कीचड़से हो रही है जिस जा जमीं फिसलनी
 मुश्किल हुई है वाँसे हर इकको राह चलनी
 फिसला जो पाँव पगड़ी मुश्किल है फिर सँभलनी
 जूती गिरी तो वाँसे क्या ताब फिर निकलनी
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

कितने तो कीचड़ोकी दलदलमे फँस रहे हैं
 कपड़े तमाम गन्दे दलदलमे बस रहे हैं
 कितने उठे हैं मर मर कितने उकस रहे हैं
 वो दुःखमे फँस रहे हैं और लोग हँस रहे हैं
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 कहता है कोई गिरकर ये 'ऐ खुदाय लीजो'
 कोई डगमगाके हरदम कहता है "वाये" लीजो"
 कोई हाथ उठा पुकारे "मुझको भी हाय लीजो"
 कोई शोरकर पुकारे "गिरने न पाये लीजो"
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 गिरकर किसीके कपड़े दलदलमे हैं मुअत्तर^१
 फिसला कोई किसीका कीचड़मे मुँह गया भर
 इक दो नहीं फिसलते कुछ इसमे आन अकसर
 होते हैं सैकड़ोके सर नीचे पाँव ऊपर
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे
 ये रूत वो है कि जिसमे खुर्द-ओ-कबीर खुश है
 अदना, गरीब मुफलिस शाह-ओ-बज़ीर खुश है
 माशूक शाद-ओ-खुर्रम, आशिक अमीर खुश है
 जितने हैं अब जहाँमे सब ए 'नजीर' खुश है
 क्या क्या मची है यारो बरसातकी बहारे

^१हाय

^२महक रहे हैं (व्यग है)

^३छोटे व बड़े

ऊमस^१

क्या अबकी गर्मीमें घड़ी पह है ऊमस
 गर्मीके बढ़ानेकी अजब लह है ऊमस
 पानीसे पसीनोंकी बड़ी नह है ऊमस
 हर बागमें हर दस्तमें हर शह है ऊमस
 बरसातके मौसममें निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह^२ है ऊमस
 कितने तो इस ऊमसके तई कहते हैं गर्माव
 यानी कि घिरा अब हो और आके रुकी बाव^३
 उस वक्त तो पड़ता है ग़जब जानमें घबराव
 दिल सीनेमें बेकल हो यही कहता है खा ताव
 बरसातके मौसममें निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह है ऊमस
 बदलीके जो घिर आनेसे होती है हवा बन्द
 फिर बन्दसी गर्मी वो ग़जब पड़ती है यक चन्द
 पंखे कोई पकड़े कोई खोले हैं खड़ा बन्द
 दम रुकके घुला जाता है करनेसे हर इक बन्द
 बरसातके मौसममें निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह है ऊमस
 ईधर^४ तो पसीनोंसे पड़ी भीगी है खाटे
 गर्मीसे ऊधर मैलकी कुछ चियूँटियाँ काटे

^१ऊमस

^२ग़जब

^३बाव

^४ईधर

कपड़ा जो पहनिये तो पसीने उसे आटे
 नंगा जो बदन रखिये तो फिर मक्खियाँ चाटे
 बरसातके मौसममे निपट जह्ल है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह्ल है ऊमस

रुकनेसे हवाके जो बुरा होता है अहवाल
 पंखा कोई आँचल कोई दामन कोई रूमाल
 दम धौकने लगता है लोहारोकी गोया खाल
 कुछ रूहको बेताबियाँ कुछ जानको जजाल
 बरसातके मौसममे निपट जह्ल है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह्ल है ऊमस

घबराके दम आता है कभी जाता है फूला
 आराम जो दिलका है सभी जाता है भूला
 आता है कभी होश कभी जाता है भूला
 कपड़े भी बुरे लगने हैं जी जाता है भूला
 बरसातके मौसममे निपट जह्ल है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह्ल है ऊमस

होती है उमस जो कभी इक रातको आकर
 कर डालती है फिर तो क्रयामत ही मुकर्रर
 ईधर तो हवा बन्द ऊधर पिस्सू व मच्छर
 पानी कोई पीवे तो वो अदहनसे भी बदतर
 बरसातके मौसममे निपट जह्ल है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक क़ह्ल है ऊमस

जिस वक़्त हवा बन्द हो और आके घटा छाया
 फिर कहिये दिल उस गर्मीमे किस तरह न घबराय

ओढ़ो तो पसीना जो न ओढ़ो तो गजब आय
 पिस्तू कभी मच्छर कभी खटमल है लिपट जाय
 बरसातके मौसममे निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक कलह है ऊमस
 गर इसमे हवा खुल गई और पानी भी लाई
 तो जीमे जी और जानमे कुछ जानसी आई
 और इसमे जो फिर हो गई ऊमसकी चढ़ाई
 तो फिर वही रोना वही गुल शोर दुहाई
 बरसातके मौसममे निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक कलह है ऊमस
 ऊमसमे तो लाजिम है कि पंखा न हवा हो
 इक कोठरी हो जिसमे धुवाँ आके भरा हो
 और मक्खियोंके वास्ते गुड़ तनसे मला हो
 उस वक्त मज्जा देखिये ऊमसका कि क्या हो
 बरसातके मौसममे निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक कलह है ऊमस
 इस रतमे तो बन्लाह अजब ऐश है दिल ख्वाह
 मेह बरसे है और सर्द हवा आती है हर गाह
 जगल भी हरे गुल भी खिले सब्जा चरागाह
 ऊमस है मगर दिलको सताती है 'नजीर' आह
 बरसातके मौसममे निपट जह है ऊमस
 सब चीज तो अच्छी है पर इक कलह है ऊमस

कोरा बर्तन

कोरे बरतन हैं क्यारी गुलशनकी
जिससे खिलती हैं हर कली तनकी
बूँद पानीकी इनमें जब खनकी
क्या वो प्यारी सदा हैं सनसनकी
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी
पानीकी आप अब बड़ी हैं जात
क्रतरा क्रतरा हैं जिसका आबेहयात^१
कोरे बरतनमे जब कि आया हात^२
फिर तो आबेहयात भी हैं मात
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी
वह जो पानीकी कोरी गोली हैं
वही आनेकी मोल गो^३ ली हैं
क्या ही ठंडी दवाकी गोली हैं
क्या कहूँ गोली गोली गोली^४ हैं

^१अमृत ^२हाथ ^३यद्यपि ^४एक प्रकार का मटका । गोली=छोटा और गोल । क्या कहूँ अगरच. लेनेको लेली हैं मगर इसकी असलियत और गुण बताना मुश्किल है । दूसरा अर्थ हर एक गोली (गोली-गोली) ठंडी दवा की गोली है । तीसरा अर्थ : कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं । बात साफ़ है—गोली है गोली है ।

ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

ये जो गोलीकी बोलिया बांधीं
हमने पानीकी गोलिया बांधीं
सोधी सोधी ठठोलिया बांधीं
दिलने फलोकी भोलिया बांधीं
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

कोरा पनहारीका जो हं मटका
उमका जोबन कुछ और ही मटका
ले गया जान पायेंका खटका
दिल घडेकी तरहमे दे पटका
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

कोरी ठलिया ये देखकर लोटा
दिल लगा होने कुछ खरा खोटा
गरचे लोटा वो कवका हं छोटा
जिमने देखा उमीका दिल लोटा
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

कोरे कूजोको' देख आलममें
कूजे मिस्रीके भर गये शममें

यूँ वो रिस्ते हैं आबके नममें^१
जैसे डूबे हों फूल शबनममें
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

वो जो कोरा सफ़ेद भज्भर हैं
जिसकी जागीर मुल्क भज्भर हैं
'बेल बूटेसे इस भमकपर हैं
ताश कमरूवाब या मुशज्जर' हैं
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

जिस सुराहीमे सर्व पानी हैं
मोतीकी आब पानी पानी हैं
जिन्दगीकी यही निशानी हैं
दोस्तो ये भी बात मानी हैं
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

जितने नज्ज-ओ-नयाज^२ करते हैं
और जो पीरोसे अपने डरते हैं
जब कि ला फूल-पान धरते हैं
वो भी कोरी ही ठलियाँ भरते हैं
ताजगी जीकी और तरी तनकी
वाह क्या बात कोरे बरतनकी

^१ तरीमे

^२ एक रेशमी कपड़ा

^३ नज्जर नियाज, फ़ातिहा

खाकसे जब कि उनको गढ़ते हैं
 बन्दगीसे ये अपनी बढ़ते हैं
 कोरों पर फूल हार चढ़ते हैं
 हर-ओ गिल्मा^१ दरुद^२ पढ़ते हैं
 ताजगी जीकी और तरी तनकी
 वाह क्या बात कोरे बरतनकी
 'कोरों पर जो, नज़ीर जोबन है
 जोजरेमे^३ कहाँ वो खनखन है
 जिस घड़ोंची पै कोरा बासन है
 वो घड़ोंची नहीं है गुलशन है
 ताजगी जीकी और तरी तनकी
 वाह क्या बात है कोरे बरतनकी

^१अप्सरा व स्वर्गके सुन्दर नवयुवक

^२मगलाचरण

^३पुराना टूटा हुआ बर्तन

आगरेकी ककड़ी

पहुँचे न इसको हरगिज काबुल दरेकी ककड़ी
नै पूरब और न पच्छिम खूबी भरेकी ककड़ी
नै चीनके परेकी और न वरेकी ककड़ी
दक्खिनकी और न हरगिज उससे परेकी ककड़ी
क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
और जिसमे खास काफिर, असकन्दरेकी ककड़ी
क्या प्यारी प्यारी मीठी और पतली-पतलियाँ हैं
गन्नेकी पोरियाँ हैं रेशमकी तकलियाँ हैं
फह्रदकी निगाहें शीरीकी हंसलियाँ हैं
मजनूकी सर्द आहे लंलाकी उँगलियाँ हैं
क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
और जिसमे खास काफिर असकन्दरेकी ककड़ी
कोई है जरदी मायल कोई हरी भरो है
पुखराज मुनफ़इल^१ है पन्नेको थरथरी है
टेढी है सो तो चौड़ी वह हीरेकी हरी है
सीधी है सो वो यारो रांभाकी बांसरी है
क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
और जिसमे खास काफिर असकन्दरेकी ककड़ी
मीठी है जिसको बर्फी कहिये गुलाबी कहिये
या हल्के^२ देख उसके ताजी जलेबी कहिये

तिलशकरियोंकी फाँकें अब या इमिती कहिये
 सच पूछिये तो इसको दन्दाने-मिल्ली कहिये
 क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
 और जिसमे खास काफिर असकन्दरेकी ककड़ी
 छूनेमें बर्गे-गुल^१ है खानेमे कुरकुरी है
 गर्मीके मारनेको इक तीरकी सरी है
 आँखोंमें सुख, कलेजे ठंडक हरी भरी है
 ककड़ी न कहिये इसको ककड़ी नहीं परी है
 क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक, इस आगरेकी ककड़ी
 और जिसमे खास काफिर असकन्दरेकी ककड़ी
 बेल उसकी ऐसी नाजुक जूँ जुल्फ पेच खाई
 बीज ऐसे छोटे-छोटे खशखाश या कि राई
 देख उसकी ऐसी नर्मी बारीकी और गुलाई
 आती है याद हमको महबूबकी कलाई
 क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
 और जिसमे खास काफिर असकन्दरेकी ककड़ी
 लेते हैं मोल उसको गुलकी तरहसे खिलके
 माशूक और आशिक खाते हैं दोनों मिलके
 आशिक तो हैं बुझाते शोलोंको^२ अपने दिलके
 माशूक हैं लगाते माथे पे अपने छिलके
 क्या खूब नर्म-ओ-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
 और जिसमे खास काफिर असकन्दरेकी ककड़ी

^१फूलकी पखुड़ी

^२लपटों

मशहर जैसी हर जा यांकी जमालियां^१ हैं
 वैसी ही ककड़ीने भी धूमें ये डालियां हैं
 मीठी हैं सो तो गोया शक्करको थालियां हैं
 कड़वी हैं सो भी गोया खूबांकी गालियां हैं
 क्या खूब नर्म-श्रो-नाजुक इस आगरेकी ककड़ी
 और जिसमें खास काफ़िर असकन्दरेकी ककड़ी
 जो एक बार यारो इस जा की खाये ककड़ी
 फिर जा कहीकी उसको हरगिज न भाये ककड़ी
 दिल तो 'नज़ीर' राश है यानी मंगाये ककड़ी
 ककड़ी है या क्रयामत क्या कहिये हाय ककड़ी
 क्या खूब नर्म-श्रो-नाजुक, इस आगरेकी ककड़ी
 और जिसमें खास काफ़िर असकन्दरेकी ककड़ी

^१सुन्दरता

^२सुन्दरियों, प्रेमिकाओ ।

तरबूज

क्यों न हो सज्ज जमुरद^१ के बराबर तरबूज करता है खुश्क कलेजेके तई तर तरबूज दिलकी गर्मीको निकाले है ये अकसर तरबूज जिस तरफ देखिये बेहतरसे है बेहतर तरबूज अब तो बाजारमे बिकते है सरासर तरबूज कितने है खाते नजाकत^२से उसे ओसमे धर ताकि सीना हो खुनक^३ सर्दीसे ठंडा हो जिगर कितने शर्बत हीके पीते है कटोरे भर भर कितने बीजोंको खुटकते है खुशी हो होकर कितने खाते है किफायतसे पकाकर तरबूज मोठे और सर्द है इतने कि जरा नाम लिये होंट चिपके है जुदा दांत है कड़कड़ बजते शबको दो चार मंगकर जो तराशे मँने क्या कहूं मैं कि मिठाईमे वो कैसे निकले कोई ओला कोई मिस्री कोई शक्कर तरबूज मुझसे कल यारने मंगवाया जो देकर पैसा उसके टांकी जो लगाई तो वो कच्चा निकला देख त्योरीको चढ़ा होके गजब तैशमे आ कुछ न बन आया तो फिर घूरके ये कहने लगा “क्यों बे लाया है उठाकर ये मेरा सर तरबूज”

जब कहा मैंने मियां ये तो नहीं है कच्चा
 और कच्चा है तो मैं पेटमें बैठा तो न था
 इसके सुनते ही गजब होके वो लाल अगारा
 लाठी पाठी जो न पाई तो फिर आखिर भुंभला
 खींच मारा मेरे सीने पे उठाकर तरबूज
 क्यों मियां हमको जो तुम कहते हो ककड़ी खीरा
 कोसना हर घड़ी हर आनका होता है बुरा
 तुमको तो पड़ गया मिलनेका रकीबोसे मज्जा
 भूठी क्रसमें ये मेरे सरकी जो खाते हो भला
 क्या मेरे सरको किया तुमने मुकर्रर तरबूज
 यार जब हमसे है तरबूज कभी मंगवाता
 छिलका उसका मुझे टोपीकी तरह दे है पिन्हा
 और ये कहता है कि फेंका तो चखाऊंगा मज्जा
 क्या कहूं यारो मैं उस शोखके डरका मारा
 दो दो दिन रखे हुए फिरता हूं सरपर तरबूज
 एक बेदर्द सितमगर है वो काफ़िर-खूंखार
 कत्ल करता है अजीजोंके तई लैल-श्रो-निहार
 कल मेरा उसकी गलीमें जो हुआ आके गुजार
 इस तरह सरके शहीदोंका पड़ा था अंबार
 जैसे बाजारमें तरबूजके ऊपर तरबूज
 थी जिन्हे आगे तेरे कन्दसे होंटों पे निगाह
 आरजूहीमें वो सब मरके हुए खाक सियाह
 उन शहीदोंकी भी कुछ तुझको खबर है बल्लाह
 बोसे लेनेकी तमन्नामें तहे-खाकमें आह
 वही हसरतजदा अब निकले है बनकर तरबूज

रात उस शोख़से मैंने ये पहेलीमें कहा
 “भीगी बकरी किसे कहते हैं बताओ तो भला”
 इस पहेलीके तई सुनके बड़े सोचमें आ
 जब न समझा तो कहा “हार कि अब तूही बता”
 हंसके जब मैंने कहा “ए मेरे दिलबर तरबूज”^१
 अब तो उस शोख़का तरबूज ही लूटे हैं मज़ा
 वो तो ठंडा है वले मेरा जिगर है जलता
 रोना किस तौर, ‘नज़ीर’ अब न मुझे आवे भला
 फांक बीजोंकी भरी ले हैं वो जब मुंहसे लगा
 तब लिपट जाता है क्या प्यारसे हंसकर तरबूज

^१तरबूज = तर + बूज = भीगी + बकरी

आँधी

न हो क्योंकि जहाँ यारो जबर और जेर^१ आँधीमें
कि होकर बावले फिरते हैं बनके शेर आँधीमें
लगा लेने जो कल दामन हवाका घेर आँधीमें
बगूले उठ चले थे और न थी कुछ देर आँधीमें
कि हमसे यारसे आ हो गई मुठभेड़ आँधीमें

कहा मैंने अजी कुछ खैर है जाती हो तुम कीधर
हवा पर भी तुम्हें कुछ है नज़र ए नाज़नीं दिलबर^२
चलो भागो शताबी^३ वरना आँधी आ गई सर पर
जता कर खाकका उड़ना दिखा कर गर्दका चक्कर
वहीं हम ले चले उस गुलबदनको घेर आँधीमें

ये मुनते ही फिरी डरकर वो चंचल नाज़नीं गुलरू^४
चली इस हालसे उस दम कि मेरा जी गया ग़श हो
कि इसमें आके एक भोंका अँधेरा कर गया यारो
रकीबोंने^५ जो देखा ये उड़ा कर ले चला उसको
पुकारा ये कोई कैसा हुआ अन्धेर आँधीमें

ये कह कर खड़खड़ातेग-ओ-सिपर और मिलके सब दौड़े
पुकारे लेचलो जाने न पावे इसको जल्दीसे
कहाँका दौड़ना और किसका लेना हम जो घर भागे

^१उलट-पलट ^२दिलको लुभानेवाले ^३जल्द ^४फूलके समान
मुखवाली ^५प्रेमिकासे दूसरे प्यार करनेवालेको रकीब कहते हैं

वो दौड़े तो बहुत लेकिन उन्हें आँधीमे क्या सूभे
 जबस^१ हम उस परीको लाये घरमे घेर आँधीमे
 चले इसमे हवाके फिर तो आकर और सन्नाटे
 अँधेरा हो गया यक सर मनोँ खाके लगिँ उड़ने
 उन्हीं भोंकोंमे हमने उस परी चंचलको जल्दीसे
 चढ़ा कोठे पै दरवाजेको मूँद और खोलकर पर्दे
 लगा छाती लिये बोसे किया हथफेर आँधीमे
 इधर तो आ गई आँधी अँधेरा हो गया हर सू^२
 खबर किसको किसीकी में कहाँ हूँ और कहाँ है तू
 अहाहाहा अजब इशरतकी उस दम बह गई एक जू
 वो कोठेका मकाँ वो काली आँधी वो सनम^३ गुरू
 अजब रंगोंकी ठहरी आके हेरा फेर आँधीमे
 इसी आँधीने गुलशन कर दिया यारो मेरे घरको
 बिछाया शाद हो मैंने पलंगपर भाड बिस्तरको
 सुराहीकी खबर ली और सँभाला जाके सागरको
 उठाकर ताकसे शीशा लगा छातीसे दिलबरको
 नशोंमे ऐशके क्या क्या किया दिल सैर आँधीमे
 चमन-सा खिल गया यारो मेरे कोठेके जीनेपर
 हुई पखोंकी मारा मार गर्मीके पसीनेपर
 लगे फिर ऐश-ओ-इशरत जब तो होने इस करीनेपर
 कभी बोसा, कभी अँगिया पै हाथ और गाह सीनेपर
 लगे लटने मजेके संगतरे और बेर आँधीमे

^१जबरदस्ती ^२हर ओर ^३मूर्ति—प्रियके लिये प्रयोग होता है

ये ठहरा जब तो फिर वाँ ऐशके बादल लगे घिरने
जो डूबी हसरते थीं दिलमे सब उसदम लगी तिरने
लिपटकी ठहरी और भी हाथ सीनेपर लगे फिरने
मजे ऐश-ओ-तरब लज्जत लगे यूँ लूटकर करने
कि जंसे टूटकर मेवोके होंवे ढेर आंधीमे

इस आंधीमे अ हा हा हा अजब हमने मजे मारे
फ़लक'पर ऐश-ओ-इशरतके दिखाई दे गये तारे
रकीबोंकी मैं अब ख़वारी ख़राबी क्या लिखूँ बारे
तले कोठेके बैठे अट गये सब गर्दके मारे
भरी नथनोंमे उनके खाक दस-दस सेर आंधीमे

किसीने भागकर जल्दीसे जा घरका लिया आँगन
गिरा कोई गढ़ेमें और कोई भागा कही दुश्मन
किसीके छिन गये कपड़े उच्चक्कोंकी गई वाँ बन
किसीकी उड़ गई पगड़ी किसीका फट गया दामन
गई ढाल और किसीकी गिर पड़ी शमशीर आंधीमे

ये दिन आंधीके यारो यों तो सबके होश खोते हैं
जिन्हें है ऐश वो आंधीमे मोतीसे पिरोते हैं
मजा है जिनको हँसते हैं जिन्हे गम है सो रोते हैं
'नज़ीर' आंधीमे कहते हैं कि अक्सर देव होते हैं
मियाँ हमको तो ले जाती है परियाँ घेर आंधीमे

जाड़ेकी बहारें

जब माह अगहनका ढलता हो तब देख बहारे जाड़ेकी
और हंस हंस पूस संभलता हो तब देख बहारे जाड़ेकी
दिन जल्दी जल्दी चलता हो तब देख बहारे जाड़ेकी
और पाला बर्फ पिघलता हो तब देख बहारे जाड़ेकी
चिल्ला खम ठोंक उछलता हो तब देख बहारे जाड़ेकी

तन ठोकर मार पछाड़ा हो और दिलसे होती कुश्ती-सी
थर-थरका जोर अखाड़ा हो बजती हो सबकी बत्तीसी
हो शोर फफू हूहूका और धूम सी सी हो सी सी की
कल्ले पर कल्ला लग लगकर चलती हो मुंहमे चक्की-सी
हर दांत चनेसे दलता हो तब देख बहारें जाड़ेकी

हर एक मकानमे सदीने आ बांध दिया हो ये चक्कर
जो हरदम कप कप होती हो हर आन कड़ाकड़ और थरथर
पेंठी हो सदी रगरगमें और बर्फ पिघलता हो पत्थर
भड़ बांध महावट पड़ती हो और तिसपर लहरें ले लेकर
सन्नाटा बावका चलता हो तब देख बहारें जाड़ेकी

तरकीब बनी हो मजलिसकी और काफ़िर नाचनेवाले हों
मुंह उनके चांदके टुकड़े हों तन उनके रुईके गाले हों
पोशाकें नाजूक रंगोंकी और ओढ़े शाल दुशाले हों
कुछ नाच और रंगकी धूम हों कुछ ऐशमें हम मतवाले हों
प्याले पर प्याला चलता हो तब देख बहारे जाड़ेकी

हर एक मकान हो खिलवत'का और ऐशकी सब तैय्यारी हो
 वो जान कि जिसपर जी गश हो सौ नाजसे आ भनकारी हो
 दिल देख 'नजीर' उसकी छबको हर आन अदापर वारी हो
 सब ऐश मुहइय्या हो आकर जिस जिस अरमानकी बारी हो
 जब सब अरमान निकलता हो तब देख बहारें जाड़ेकी

मौत

दुनियामे अपना जी कोई बहलाके मर गया
दिल तंगियोंसे और कोई उकताके मर गया
आकिल^१ था वो तो आपको समझाके मर गया
बे अकल छाती पीटके घबराके मर गया
दुख पाके मर गया कोई सुख पाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

दिन रात रन मची है यहां और बड़ी है जंग
चलती है नित अजल^२की सनां गोली और तफ़ंग
जिसका क़दम बढ़ा वो मुवा वहीं बेदरंग
जो जो छिपाके भागा तो उसका हुआ ये रंग
वो भागनेमे तेग-ओ-तबर खाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

पैदा हुए है खलक^३में अब जितने जुज व कुल^४
या चुप गुजारी उम्र व या धूमकर चुहल
जब आन कर फ़ना^५ने खिलाया अजलका गुल
काम आई कुछ बिगोको खमोशी न शोर-ओ-गुल
चुपके कोई मुवा कोई चिल्लाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

^१ बुद्धिमान

^२ मृत्यु

^३ दुनिया

^४ सबका सब

^५ मृत्यु

गर लाख इशरतों^१से है दिलमे ये धूमधाम
 या सौ मुसीबतोंसे हुआ गमका अजदहाम^२
 आखिरको जब अजलने किया आनकर सलाम
 गममे किसी हसींके कोई हो गया तमाम
 कोई हर परियां छातीसे लिपटाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 पढ़कर नमाज कोई रहा पाक बावजू^३
 कोई शराब पीके रहा मस्त कूबकू
 नापाकी पाकी मौतके ठहरी न रूबरू
 कोई इबादतों^४से मुवा होके सुखरू^५
 नापाक रूसियाह^६ भी पछताके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 कर दिलके आईनेके तई साफ एक बार
 कशफे-कलूब^७ दिल पै किया अपने आशकार
 जब पैक^८ने अजलके किया आनकर गुजार
 काम आई रोशनी न करामातकी बहार
 कामिल फ़कीर खलकमे कहलाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 बिलफ़ज^९ गर किसीको हुई याद कीमिया^{१०}
 या मुफलसीमे एकने खूने-जिगर पिया

^१ विलास ^२ समूह ^३ वजू = नमाज पढ़नेमे पहले धार्मिक गीतिसे हाथ मुंह धोना। बावजू = वजूके साथ पूजापाठ जगमे भला कहलानेवाला
^४ काले मुँहवाले, रूपहीन ^५ मनके भेद ^६ हरकारे ^७ फ़ज कर लो, मान लो
^८ सोना बनानेकी विद्या

कोई जियादा उम्रसे इक दम नहीं जिया
 सूखी किसीने रोटी चबा गममे जी दिया
 कलिया पुलाव जर्दा कोई खाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 पहना किसीने खूब लिबास इत्रका भरा
 या चीथड़ोकी गुदड़ी कोई ओढ़कर मरा
 आखिरको जब अजलकी चली आनकर हवा
 पूले^१के भोपड़ेको कोई छोड़कर चला
 बाग-ओ-मकॉ महल कोई बनवाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 गेसू^२ बढ़ाके कोई, मशायख^३ हुआ यहां
 या बेनवा^४ हो कोई हुआ खुद मुंडा यहां
 जब मुशिदे-अजल^५का कदम आया दरमियां
 कोई तो लंबी दाढ़ी लिये हो गया रवां
 मुँछे भवे तलक कोई मुंडवाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 गर एक बेवक्रार हुआ एक कद्रदार
 सर पर लगा जब आनके तेगे अजलका वार
 बेकदरी काम आई किसीका न कुछ वक्रार
 था बे हया सो वोतो मुवा खोके नंग-ओ-आर^६
 और जिसको शर्म थी सो वो शर्मके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

^१फूस ^२केश ^३शैख (फकीर) ^४बेजवान ^५यमदूत, मुशिद=पीर,
 गुरु, अजल=मृत्यु ^६मान मर्यादा

कोई मोती चाबता था कोई मूठ और मटर
जिस दम कजाने हाथमे ली तेग और सिरप^१
काम आई कुछ फकीरी न कुछ तहत और छतर
ये खाकपर मुवा वो मुवा तहतके उपर
थी जिसकी जैसी कद्र वो बतलाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

आशिक हो गर किमीने किसी गुलकी चाह की
आशिकने अपने इश्क बढ़ानेमे जान दी
और जब अजलकी दोनोसे आकर लगन लगी
माशूकी काम आई किसीकी न आशकी
दिलबर भी अपने हुस्नको चमकाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

कितनोमे बढके ऐसी बढी उलफतोंकी चाह
जो जिस्म-ओ-जान एक हुए उनके वाह वाह
आशिक मुवा तो मर गया माशूक खामखाह
माशूक मर गया तो वो आशिक भी करके आह
उस गुलबदनकी कस्र उपर जाके मर गया
जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

क्या काले पीले शक्लके क्या गोरे गुल अज़ार
आशिक कोई है और कोई माशूक तरहदार
आकिल हकीम-ओ-आमिल-ओ-फ़ाज़िल^२ रसालदार
पंडित नज़ूमी बंद चे नादों चे होशियार

दो दिनकी शान हर कोई दिखलाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 क्या ओछी ज्ञात पातके अशराफ क्या नजीब^१
 किस्मतसे फूटी कौड़ी किसीको न हो नमीब
 जिस दम क़ज़ाके हाथने बन्द आँख की हशीब
 क्या होशियार-ओ-आकिल-ओ-दाना व क्या तबीब^२
 कोई ख़जाने खाकमें गड़वाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 मरनेसे पहले मर गये जो आशिकानेज़ार
 वो ज़िन्दए-अबद^३ हुए ताहश्र^४ बरक़रार
 क्या कातिबाने अहलेकलम खुश नसीबकार
 जितनी किताबे देखते हो लाख या हज़ार
 कोई लिखके मर गया कोई लिखवाके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया
 पीरो मुरीद-ओ-शाह-ओ-गदा^५ मोर और वजीर
 सब आनकर अजलके हुए दाममें असीर^६
 मुफ़लिस गरीब साहबे ताज-ओ-अलम^७ सरीर
 कौन इस जहाँमें ज़िन्दा रहा ए मियाँ 'नज़ीर'
 कोई हज़ारों ऐशकी ठहराके मर गया
 जीता रहा न कोई हर इक आके मर गया

^१कुलीन ^२हकीम, चिकित्सक ^३अनन्त काल तकके लिए जीवित
^४क्रयामत तकके लिए ^५राजा और भिखारी ^६जालमें कैद, ^७ताज तख़्तवाले

फक्कीरोंको सदा (१) बुराईयाँ की बुराईयाँ

कजूमीकी बुराईयाँ

जरकी जो मुहब्बत तुझे पड जायेगी बाबा
दुख इसमे तेरी रूह बहुत पायेगी बाबा
हर खानेको हर पीनेको तरसायेगी बाबा
दौलत जो तेरे याँ है न काम आयेगी बाबा
फिर क्या तुझे अल्लाहमे मिलवायेगी बाबा

दौलत ओ तेरे पास है रख याद तू ये बात
खा तू भी और अल्लाहकी कर राहमे खैरात
देने हीसे इसके तेरा ऊँचा रहेगा हात
और याँ भी तेरी गुजरेगी सौ ऐशसे औकात
और वाँ भी तुझे सैर ये दिखलायेगी बाबा

दौलतकी यही खूबी है मौ नेमते खा डाल
कमस्वाब पहन बादला ओढ़ और रिदा डाल
बाग-ओ-चमन-ओ-हौज-ओ-इमारात बना डाल
इकदम तू भला खल्कमे दरिया-सा बहा डाल
फिर वरना तुझे सैर ये दिखलायेगी बाबा

दाताकी तो मुशकिल कोई अटकी नहीं रहती
चढ़ती है पहाड़ोंके उपर नाव सखीकी

और तूने बख्शीलीसे अगर जमा उसे की
तो याद ये रख बात कि जब आवेगी सख्ती
खुशकीमे तेरी नाव ये डुबवायेगी बाबा

दौलत जो तेरे घरमे ये अब फूली है जँ फूल
मर्द्द^१ भी करती है ये और करती है मकबुल^२
जो चाहें तेरे साथ चले याँसे ये मजहूल^३
जिनहार^४ खबरदार हो इस बात पे मत भूल
ये खन्दी^५ तेरे साथ नहीं जायेगी बाबा

गर नेक कहाता है कर इस जाय कुछ एहसान
हिन्दूको खिला पूरी मुसलमाँको खिला नान
खा तू भी इसे शौकसे और ऐश पे रख ध्यान
तू इसको न खावेगा तो ये बात यकीं जान
इक रोज ये खन्दी तुझे खा जायेगी बाबा

उससे यही बेहतर है तू ही अब इसे खा जा
बेटोंको रफ़ीकोंको अजीजोंको खिला जा
सब रूबरू अपने मए-इशरत मे उड़ा जा
फिर शौकसे हँसता हुआ जन्नतको चला जा
वरना तुझे हर दुःखमे ये फँसवायेगी बाबा

गर आवेगा हाकिम कोई जालिम तो मेरी जान
और तेरी मुनेगा वो बख्शीलीकीसी गुज़रान

^१बुरा, जिससे लोग घृणा करे

^२लोकप्रिय ^३जड ^४कभी भी

^५बदचलन स्त्री, वेश्या ^६ऐशकी शराव

जब खींच बुलावेगा लगाकर कोई तूफ़ान
तू जीसे जिसे दोस्त समझता है ये हर आन
ये दोस्त ही दुश्मन तेरी हो जायेगी बाबा

कोई कहेगा “इसके तई बाँधके लटका”
कोई कहेगा “तोबडा मुह इसकेमे चढवा”
कोई कहेगा “कपड़े भी सब इसके उतरवा”
सौ जिल्लत-ओ-स्वारीसे तुझे देखके फिरता
बँधवावेगी और मार भी खिलवायेगी बाबा

और जो कभी हाकिमने न पूछा तेरा अहवाल
तो चोर चुरा लेवेगा या डाका कोई डाल
गाडेगा ज़मी बीच तो फिर होवेगा ये हाल
क्रिस्मतसे तेरी जब कभी आ जावेगा भूंचाल
फिर नीचे ही नीचे ये सरक जायेगी बाबा

ये तो न किसी पास रही है न रहेगी
जो औरसे करती रही वो तुझसे करेगी
कुछ शक नहीं इसमे जो बढ़ी है मो घटेगी
जब तक तू जियेगा तुझे ये चैन न देगी
और मरते हुए पर ये गज़ब लायेगी बाबा

जब मौतका होवेगा तुझे आनके धड़का
और नज़अ तेरे आनके दम देवेगी भड़का
जब इसमे तू अटकेगा न दम निकलेगा फड़का
कुप्पोमे रूप डालके जब देखेंगे खड़का
तब तनसे तेरे जान निकल जायेगी, बाबा

तू लाख अगर मालके सन्दूक भरेगा
हैं ये तो यकीं आखिरश इक दिन तू मरेगा
फिर बाद तेरे इस पै जो कोइ हाथ धरेगा
और नाच मजा देखेगा और ऐश करेगा
और रूह तेरी कब्रमे चिल्लायेगी बाबा

इसके तो वहाँ ढोलक व मिरदंग बजेगी
और रूह तेरी कब्रमे हसरतसे जलेगी
वो खावेगा और तेरे तई^१ आग लगेगी
ता हश्^२ तेरी रूहको, फिर कल न पड़ेगी
ऐसा तुझे ये गोरमे^३ तड़पायेगी बाबा

जू जू वो तेरे मालसे इज्जतमे पलेगा
तू कब्रमे रह रह कफ़े-अफसोस मलेगा
जो चाहे कोई बोले तो फिर बस न चलेगा
बेबस तू पड़ा कब्रमे हसरतसे जलेगा
दिन रात तेरी छातीको कुटवायेगी बाबा

जावेगा तेरी गोरकी जानिब^४ जो वो नागाह
साक्री व सुराही व परीजादके हमराह
रोना मुझे आता है तेरे हाल पै वल्लाह
जब देखेगा सौ ऐशमे तू उसके तई आह
क्या क्या तेरी छाती पै ये लहरायेगी बाबा

तू भूत हो छाती पे अगर आन चढेगा
तो वाँ भी तेरे वास्ते आमिल कोई बुलवा
शीशेमे उतरवाके तुझे देवेगे गड़वा
या खूबसा सुलगाके कोई हाय फलीता
धूनी भी तेरी नाकमे दिलवायेगी बाबा

गर होश है तुझमे तो बख्शीलीका न कर काम
इस कामका आखिरको बदी होता है अनजाम
थूकेगा कोई कहके कोई देवेगा दुशनाम^१
जिनहार^२ न लेगा कोई हर सुब्ह तेरा नाम
पैजारे^३ तेरे नाम पे लगवायेगी, बाबा

कहता है 'नजीर' अब जो ये बाते तुझे हर आन
गर मर्द है आकिल तो इसे भूट तू मत जान
टुक गौरमे कर गंज पे कारूँके^४ ज़रा ध्यान
जैसा ही उसे उसने किया खूब परीशान
वैसा ही मज़ा तुझको ये दिखलायेगी बाबा

^१गाली ^२कदापि, कभी भी ^३जूतियाँ ^४कारून=कुबेर, एक असंख्य
नवाला पूंजीपति ।

फक्कीरोंकी सदा (२) सफ़रे-आखिरतकी तय्यारा

परलोक यात्राकी तय्यारी

बटमार अजलका आ पहुँचा टुक इसको देख डरो बाबा
अब अशक बहावो आँखोंसे और आहें सर्द भरो बाबा
दिल हाथ उठा इस जीनेसे ले बस मन मार मरो बाबा
जब बापकी खातिर रोते थे अब अपनी खातिर रो बाबा
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाजेगा चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

अब जीनेको तुम रुखसत दो और मरनेको मेहमान करो
खैरात करो एहसान करो या पुन्न करो या दान करो
या पूरी लड्डू बनवाओ या खासा हलवा नान करो
कुछ लुत्फ नहीं अब जीनेका अब चलनेका सामान करो
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

दिल काटो अपना जीनेसे अब और गलेको मत काटो
अब चाट फ़नाकी टुक चक्खो और खून किसीका मत चाटो
धुन छोड़ो हिस्से बख़रेकी और भाजी अपनी तुम बाटो
नाकुन्द बछेरे कूद चुके अब और दोलती मत छाटो
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

ये अस्प^१ बहुत कूदा उछला अब कोड़ा मारो ज़ेर करो
जब माल इकट्ठा करते थे अब तनका अपने ढेर करो
गढ़ टूटा लश्कर भाग चुका अब म्यानमे तुम शमशीर करो
तुम साफ़ लड़ाई हार चुके अब भागनेमे मत देर करो
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फिक्र करो बाबा

सर काँपा चाँदी बाल हुए मुंह धीला पलके आन भुकी
कद टेढ़ा कान हुए बहरे और आँखे भी चूंधियाय गईं
मुख नींद गई और भूक घटी दिल गुस्त हुआ आवाज़ मही
जो होनी थी सो हो गुज़री अब चलनेमे कुछ देर नहीं
तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फिक्र करो बाबा

या पाँव घिसटकर चलनेसे मत रस्तेको हैरान करो
और पोपले मुहसे रोटियोंको मत मलमलकर हलकान करो
अब आप हुए तुम पानीसे मत पानीका नुकसान करो
कुछ लाभ नहीं है जीनेमे, अब मरनेसे पहचान करो
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई, घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फिक्र करो बाबा

गर अच्छी करनी नेक अमल तो दुनियासे ले जाओगे
तो घर अच्छासा पाओगे और बंठके सुखसे खाओगे
और ऐसी दौलत छोड़के तुम जो खाली हाथों जाओगे
फिर कुछ भी नहीं बन आवेगा घबराओगे पछताओगे

तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

ये उम्र जिसे तुम समझे हो ये हरदम तनको चुनती है
जिस लकड़ीके बल बैठे हो दिनरात ये लकड़ी धुनती है
तुम गठरी बाँधो कपड़ेकी और देख अजल सर धुनती है
अब मौत कफ़नके कपड़ेका याँ ताना बाना बुनती है
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

घरबार रूपें और पैसेमे मत तुम दिलको खुरसन्द' करो
या गोर बनाओ जंगलमे या जमुनापर आनन्द करो
मौत आन लताड़ेगी आखिर कुछ मक्क करो या फन्द करो
बस खूब तमाशा देख चुके अब आँखे अपनी बन्द करो
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

ये ऊँट किरायेका यारो सन्दूक जनाजा अरथी है
जब हो उसपर असवार चले फिर घोड़ा है नै हत्थी है
किस नींद पड़े तुम सोते हो ये बोझ तुम्हारा भारी है
कुछ देर नहीं अब आह 'नज़ीर' तय्यार खड़ी असवारी है
तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़ेपर जीन धरो बाबा
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा

बंजारा नामा

टुक हिंस-ओ-हवाको^१ छोड़ मियाँ मत देसबिदेस फिरे मारा
कज्जाक अजलका लूटे है दिनरात बजाकर नक्कारा
क्या बंधिया भंमा बैल शूतुर क्या गोने पल्ला सर भारा
क्या गेहूँ चावल मूठ मटर क्या आग धुवाँ और अगारा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
गर तू है लक्खी बंजारा और खेप भी तेरी भारी है
ए गाफ़िल तुभसे भी चतुरा इक और बड़ा व्योपारी है
क्या शक्कर मिस्री क्रन्द गरी क्या साँभर मोटा खारी है
क्या दाख मुनक्के सोंठ मिर्च क्या केसर लौंग मुपारी है
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा
तू बंधिया लावे बैल भरे जो पूरब पच्छिम जावेगा
या सूद बढ़ाकर लावेगा या टोटा घाटा पावेगा
कज्जाक अजलका रस्तेमे जब भाला मार गिरावेगा
धन दौलत नाती पोता क्या इक कुंवा काम न आवेगा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
हर मंजिलमे अब साथ तेरे ये जितना डेरा डाँडा है
जर दाम दरमका भाँडा है बन्दूक सिपर और खाँडा है
जब नायक तनका निकल गया जो मुल्कों मुल्को हाँडा है
फिर हाँडा है ना भाँडा है ना हलवा है ना माँडा है
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

^१माया मोह

^२लुटेरा, डाकू

जब चलते चलते रस्तेमें ये गोन तेरी रह जावेगी
 इक बधिया तेरी मिट्टीपर फिर घास न चरने आवेगी
 ये खेप जो तूने लादी है सब हिस्सोंमें बट जावेगी
 धी पूत जँवाई पोता क्या बंजारिन पास न आवेगी
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
 ये खेप भरे जो जाता है ये खेप मियाँ मत गिन अपनी
 अब कोई घड़ी पल साअतमें ये खेप गलेकी है अपनी
 क्या थाल कटोरी चाँदीकी क्या पीतलकी डिबिया ढकनी
 क्या बर्तन सोने चाँदीके क्या मिट्टीकी हंडिया चपनी
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
 ये धूम धडक्का साथ लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल
 इक तिनका साथ न जावेगा मौकूफ^१ हुआ जब अन्न और जल
 घरबार अटारी चौपारी क्या खासा तनसुख है मलमल
 क्या चिलमन पदें फ़र्श नये क्या लाल पलंग और रंगमहल
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
 कुछ काम न आवेगा तेरे ये लाल जमूरुद सीम-ओ-ज़र^२
 जब पूँजी राहमें बिखरेगी हर आन बनेगी जान ऊपर
 नौबत नक्कारे बान निशाँ दौलत हशमत फ़ौजे लश्कर
 क्या मसनद तकिया मुल्क मका क्या चौकी कुर्सी तरत छतर
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
 क्यों जीपर बोझ उठाता है इन गोनोँ भारी भारीके
 जब मौतका डेरा आन पड़ा तब दूने है व्योपारीके
 क्या साज जड़ाव ज़र ज़ेवर क्या गोटे थान कनारीके

क्या घोड़े जीन सुनहरीके क्या हाथी लाल अंबारीके
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा
 मगरूर न हो तलवारोपर मत फूल भरोसे ढालोके
 सब पत्ता तोड़के भागेगे मुह देख अजलके भालोके
 क्या डिब्बे मोती हीरोके क्या ढेर खजाने मालोके
 क्या बगचे ताश मुशज्जर के क्या तरुते शाल दोशालोके
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा
 क्या भारी मकौ बनवाता है खंभा तेरा है पोला
 तू ऊँचे कोट उठाता है बाँ गोर गढ़ने मुँह खोला
 क्या खाई खन्दक रुन्दी फिर क्या बुर्ज कंगूरा अनमोला
 गढ़ कोट रहकिला तोप किला क्या सीसादार दावर गोला
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा
 हर आन नफ़ा और टोटे हे क्यो मरता फिरता है बन बन
 टुक शाफ़िल दिलमे सोच जरा है साथ लगा तेरे दुश्मन
 क्या लौड़ी बाँदी दाई दवा क्या बन्दा चेला नेक चलन
 क्या मन्दिर मसजिद ताल कुआँ क्या खेती बाड़ी फूल चमन
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा
 जब मर्ग^१ फिराकर चाबुकको ये बैल बदनका हाँकेगा
 कोई ताज उतारेगा तेरा कोई गोन सिये और टाँकेगा
 हो ढेर अकेला जंगलमे, तू खाक लहदकी^२ फाँकेगा
 उस जंगलमे फिर आह 'नज़ीर'^३ इक तिनका आन न भाँकेगा
 सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

^१ढोनेवाले

^२सन्दूक

^३ताश, मुशज्जर, कपड़ोके नाम है

भोंपड़ा

ये तन जो है हर इकके उतारेका भोंपड़ा
उससे है अब भी सबके सहारेका भोंपड़ा
इससे है बादशाके नजारेका भोंपड़ा
इसमे ही है फकीर बेचारेका भोंपड़ा
अपना न मोलका न इजारेका भोंपड़ा
बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोंपड़ा

इसमे ही भोले भाले इसीमे सयाने है
इसमे ही होशियार इसीमे दिवाने है
इसमे ही दुश्मन इसमे ही अपने यगाने है
शा' भोंपड़ा भी अपने इसीमे नमाने^१ है
अपना न मोलका न इजारेका भोंपड़ा
बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोंपड़ा

इसमे ही लोग इश्क-ओ-मुहब्बतके मारे है
इसमे ही शोख हुस्नके चाँद और सितारे है
इसमे ही यार दोस्त इसीमे पियारे है
शा भोंपड़ा भी अपने इसीमे बिचारे है
अपना न मोलका न इजारेका भोंपड़ा
बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोंपड़ा

^१ शाह भोंपड़ा नामक एक बुजुर्ग थे जो टेककी पक्तियाँ गुनगुनाया करते थे । ^२ सादे, सीधे सादे

इसमे ही अहले-दौलत-ओ-मुनइम अमीर है
 इसमे ही रहते सारे जहाँके फ़कीर है
 इसमे ही शाह और इसीमे वज़ीर है
 इसमे ही है सगीर^१ इसीमे कबीर है
 अपना न मोलका न इजारेका भोपड़ा
 बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोपड़ा
 इसमे ही चोर ठग है इसीमे अमोल है
 इसमे ही रोनी शक्ल इसीमे ठठोल है
 इसमे ही बाजे और नकारे व डोल है
 शा भोपड़ा भी इसमे ही करते किलोल है
 अपना न मोलका न इजारेका भोपड़ा
 बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोपड़ा
 इसमे ही पारसा^२ है इसीमे लवन्द^३ है
 बेदद भी इसीमे है और दर्दमन्द है
 इसमे ही सब पगन्द इसीमे चरन्द है
 शा भोपड़ा भी अब इसी डरबेमे बन्द है
 अपना न मोलका न इजारेका भोपड़ा
 बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोपड़ा
 इस भोपड़ेमे रहते हैं सब शाह और वज़ीर
 इसमे वकील बख़शी-ओ-मुतसद्दी^४ और अमीर
 इसमे ही सब गरीब है इसमे ही सब फ़कीर
 शा भोपड़ा जो कहते हैं सच है मियाँ 'नज़ीर'
 अपना न मोलका न इजारेका भोपड़ा
 बाबा ये तन है दमके गुजारेका भोपड़ा

^१छोटे ^२बड़े ^३नेक भला ^४स्वच्छन्द, ग़ेय्याश ^५पेशकार

आईना

ले आईनेको हाथमे और बार बार देख
 सूरतमें अपनी कुदरत परवरदिगार देख
 खाले-सियाह^१ और खते-मुश्कबार^२ देख
 जुल्फे दराज^३ तुर-ए-अंबर निसार^४ देख
 हर लहजा अपनी चश्मे के नक्श-ओ-निगार देख
 ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी^५ बहार देख
 आईना क्या है ? जान तेरा पाक साफ दिल
 और खाल क्या है ? तेरे सवेदाए-रुख^६ के तिल
 जुल्फे-दराज फहरे-रसा से रही है मिल
 लाखों तरहके फूल रहे हैं तुभीमे खिल
 हर लहजा अपनी चश्मेके नक्श-ओ-निगार देख
 ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख
 मुश्के-ततार^७-ओ-मुश्के-खतन^८ भी तुभीमे हैं
 याकूत^९ सुर्ख-ओ-लाले-यमन^{१०} भी तुभीमें हैं

^१काला तिल ^२गाल जिनपर वाल फैले हो ^३जिसपर अंबर न्योछावर हो, अवर काले रंगका एक पदार्थ जो आगपर डालनेसे मोमकी तरह पिघलता है और उसका धुआ सुगंधित होता है ।

^४आँख, ^५आपही ^६चेहरेके गोरेपन ^७लम्बे केश ऊंची बुद्धिसे मिल रहे हैं अर्थात् बुद्धिकी पहुच लम्बे वालोकी तरह लम्बी है ।

^८तातारका मुश्क, कस्तूरी ^९लाल जवाहर ^{१०}खुतनकी कस्तूरी
^{११}यमनका लाल

नसरीन-ओ-मोतिया व समन भी तुभीमे है
अलक्रिस्सा क्या कहूँ मैं चमन भी तुभीमे है
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख

सूरजमुखीके गुलकी अगर दिलमे ताब है
तू अपने मुँहको देख कि खुद आफताब है
गुल और गुलाबका भी तुभीमे हिसाब है
रखसार' तेरा गुल है पसीना गुलाब है
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख

नर्गिसके फूलपर तू न अपना गुमान कर
और सर्व'से भी दिल न लगा अपना जानकर
अपने सिवा किसी पे न हरगिज़ तू ध्यान कर
ये सब समा रहे हैं तुभीमे तो आनकर
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख

नरगिस वो क्या है ? जान तेरी चश्मे-खुशनिगाह
और सर्व क्या है ? ये तेरा क्रद्देदराज आह
गर मरे बाग चाहे तो अपनी ही कर तू चाह
हकने तुभीको बाग बनाया है वाह वाह
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख

गर दिलमे तेरे कुमरी-ओ-बुलबुलका ध्यान है
तो होंठ तेरे कुमरी है बुलबुल जबान है
है तू ही बाग और तू ही बागबान है
बाग-ओ-चमन है जितने तू उन सबकी जान है
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख
बेला, गुलाब, सेवती, नसरीन^१-ओ-नस्तरन^२
दाउदी, जूही, लाला-ओ-राबेल, या समन
जितनी जहाँमे फूली है, फूलोकी अनजुमन
ये सब तुझीमे फूल रही है चमन चमन
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख
बाग-ओ-चमनके गुंजा-ओ-गुलमे न हो असीर^३
कुमरीकी सुन सफीर^४, न बुलबुलकी सुन सफ़ीर
अपने तई तो देख कि क्या ह ? तू ए 'नज़ीर'
है हर्फ "मन अरफ"^५के यही मानी, ए 'नज़ीर'
हर लहजा अपनी चश्मके नक्श-ओ-निगार देख
ए गुल तू अपने हुस्नकी आपी बहार देख

^१एक फूल, ^२एक फूल ^३बन्दी, कैदी ^४साथी ^५अपनेको पहिचानन।

दुनिया दारुलमकाफात है (१)

ममार बदला पानेकी जगह है

है दुनिया जिसका नाँव मिया ये और तरहकी बस्ती है
जो महंगोंको ये महंगी है और सस्तोको ये सस्ती है
याँ हरदम झगडे उठते हैं हर आन अदालत बस्ती है
गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त करे तो पस्ती है
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ और अद्लपरस्ती^१ है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती^२ है
जो और किसीका मान रखे, तो उसको भी अरमान मिले
जो पान खिलावे पान मिले जो रोटी दे तो नान मिले
नुकसान करे नुकसान मिले एहसान करे एहसान मिले
जो जेसा जिसके साथ करे फिर वैसा उसको आन मिले
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ और अद्लपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ मौदा दस्त-ब-दस्ती है
जो और किसीकी जाँ बलशे तो उसकी भी हक^३ जान रखे
जो और किसीकी आन रखे तो उसकी भी हक आन रखे
जो याँका रहनेवाला है ये दिलमे अपने जान रखे
ये तुरत फुरतका^४ नक़शा है इस नक़शेको पहचान रखे

^१ न्याय-पूजा, अद्ल = न्याय, परस्ती = पूजा

^२ हाथमे हाथ, इस हाथमे उस हाथ

^३ ईश्वर ^४ जल्दी, फुरती

कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अद्लपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है

जो पार उतारे औरोंको उसको भी पार उतरनी है
जो गर्क^१ करे फिर उसको भी याँ डुबकों डुबकों करनी है
शमशीर तबर बन्दूक, सनों और नशतर तीर नहरनी है
याँ जैसी जैसी करनी है फिर वैसी वैसी भरनी है
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अद्लपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है

जो ऊपर ऊँचा बोल करे तो उसका बोल भी बाला है
और देपटके तो उसको भी कोई और पटकनेवाला है
बेजुर्म-ओ-खता जिस जालिमने मजलूम^२ जिबह कर डाला है
उस जालिमके भी लोहूका फिर बहता नदी नाला है
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अद्लपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है

जो मिल्ही औरके मुँहमे दे फिर वो भी शक्कर खाता है
जो औरके तई अब टक्कर दे फिर वो भी टक्कर खाता है
जो औरको डाले चक्करमे फिर वो भी चक्कर खाता है
जो औरको ठोकर मार चले फिर वो भी ठोकर खाता है
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अद्लपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है

जो और किसीको नाहकमे कोई भूटी बात लगाता है
और कोई गरीब और बेचारा हक नाहकमें लुट जाता है

वो आप भी लूटा जाता है और लाठी वाठी खाता है
जो जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदलपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है
जो औरकी पगड़ी ले भागे उसका भी और उचक्का है
जो और पै चौकी बिठला दे उसपर भी धौस धड़क्का है
याँ पुश्तीमे तो पुश्ती है और धक्केमे याँ धक्का है
क्या जोर मजेका जमघट है क्या जोर ये भीड़भड़क्का है
कुछ देर नही अन्धेर नहीं इन्साफ़ और अदलपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है
है खटका उसके हाथ लगा जो और किसीको दे खटका
और गैब^१से झटका खाता है जो और किसीको दे झटका
चेरेके बीचमे चेरा है और पटके बीच जो है पटका
क्या कहिये और 'नज़ीर' आगे है जोर तमाशा झटपटका
कुछ देर नहीं अन्धेर नही इन्साफ़ और अदलपरस्ती है
इस हाथ करो उस हाथ मिले याँ सौदा दस्त-ब-दस्ती है

^१ गैब=गुप्त लोक,

दुनिया भी क्या तमाशा है

जब किसी युग किसी परम्परा किसी शासनके मिटनेका समय आता है तो पददलित जनताको इसका साफ साफ अनुभव होने लगता है कि छोटे दिमागवाले बड़े दिमागवालोके हाकिम बन गए हैं। आज भारत और कई दूसरे देश यह अनुभव कर रहे हैं कि छोटे आदमी बड़े स्थानों पर पहुँच गए हैं। राज मंत्री, बड़े कर्मचारी, अनेक मुहकमोंके बड़े अप्सर अपने मातहतोंसे बहुत घटिया हैं। कुछ इसी तरहकी परिस्थिति नजीरके समयमें भी थी। जैसे आज छोटे लोग बड़ी जगहोंपर आ गए हैं और अपनेसे श्रेष्ठ लोगोंपर रोव जमा रहे हैं उसी तरह नजीरके जमानेमें, बाबर और अकबर, अशोक और विक्रमादित्यके युगोंमें जैसे महान् कर्मचारी थे उनकी जगह निकम्मे लोगोंने ले ली थी। इस कवितामें मर्मभेदी रूपकके द्वारा नजीरने अपने युगकी तस्वीर खींची है। ये कविता बहुत सोच समझकर पढ़नेकी चीज है।

ये जितना खल्कमें अब जा बजा तमाशा है
जो गौर की तो ये सब एकका तमाशा है
न जानो कम इसे यारो बड़ा तमाशा है
जिधरको देखो उधर एक नया तमाशा है
गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
मेरे ये देख तमाशे, नहीं हैं होश बजा
किसे बताऊँ मैं सीधा किसे कहूँ उलटा
जो हो तिलिस्म हकीकती^१ वो जावे कब समझा
अजब बहारकी एक सैर है अहा हा हा
गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

नहीं है जोर जिन्होंमें वो कुश्ती लड़ते हैं
 जो जोरवाले हैं वो आपसे पछड़ते हैं
 भपटके अन्धे बटेरोंके तइं पकड़ते हैं
 निकाले छातियाँ कुबड़े अकड़ते फिरते हैं
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 जिन्होंके पर हैं वो पाऊँसे चलते फिरते हैं
 जो बिन परोके हैं वो पंखे झलते फिरते हैं
 मिसाल रूहके लुंजे भी चलते फिरते हैं
 हिरनकी तरहसे लँगड़े उछलते फिरते हैं
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 बनाके न्यारियाँ ज़रकीं दुकान बैठा है
 जो हुंडीवाल था वो खाक छान बैठा है
 जो चोर था सो हो वो पासबान बैठा है
 ज़मीन फिरती है और आस्मान बैठा है
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 चकोरे घिसती है और गिद्ध घुग्घू बढ़ते हैं
 पतिंगे बुंदमे मच्छर फलकपे चढ़ते हैं
 किताबे खोल चुगद बैठे आयः गढ़ते हैं
 नमाज़ बुलबले तोते कुरान पढ़ते हैं
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 इराकी फूस ठठेरे खड़े चबाते हैं
 गधे पुलावके तइं लात मार जाते हैं

१मैलका गलाकर मोना चाँदी निकालनेवाले २मोना रक्षक,
 रखवाला ३मूर्ख ४कुरानकी आयत या वैसी ही ऊँची बात ५रांकी, रंकी

जो शेर है उन्हे गीदड़ खड़े चिढ़ाते हैं
 पढ़न तो नाचे है मेडक मलार गाते हैं
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 बतोंकी लम्बी दुमे मोर सब लँडूरे हैं
 सफेद कौवे है चीलोंके रंग भूरे हैं
 जो साधु संत है पूरे सो वो अधूरे हैं
 कपटकी नदी पै बगले भगतके पूरे हैं
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 जबों है जिसके इशारत^१से वो पुकारे हैं
 जो गूंगा है वो खड़ा फ़ारसी बघारे हैं
 कुलाह^२ हंस की कोवा खड़ा उतारे हैं
 उछलके मेडकी हाथीके लात मारे हैं
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 जो है नजीब नसबके^३ वो बन्दे चले हैं
 कमीने अपनी बड़ी जातके नवले हैं
 जो बाज शिकरे है पापड़ खड़े वो बले हैं
 लगड़ तो मर गये उल्लू शिकार खेले हैं
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 चमन है खुशक बनों बीच आब जारी है
 खराब फूल है काँटोंकी गुलअजारी है
 सियाहगोशको^४ पिदड़ीने^५ लात मारी है
 दुबकते फिरते है चीते हिरन शिकारी है
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

^१इशारे ^२टोपी, पगड़ी ^३कुलीन वंशवाले ^४एक हिंसक पशु ^५फुदकी

जिन्होंके दाढ़ी हैं उनकी तो बात वाही है
जो दाढ़ी मुंडे हैं उनकी सनद गवाही है
सियाही रोशनी और रोशनी सियाही है
उजाड़ शह्रमे मुर्दोंकी बादशाही है
गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

जिन्होमे अकल नहीं वो बड़े सियाने हैं
जो अकल रखते हैं वो बावले दिवाने हैं
जनाने शौकसे मर्दोंके पहने बाने हैं
जो मर्द हैं वो बड़े हीजड़े जनाने हैं
गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

जिन्होंके कान नहीं दूरकी वो सुनते हैं
जो कानवाले हैं बैठे वो सरको धुनते हैं
धुएँ बरसते हैं और अब तिनके चुनते हैं
कबाब भीगते हैं और मलीदे भुनते हैं
गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

चमगादड़ोके तई रतजगा मनाती है
छछंदर और भी घीके दिये जलाती है
जो चुहिया ढोल बजाती है घोंस गाती है
गिलहरी बैठी हुई गुलगुले पकाती है
गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

पहनके रीछनी पोशाक जब दिखाती है
गधोंसे हँसती है कुत्तोंसे मुस्कराती है

परी तो कौड़ीकी मिससीको दाग खाती है
 चुड़ैल पानके बीड़े खड़ी चबाती है
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 खबीस^१ देव पलीद आ हरेकसे लड़ते हैं
 जो आदमी है वो सब उनके पाँव पड़ते हैं
 बलाएँ लिपटे हैं और भूत जिन भगड़ते हैं
 ये कहल^२ देखो कि जिन्दोंसे मुर्दे लड़ते हैं
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 गधा लड़ाईमें हाथीके तई लताड़े हैं
 शतरके घरके तई लोमड़ी उजाड़े हैं
 हुमाको बूम हरेक^३ वक़्त मारे धाड़े हैं
 ग़ज़ब है प़दना^४ सारसका पर उखाड़े हैं
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 शकरके ग़ममें शकरखोरी^५ खाक उड़ाती है
 जलेबी पेड़ों उपर मक्खी भनभनाती है
 उड़े है मछलियाँ मुर्गी खड़ी नहाती है
 जंगलकी रेतमें मुगाबी गोता खाती है
 गरज मैं क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 जो ठग थे अपनी वो ठगविद्यासे छूटे हैं
 मुसाफिर उनके गले फाँसी डाल घूटे हैं
 अंधेरी रातमें घर चोट्टोंके फूटे हैं

^१, ^२, ^३ भूत प्रेत, राक्षस ^४मुसीबत, ग़ज़ब ^५एक पक्षी जिसके विषयमें प्रसिद्ध है कि जिसके सिर पर बैठ जाय वह राजा बन जाता है
^६उल्लू ^७पिढ़ा एक पक्षी जो मिठाई बड़े चावसे खाता है

सभोंको दिनके तई साहुकार लूटे हैं
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 तदरूँ रोते हैं और जाश^१ खिल्खिलाते हैं
 खमोश बुलबुले और भुंगे चहचहाते हैं
 चिड़े अटारियाँ और पिढ़े बँगले छूते हैं
 बिलोंको छोड़के चूहे महल उठाते हैं
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 चरिन्द जितने हैं पर भाड भाड उड़ते हैं
 परिन्द गिरते हैं और बोटी भाड उड़ते हैं
 पड़ी है बस्तियाँ वीरान उजाड उड़ते हैं
 अटल हो बैठे हैं रोड़े पहाड़ उड़ते हैं
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 सुलैमाँ भूके हैं च्यंटीके पास ढेरी हैं
 कलग बज्जेकी चिड़ियाने राह घेरी हैं
 अजब अंधेरे उजालेकी फेरा फेरी हैं
 घड़ीमे चाँदनी है और घड़ी अंधेरी है
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है
 अजीज^३ थे जो हुए चश्ममें सभोकी हकीर^४
 हकीर थे सो हुए सबमे साहबे-तौक़ीर^५
 अजब तरहकी हवाएँ हैं और अजब तासीर
 अचंभे खल्कके क्या क्या कहूँ बयाँ में 'नज़ीर'
 गरज में क्या कहूँ दुनिया भी क्या तमाशा है

दुनिया धोकेकी टट्टी है

ये पैठ अजब है दुनियाकी और क्या क्या जिन्स इखट्टी है
याँ माल किसीका मीठा है और चीज किसीकी खट्टी है
कुछ पकता है कुछ भुनता है पकवान मिठाई पट्टी है
जब देखा खूब तो आखिरको ना चूल्हा भाड़ ना भट्टी है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई ताज खरीदे हँस हँसकर कोई तरुत खड़ा बनवाता है
कोई कपड़े रंगे पहने है कोई गुदड़ी ओढ़े जाता है
कोई भाई बाप चचा नाना कोई दादा पोता कहाता है
जब देखा खूब तो आखिरको नै रिश्ता है न नाता है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई सेठ महाजन लाखपती बरज्जाज कोई पनसारी है
याँ बोझ किसीका हल्का है और खेप किसीकी भारी है
क्या जाने कौन खरीदेगा और किसने जिन्स उतारी है
जब देखा खूब तो आखिरको दलाल न कोई ब्योपारी है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई फूलके बैठे मसनदपर कोई रोये अपनी दौलतको
कोई बोले अपना मुँहसे लो और मेरा हो सो मुँहको दो

कोई लड़ता है कोई मरता है कोई भगड़े हकपर नाहकको
जब देखा खूब तो आखिरको कुछ लेना एक न देना दो
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

रम्माल नज्मी आमिल है और फाजिल मुल्ला स्याना है
कोई आकिल कामिल है दाना कोइ मस्त पड़ा दीवाना है
तावीज फ़लीता क़ाल फ़सू और जादू मन्तर लाना है
जब देखा खूब तो आखिरको सब हीला मक़्र बहाना है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई लोटे कूचे गलियोंमें तैय्यार किसीका डेरा है
कोई बाग़ कुआँ बनवाता है और घर किसीने घेरा है
नित क़ज़िये भगड़े रहते हैं ये मेरा है ये तेरा है
जब देखा खूब तो आखिरको न तेरा है न मेरा है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कहीं धूम मची है क़र्जोंकी कहीं क़र्जोंका दुःख खेना है
कोई हीरा पन्ना परखावे और बेचे कोई चबेना है
हर रोज़ तक्राज़ा धरना है दुःख देना पैसा लेना है
जब देखा खूब तो आखिरको कुछ लेना है न देना है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई बनिया है कोई तेली है कोई बेचे पान तंबोली है
कोई सरपर रखकर खींचे है कोई बांधे फिरता भोली है

कहीं गोन ढली है नाजोंकी कहीं थैला थैली खोली है
जब देखा खूब तो आखिरको इकदमकी बोला ठोली है
गुल शोर बबूला आग, हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई टोपी टोप बनाता है कोई बांध फिरा अम्मामा^१ है
कोई साफ बरहना फिरता है ना कपड़ा ना पाजामा है
किमल्लाब गज्जी और गाढेका नित किस्सा है हंगामा है
जब देखा खूब तो आखिरको ना पगड़ी है ना जामा है
गुल शोर बबूला आग, हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई बाल बढ़ाये फिरता है कोई सरको घोंट मुंडाता है
कोई कपड़े रंगे पहने है कोई नंगे मुंगे आता है
कोई पूजा कथा बखाने है कोई छापा तिलक लगाता है
जब देखा खूब तो आखिरको सब छोड़ अकेला जाता है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कोई रोता है कोई हंसता है कोई नाचे है कोई गाता है
कोई छीने झपके ले भागे कोई धौस धड़क्का लाता है
कोई माल इकट्ठा करता है कोई कुंजी कुपल लगाता है
जब देखा खूब तो आखिरको सब झगड़ा रगड़ा जाता है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

^१पगड़ी ।

कोई बेचे भंग शराब अफ़्रियूं कहीं दूध दहीकी फेरी है
कोई पल्ला सरपर लाता है कोई लादे बैल मकेरी है
कोई भगड़े अपने जागह पर ये मेरी है ये तेरी है
जब देखा खूब तो आखिरको ना तेरी है ना मेरी है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी ठट्टी है

कहीं बल्ली ट्योकी थूनी है कहीं घास करपकी पोली है
कहीं छलनी छाज पटारे है कहीं चूल्हा चक्की जोली है
तरकारी बैंगन साग बड़ा गुड़ गांडा गाजर मूली है
जब देखा खूब तो आखिरको सब छू ये देखत भोली है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ मिट्टी पानी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी ठट्टी है

कहीं बान अटेरी टाट कड़ी कहीं मरंख चमरख^१ तकला है
कहीं रोक रुपय्या खुरदा है कहीं कौड़ी पैसा धेला है
कहीं ढांच पलंगका बिकता है कहीं छोंका रस्सी रस्सा है
जब देखा खूब तो आखिरको ना पीढ़ी खाट न चर्खा है
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी ठट्टी है

कोई शिकरा बाज उड़ाता है कोई रखे हाथ पं तितली है
शाबाश कोई ले बैठा है और दौड़ किसीने दुतली है
है तार किसीके हाथोंमें और नाचती फिरती पुतली है
जब देखा खूब तो आखिरको ना रेशम सूत न सुतली है

^१वह चमड़े या मूंभकी पतली-सी चीज़ जिसमें तकला फिरता है ।

गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

अब किसका रंग बुरा कहिये और किसका रूप भला कहिये
इक दमकी पैठ लगी है ये अंबाहे मज्जा चर्चा कहिये
ये सैर तमाशे देख 'नज़ीर' अब जा कहिये बेजा कहिये
कुछ बात नहीं बन आती है चुपचाप पहेली क्या कहिये
गुल शोर बबूला आग हवा और कीचड़ पानी मिट्टी है
हम देख चुके इस दुनियाको ये धोकेकी-सी टट्टी है

कलजुग

दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिस यांकी सात ले
नेकीका बदला नेक है बदसे बदीकी बात ले
मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले
आराम दे आराम ले दुःख दर्द दे आफ़ात ले
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

कांटा किसीके मत लगा गो मिस्ले गुल फूला है तू
वो तेरे हक़मे तीर है किस बात पै फूला है तू
मत आगमे डाल और को फिर घासका पूला है तू
सुन रख ये नुक्ता बेख़बर किस बातपर फूला है तू
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

शोख़ी शरारत मक़-ओ-फ़न इन सबका लेखा है यहां
जो जो दिखाया औरको वो आप भी देखा है यां
खोटी खरी जो कुछ कि है तिसका परेखा है यहां
जो जो पड़ा तुलता है दिल तिल तिलका लेखा है यहां
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

जो औरकी बस्ती रखे उसका भी बस्ता है पुरा
जो औरके मारे छुरी उसके भी लगता है छुरा

जो औरकी तोड़े धुरी उसका भी टूटे है धुरा
जो औरकी चेते बदी उसका भी होता है बुरा
कलजुग नहीं कर जुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

जो और को फल देवेगा वो भी सदा फल पावेगा
गेहूंसे गेहूं जौसे जौ चावलसे चावल पावेगा
जो आज देवेगा यहां वैसा वो वां कल पावेगा
कल देवेगा कल पावेगा कल देगा जो कल पावेगा
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिस यां तय्यार है
आराममे आराम है आज़ारमे आज़ार है
दुनिया न जान इसको मियां दरिया कि ये मंजधार है
औरोंका बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

तू औरकी तारीफ़ कर तुझको सनाख़बानी^१ मिले
कर मुश्किल आसां औरकी तुझको भी आसानी मिले
तू औरको मेहमान कर तुझको भी मेहमानी मिले
रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

जो गुल खिलावे औरका उसका ही गुल खिलता भी है
जो औरका कीले है मुंह उसका ही मुंह किलता भी है
जो औरका छीले जिगर उसका जिगर छिलता भी है
जो औरको देवे कपट^१ उसको कपट मिलता भी है
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

कर चुक जो कूछ करना हो यां ये दम तो कोई आन है
नुकसानमे नुक़सान है एहसानमे एहसान है
तुहमतमे यां तुहमत लगे तूफ़ानमे तूफ़ान है
रहमानको रहमान है शैतान को शैतान है
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

यां जह्म दे तो जह्म ले शक्करमे शक्कर देख ले
नेकीको नेकीका मज़ा मूज़ीको टक्कर देख ले
मोती जो दे मोती मिले पत्थरमे पत्थर देख ले
गर तुभको ये बावर^२ नहीं तो तू भी कर कर देख ले
कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

अपने नफ़ाके वास्ते मत औरका नुक़सान कर
तेरा भी नुक़सां होवेगा इस बातपर तू ध्यान कर
खाना जो तू खा देखकर पानी पिये तू छान कर
यां पांवको रख फूंककर और खौफ़से गुज़रान कर

कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
 क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले
 गफ़लतकी ये जागह नहीं यां साहबे-इदराक^१ रह
 दिलशाद रख दिलशाद रह गमनाक रख गमनाक रह
 हर हालमे तू भी 'नज़ीर' अब हर क़दमकी खाक रह
 ये वो मकां है ओ मियां याँ पाक रह बेबाक रह
 कलजुग नहीं करजुग है ये यां दिनको दे और रात ले
 क्या खूब सौदा नक़द है इस हात दे उस हात ले

पैसा

पैसे हीका अमीरके दिलमे खयाल है
पैसे हीका फ़कीर भी करता सवाल है
पैसा ही फ़ौज पैसा ही जाह-ओ-जलाल^१ है
पैसे ही का तमाम ये दंग-ओ-दवाल^२ है
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चख़्की माल है

पैसेके ढेर होनेसे सब सेठ साठ है
पैसेके जोर-ओ-शोर है पैसेके ठाठ है
पैसेके कोठे कोठियां छः सात आठ है
पैसा न हो तो पैसेके फिर साठ साठ है
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चख़्की माल है

पैसा न हो तो हाथी भी दमड़ीका दस्ता^३ है
पैसेसे ऊंट लाख अशफ़ीको सस्ता है
हर वक़्त जिसके सामने पैसा बरसता है
लावे है ऊंटको कोई हाथीको कसता है
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चख़्की माल है

पैसा जो होवे पास तो कुन्दनके हैं डले
 पैसे बगैर मिट्टीके उससे डले भले
 पैसेसे चुन्नी लाखकी इक लाल दे के ले
 पैसा न हो तो कौड़ीको मोती कोई न ले
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

पैसेसे चेरे ताशके तुरें सुनहरे हैं
 सैर-ओ-तरबके^१ ऐश-ओ-मज्जे गहरे गहरे हैं
 हर लहजा माहे ईद नुमा शकल-ओ-चेहरे हैं
 हर दम बसंत होली दिवाली दसहरे हैं
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

पैसा न हो तो बाग कुएं फिर कहांसे हों
 खानेको पूरी और पूवे फिर कहांसे हों
 ऐश-ओ-तरबके नक्की दवे फिर कहांसे हों
 हलवा कचौरी मालपूवे फिर कहांसे हों
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

पैसा जो हो तो देवकी गर्दनको बांध लाय
 पैसा न हो तो मकड़ीके जालेसे खौफ़ खाय
 पैसेसे लाला भइय्याजी और चौधरी कहाय
 बिन पैसे साहूकार भी इक चोर-सा दिखाय

पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

चेहरा भी लाल दर्ब^१के दर्पनके बीच है
गर दर्ब है तो सैर भी गुलशनके बीच है
पूरी भगत भी पैसेके मुमिरनके बीच है
दर्शन भी खूब रूपका सब धनके बीच है
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

जोड़े चमन बहार है पैसेके वास्ते
गहने मुरस्साकार^२ है पैसेके वास्ते
खुशबूके फूल हार है पैसेके वास्ते
सब नक़्श और निगार है पैसेके वास्ते
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

रौनक बहार होती है पैसेसे सब हसूल
और जो न होवे चेहरे पै उड़ती है खाक धूल
पैसा ही सारी चीज़ है पैसा ही मर्द मूल
बे पैसे आदमी है जहां बीच ना कबूल
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

पैसेसे मोटी चूनीका इज्ज-ओ-वकार है
पैसेसे एतबार है औ अफ़्तखार^३ है

पैसेमे गर गमी हो तो वो भी बहार है
 पैसे बगैर शादी भी होवे तो ख़्बार है
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चख़्खेकी माल है

पैसा ही जस दिखाता है इन्सांकी बातको
 पैसा ही ज़ेब देता है ब्याह और बरातको
 भाई सगा भी आनके पूछे न बातको
 बिन पैसे यार दूल्हा बने आधी रातको
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चख़्खेकी माल है

पैसेने जिस मक़ामे बिछाया है अपना जाल
 फंसते हैं उस मक़ामे फरिश्तोंके पर-ओ-बाल
 पैसेके आगे क्या है ये महबूब खुशजमाल^१
 पैसा परीको लाये परिस्तानसे निकाल
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चरख़ेकी माल है

तेग़-ओ-सिपर उठाते हैं पैसेके वास्ते
 तीर-ओ-सनां लगाते हैं पैसेके वास्ते
 मंदामें ज़ख़्म खाते हैं पैसेके वास्ते
 यां तक कि सर कटाते हैं पैसेके वास्ते
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चख़्खेकी माल है

आलममे खैर^१ करते हैं पैसेके जोरसे
 बुनियादे-दौर करते हैं पैसेके जोरसे
 दोज्जखमे फ़ैर करते हैं पैसेके जोरसे
 जन्नतकी सैर करते हैं पैसेके जोरसे
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

दुनियामे दीन दार कहाना भी नाम है
 पैसा जहांके बीच वो क़ायम मुकाम है
 पैसा ही जिस्म-ओ-जान है पैसा ही काम है
 पैसे ही का 'नज़ीर' ये आदम गुलाम है
 पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
 पैसा न हो तो आदमी चर्खेकी माल है

मुफ़लिसी

जब आदमीके हाल पै आती है मुफ़लिसी
किस किस तरहसे उसको सताती है मुफ़लिसी
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफ़लिसी
भूका तमाम रात सुलाती है मुफ़लिसी
ये दुःख वो जाने जिस पै कि आती है मुफ़लिसी

कहिये तो अब हकीमकी सबसे बड़ी है शां
ताज़ीम जिसकी करते हैं नवाब और ख़ां
मुफ़लिस हुए तो हज़रते-लुकमान क्या है यां
ईसा भी हो तो कोई नहीं पूछता मियां
हिकमत हकीमकी भी डुबाती है मुफ़लिसी

जो अहले फ़ज़ल आलिम-ओ-फ़ाज़िल कहाते हैं
मुफ़लिस हुए तो कलमा तलक भूल जाते हैं
पूछे कोई अलिफ़ तो उसे बे बताते हैं
वो जो ग़रीब गुबकि लड़के पढ़ाते हैं
इनकी तो उम्रभर नहीं जाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस करे जो आनके महफ़िलके बीच हाल^१
सब जानें रोटियोंका ये डाला है इसने जाल

^१ गाना, कव्वालीकी महफिलोंमें किसी पक्ति विशेषको सुनकर मस्तीमें झूमने लगना

गर गिर पड़े तो कोई न लेवे उसे सँभाल
 मुफ़लिसमे होवे लाख अगर इल्म और कमाल
 सब खाक बीच आके मिलाती है मुफ़लिसी
 जब रोटियोंके बटनेका आकर पड़े शुमार
 मुफ़लिसको देवे एक तवंगर^१को चार-चार
 गर और मांगे तो उसे भिड़के है बार बार
 इस मुफ़लिसीका आह, बयां क्या करूं मैं यार
 मुफ़लिसको इस जगह भी चबाती मुफ़लिसी
 मुफ़लिसकी कुछ नज़ीर नहीं रहती आन पर
 देता है अपनी जान वो एक-एक नान पर
 हर आन टूट पड़ता है रोटीके ख्वान^२ पर
 जिस तरह कुत्ते लड़ते हैं इक इस्तख्वान^३ पर
 वैसा ही मुफ़लिसीकी लड़ाती है मुफ़लिसी
 करता नहीं हयासे जो कोई वो काम आह
 मुफ़लिस करे है उसके तई इन्सराम^४ आह
 समझे न कुछ हलाल न जाने हराम आह
 कहते हैं जिसको शर्म-ओ-हया नंग-ओ-नाम आह
 वो सब हया व शर्म उड़ाती है मुफ़लिसी
 ये मुफ़लिसी वो शै है कि जिस घरमे भर गई
 फिर घरमे जितने सत थे उसी घरके दर गई
 ज़न^५ बच्चे रोते हैं गोया नानी गुज़र गई
 हमसाया^६ पूछते हैं कि क्या दादी मर गई
 बिन मुर्दे घरमे शोर मचाती है मुफ़लिसी

^१ पैसेवाला ^२थाली

^३हड्डी

^४प्रबध

^५स्त्री

^६पड़ोसी

लाज़िम है गर ग़मीमे कोई शोरगुल मचाय
मुफ़लिस बग़ैर ग़मके ही करता है हाय हाय
मर जावे गर कोई तो कहांसे उसे उठाय
इस मुफ़लिसीकी ख़वारियां^१ क्या क्या कहें मैं हाय
मुर्देको बेकफ़नके गड़ाती है मुफ़लिसी

क्या क्या मैं मुफ़लिसीकी कहूं स्वागी फकड़ियां
भाड़ी बग़ैर घरमे बिखरती है भकड़ियां
कोनेमे जाले लिपटे हैं, छप्परमे मकड़ियां
पैदा न होवे जिनके जलानेको लकड़ियां
दरियामे उनके मुर्दे बहाती है मुफ़लिसी

बीबीकी नथ न लड़कोंके हाथों कड़े रहे
कपड़े मियांके बनियेके घरमे पड़े रहे
जब कड़ियां बिक गई तो खंडरमे पड़े रहे
जंजीर, ने किवाड़ न पत्थर गड़े रहे
आख़िरको ईंट ईंट खुदाती है मुफ़लिसी

नक्काशपर भी जोर जब आ मुफ़लिसी करे
सब रंग दममे करदे मुसव्विरके किरकिरे
सूरत ही उसकी देखके मुंह खिंच रहे परे
तस्वीर और नक्शमे क्या रंग वो भरे
उसके तो मुंहका रंग उड़ाती है मुफ़लिसी

जब खूबरू पे आनके पड़ता है दिन सियाह
फिरता है बोसे देता है हर इकको ख़वामखाह

^१ ज़िल्लतें

हरगिज़ किसीके दिलको नहीं होती इसकी चाह
गर हुस्न हो हज़ार रूपैका तो उसको आह
क्या कौड़ियोंके मोल बिकाती है मुफ़लिसी

उस खूबसूरत को कौन दे अब दाम और दिरम
जो कौड़ी कौड़ी बोसेका राज़ी हो दमनदम
टोपी पुरानी दो तो वो जाने कुलाहे-जम
क्योंकर न जीको उस चमने-हुस्नके हो गम
जिसकी बहार मुफ़्त लुटाती है मुफ़लिसी

आशिकके हालपर भी जब आ मुफ़लिसी पड़े
माशूक अपने पास न दे उसको बैठने
आवे जो रातको तो निकाले वही उसे
इस डरसे यानी रातको धमना कही न दे
तुहमत ये आशिकको लगाती है मुफ़लिसी

कैसे ही धूमधामकी रंडी हो खुश जमाल
जब मुफ़लिसीका आन पड़े सर पे उसके जाल
देते हैं उसके नाचको ठट्ठेके बीच डाल
नाचे हैं वो तो फ़र्शके ऊपर क्रदम संभाल
और उसको उंगलियो पे नचाती है मुफ़लिसी

उसका तो दिल ठिकाने नहीं भाव क्या बताये
जब हो फटा दुपट्टा तो काहेसे मुंह छिपाये
ले शामसे वो सुब्ह तलक गोकि नाचे गाये
औरोंको आठ सात तो वो दो टके ही पाये
इस लाजसे उसे भी लजाती है मुफ़लिसी

जब मुफ़लिसीसे होवे कलावंत^१का दिल उदास
 फिरता है ले तँबूरेको हर घरके आसपास
 इक पाव सेर आटेकी दिलमे लगाके आस
 गौरीका वक्त होवे तो गाता है वो भभास
 यां तक हवास उसके उड़ाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस जो ब्याह बेटीका करता है बोल बोल
 पैसा कहां जो जाके वो लावे जहेज मोल
 जोरुका वो गला है कि फूटा हो जैसे ढोल
 घरकी हलाल खोरी^२ तलक करती है ठठोल
 हैबत^३ तमाम उसकी उठाती है मुफ़लिसी

बेटेका ब्याह हो तो न ब्याही न साती है
 न रोशनी न बाजेकी आवाज आती है
 मां पीछे एक मैली चदर ओढ़े जाती है
 बेटा बना है दूल्हा, तो बाबा बराती है
 मुफ़लिसकी ये बरात चढ़ाती है मुफ़लिसी

गर ब्याह कर चला है सहरको तो ये बला
 शोहदा, जनाना, हीजड़ा, और भाट मँडचरा
 खींचे हुए उसे चले जाते हैं जा बजा
 वो आगे आगे लड़ता हुआ जाता है चला
 और पीछे थपड़ियोंको बजाती है मुफ़लिसी

दरवाजेपर जनाने बजाते हैं तालियाँ
 और घरमे बैठी डोमनी देती है गालियाँ

मालिन गलेकी हार हो दौड़ी ले डालियाँ
सक्का खड़ा सुनाता है बाते रज्जालियाँ^१
ये खवारी ये खराबी दिखाती है मुफ़लिसी
कोई “सूम बेहया” कोई बोला “निखट्टू है”
बेटीने जाना बाप तो मेरा निखट्टू है
बेटे पुकारते हैं कि “बाबा निखट्टू है”
बीबी ये दिलमे कहती है “अच्छा निखट्टू है”
आखिर निखट्टू नाम धराती है मुफ़लिसी
मुफ़लिसका दर्द दिलमे कोई ठानता नहीं
मुफ़लिसकी बातको भी कोई मानता नहीं
ज्ञात और हसब नसबको कोई जानता नहीं
सूरत भी उसकी फिर कोई पहचानता नहीं
याँ तक नज़रसे उसको गिराती है मुफ़लिसी
जिस वक़्त मुफ़लिसीसे ये आकर हुआ तबाह
फिर कोई उसके हाल पं करता नहीं निगाह
दालीदरी^२ कहे कोई ठहरावे रूसियाह
जो बाते उम्र भर न सुनी होवें उसने, आह
वो बाते उसको आके सुनाती है मुफ़लिसी
चूल्हा तवा न पानीके मटकेमे आबी^३ है
पोनेको कुछ न खानेको और ने रकाबी है
मुफ़लिसके साथ सबके तई बेहिजाबी है
मुफ़लिसकी जोरू सच है कि हाँ सबकी भाबी है
इज्जत सब उसके दिलकी गंवाती है मुफ़लिसी

^१नीच वाते

^२दरिद्रता

^३आब ही = पानी है।

कैसा ही आदमी हो पर अफ़लासके तुफ़ैल
कोई गधा कहे उसे ठहरावे कोई बैल
कपड़े फटे तमाम बड़े बाल फैल-फैल
मूह खुश्क दाँत ज़र्द बदनपर जमा है मैल
सब शकल क़ैदियोंकी बनाती है मुफ़लिसी

हर आन दोस्तोंकी मुहब्बत घटाती है
जो आशना है उनकी तो उलफ़त घटाती है
अपनेकी मेह, ग़ैरकी चाहत घटाती है
शर्म-ओ-हया व इज्जत-ओ-हुर्मत घटाती है
हाँ नाखुन और बाल बढ़ाती है मुफ़लिसी

जब मुफ़लिसी हुई तो शराफ़त कहाँ रही
वो कद्र जातकी वो नजाबत^१ कहाँ रही
कपड़े फटे तो लोगोंमें इज्जत कहाँ रही
ताज़ीम और तवाज़ाकी बाबत^२ कहाँ रही
मजलिसकी जूतियोंपर बिठाती है मुफ़लिसी

मुफ़लिस किसीका लड़का जो ले प्यारसे उठा
बाप उसका देखे हाथका और पाँवका कड़ा
कहता है कोई, “जती न लेवे कहीं चुरा”
नटखट उचक्का चोर, दगाबाज़ गठकटा
सौ-सौ तरहके ऐब लगाती है मुफ़लिसी

रखती नहीं किसीकी ये ग़ैरतकी आनको
सब ख़ाकमें मिलाती है हुर्मतकी शानको

^१ कुलीनता ^२ आवश्यकता

सौ मेहनतोंमें उसकी खपाती है जानको
 चोरी पै आके डाले है मुफ़लिसके ध्यानको
 आख़िर निदान भीक मँगाती है मुफ़लिसी
 दुनियामे लेके शाहसे, ए यारो ताफ़्फ़ीर
 खालिक्' न मुफ़लिसीमे किसीको करे असोर'^१
 अशराफ़को बनाती है इक आनमे फ़कीर
 क्या-क्या मैं मुफ़लिसीकी खराबी कहूँ 'नज़ीर'^२
 वो जाने जिसके दिलको जलाती है मुफ़लिसी

^१भगवान, ^२अन्दी फँसाये

आटे दालका भाव (१)

क्या कहूँ यारो मैं नक्शा खल्कके अहवालका
अह्ल-ओ-दौलतका चलन या मुफलिस-ओ-कंगालका
ये बयाँ तो वाकई है हर किसीके हालका
क्या तवंगर^१ क्या गनी^२ क्या पीर और क्या बालका
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटे-दालका
गर न आटे-दालका अंदेशा होता सदेराह^३
तो न फिरते मुल्कगीरीको वजीर-ओ-बादशाह
साथ आटे-दालके है हशमत-ओ-फ़ौज-ओ-सिपाह
जाबजा गढ़ कोटसे लड़ते हुए, फिरते है आह
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटे-दालका
गर न आटे-दालका होता कदम याँ दरम्याँ
मुंशी-ओ-मीर-ओ-वजीर-ओ-बख्शी-ओ-नव्वाब व खां
जागते दरबारमे क्यों आधी-आधी रात बाँ
क्या अजब नक्शा पड़ा है आह, क्या कहिये मियाँ
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटे-दालका
गर न आटे-दालका, याँ खटका होता बार-बार
दौड़ते काहेको फिरते धूपमे प्यादे सवार
और जितने है जहाँमे पेशावर और पेशादार
एक भी जीपर नहीं है इस सिवा सब-ओ-करार
सबके दिलको फ़िक्र है दिनरात आटे-दालका

^१ खाते पीते आदमी ^२ उदार, दानी ^३ राहकी रुकावट

अपने आलममे ये आटा-दाल भी क्या फ़र्द है
हुस्नकी आन-ओ-अदा सब इसके आगे गर्द है
आशिकोंका भी इसीके इश्कसे मुँह जर्द है
ता कुजा कहिए कि क्या वो मर्द क्या नामर्द है
सबके दिलको फ़िक्क है दिनरात आटे-दालका
दिलबरोँकी चश्म, अबरू जुल्फ़ क्या खत खाल है
नाजुकी शोखी अदाएँ हुस्न लालो लाल है
क्या कमर पतली है काफ़िर क्या ठुमकती चाल है
ग़ौर कर देखा है जो कुछ है सो आटा दाल है
सबके दिलको फ़िक्क है दिनरात आटे-दालका
अब जिन्हें अल्लाहने याँ कर दिया कार्मिल फ़कीर
वो तो बेपरवा सखी दाता है आपी दिलपज़ीर
और जितने हैं वो सब है दाल आटेके असीर
उन ग़रीबोंकी भी अब ये शक्ल हैगी ए 'नज़ीर'
सबके दिलको फ़िक्क है दिनरात आटे-दालका

आटे दालका भाव (२)

आटेके वास्ते हैं हविस मुल्क-ओ-मालकी
आटा जो पालकी है तो है दाल नालकी
आटे ही दालसे है दुरस्ती ये हालकी
इससे ही सबकी खूबी जो है हाल कालकी
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी
इस आटे दाल हीका जो आलममे है जहूर'
इससे ही मुंहप नूर है और पेटमे सखूर
इससे ही आके चढ़ता है चेहरेपै सबके नूर
शाह-ओ-गदा अमीर इसीके है सब मजूर
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी
कुमरीने क्या हुआ जो कहा "हक्के-सरहू"
और फाहता भी बैठके कहती है "कहकहू"
वो खेल खेलो जिससे हो तुम जगमे सुखरू
सुनते हो ए अजीजो इसीसे है आबरू
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी
मंनाके पालनेकी अगर दिलमे मेल है
सच पूछिये तो ये भी खराबीकी ज़ेल है

सब इश्कबाजी रोजीके होती तुफ़ैल है
रोजी न हो तो मैना भी फिर क्या चुड़ैल है
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी

आटा है जिमका नाम वही खास नूर है
और दाल भी परी है कोई याकि हर है
इसका भी खेल खेलना सबको जरूर है
समझे जो इस सुखनको वो साहब शऊर' है
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी

बुलबुलके पालनेमे कहो क्या है फायदा
और जो बया भी पाला तो फिर हाथ क्या लगा
कोइ दममे पेट माँगगा कुछ मुभको ला खिला
फिर दाल और आटा ही काम आता है वला
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी

छे पैसोंके जो इश्कमे दिलको लगाओगे
तो पेट भरके खाओगे कपड़े बनाओगे
तूतीको पाल करके 'हक़ अल्लाह' पढ़ाओगे
नाहक़को सर खपाओगे कौड़ी न पाओगे
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दालकी

जिन पास चार पैसे वही है यहाँ अमीर
और जिनके पास कुछ नहीं वो है बड़े फ़कीर

और जितने पेशावर हैं यहाँ खुर्द और कबीर
रोटीका सिलसिला है बुरा क्या कहूँ 'नज़ीर'
सब छोड़ो बात तूति-ओ-पिदड़ी व लालकी
यारो कुछ अपनी फ़िक्क करो आटे दालकी

रोटियाँ

जब आदमीके पेटमे आती है रोटियाँ
फूली नहीं बदनमे समाती है रोटियाँ
आँखे परी रुखोंसे लड़ाती है रोटियाँ
सीने उपर भी हाथ चलाती है रोटियाँ
जितने मजे हैं सब ये दिखाती है रोटियाँ
रोटीसे जिसका नाक तलक पेट है भरा
करता फिरे है क्या वो उछल कूद जाबजा
दीवार फाँदकर कोई कोठा उछल गया
ठट्ठा हँसी शराब सनम साकी उस सिवा
सौ-सौ तरहकी धूम मचाती है रोटियाँ
जिस जा पे हाँडी चूल्हा तवा और तनूर^१ है
खालिककी कुदरतों का उसी जा जहर है
चूल्हेके आगे आँच जो जलती हज़ूर है
जितने है नूर सबमे यही खास नूर है
इस नूरके सबब नज़र आती है रोटियाँ
आवे तवे तनूरका जिस जा ज़बॉ पे नाम
या चक्की चूल्हेके जहाँ गुलज़ार हों तमाम
वाँ सर भुकाके कीजिये डंडौत^२ और सलाम
इस वास्ते कि खास ये रोटीके है मुक़ाम
पहले इन्हीं मकानोंमे आती है रोटियाँ

^१ तनूर

^२ डंडवत

इन रोटियोंके नूरसे सब दिल है पूर-पूर
 आटा नहीं है छलनीसे छन-छन गिरे है नूर
 पेड़ा हर एक उसका है बफ़ी व मोतीचूर
 हरगिज किसी तरह न बुझे पेटका तनूर
 इस आगको मगर ये बुझाती है रोटियाँ
 पूछा किसीने ये किसी कामिल फ़कीरसे
 ये मेह-ओ-माह हक़ने बनाये है काहेके
 वो सुनके बोला “बाबा खुदा तुझको ख़ैर दे
 हम तो न चाँद समझे न सूरज है जानते
 बाबा हमे तो ये नज़र आती है रोटियाँ”
 फिर पूछा उसने कहिए ये है दिलका नूर क्या
 इसके मुशाहदेमे^१ है खुलता ज़हर क्या
 वो बोला सुनके “तेरा गया है शऊर क्या
 कशफ़ुलक़लूब^२ और ये कशफ़ुलक़बूर^३ क्या
 जितने है कशफ़ सब ये दिखाती है रोटियाँ”
 रोटी जब आई पेटमे सौक्रन्द^४ घुल गये
 गुलज़ार फूले आँखोंमे और ऐश तुल गये
 दो तर निवाले^५ पेटमे जब आके ढल गये
 चौदह तबक़के^६ जितने थे सब भेद खुल गये
 ये कशफ़ ये कमाल दिखाती है रोटियाँ
 रोटी न पेटमे हो तो फिर कुछ जतन न हो
 मेलेकी सैर ख़्वाहिशे बाग़-ओ-चमन न हो

^१ देखनेमे ^२ हृदयके भेद ^३ क़ब्रके भेद ^४ मिठाई, मयुरता
^५ कौर, ग्रास ^६ सात परत आकाशकी और सात परत पृथ्वीकी .

भूके गरीब दिलकी खुदासे लगन न हो
 सच है कहा किसीने कि “भूके भजन न हो”
 अल्लाहकी भी याद दिलाती है रोटियाँ
 अब आगे जिसके माल पूरे भरके थाल हैं
 पूरे भगत उन्हे कहो साहबके लाल हैं
 और जिनके आगे रोगनी और शीर माल हैं
 आरिफ़^१ वही है और वही साहब कमाल हैं
 पक्की पकाई अब जिन्हे आती है रोटियाँ
 कपड़े किसीके लाल हैं रोटिके वास्ते
 लंबे किसी के बाल हैं रोटिके वास्ते
 बांधे कोई रूमाल है रोटिके वास्ते
 सब कशफ और कमाल है रोटिके वास्ते
 जितने है रूप सब ये दिखाती है रोटियाँ
 रोटिसे नाचे प्यादा क़वायद दिखा-दिखा
 असवार नाचे घोड़ेको कावा लगा-लगा
 घुंगरूको बांधे पैक भी फिरता है नाचता
 और इस सिवा जो ग़ौरसे देखा तो जाबजा
 सौ-सौ तरहके नाच दिखाती है रोटियाँ
 रोटिके नाच तो हैं सभी खलकमे पड़े
 कुछ भांड भगीते ये नहीं फिरते नाचते
 ये रंडियाँ जो नाचे हैं घूँघटको मुंह पे ले
 घूँघट न जानो दोस्तो तुम जीनहार^२ उसे
 इस पर्देमें ये अपने कमाती है रोटियाँ

^१ ज्ञानी

^२ कभी भी, कदापि

अशराफ़ोंने जो अपनी ये ज्ञाते छिपाई हैं
 सच पूछिये तो अपनी ये शाने बढ़ाई हैं
 कहिये उन्हींकी रोटियाँ किस-किसने खाई हैं
 अशराफ़ सबमें कहिये तो अब नानबाई हैं
 जिनकी दुकाँसे हर कहीं जाती हैं रोटियाँ
 दुनियामे अब बदी न कहीं और निकोई^१ हैं
 या दुश्मनी व दोस्ती या तुन्दखूई हैं
 कोई किसीका और किसीका न कोई हैं
 सब कोई हैं उसीका कि जिस हाथ डोई हैं
 नौकर नफर गुलाम बनाती हैं रोटियाँ
 रोटिका अब अज़लसे^२ हमारा तो हैं खमीर
 रूखी ही रोटि हकमे हमारे हैं शहद-ओ-शीर^३
 या पतली होवे मोटी खमीरी हो या फ़तीर^४
 गेहूँ जुवार बाजरेकी जैसी हो 'नज़ीर'
 हमको तो सब तरहकी खुश आती हैं रोटियाँ

^१ नेकी^२ आदिकालसे^३ मधु और द्रघ^४ चपाती

चपाती

जब मिली रोटी हमे, सब नूरे-हक्क^१ रोशन हुए
रात दिन शम्स-ओ-कमर^२ शाम-ओ-शफ़क़^३ रोशन हुए
ज़िन्दगीके थे जो कुछ नज़्म-ओ-नसक़^४ रोशन हुए
अपने बेगानोंके लाज़िम थे जो हक्क रोशन हुए
दो चपातीके वरक़^५मे सब वरक़ रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक^६ रोशन हुए

वो जो अब खाते हैं बाकर ख़ानी कुलचा शीर माल
हैं वो ख़ामुलख़ास दरगाहे-करीमे-ज़ुलजलाल^७
ये जो रोटी दालका रखते हैं हम गरदनमे जाल
जब मिली रोटी वहीं हम हो गये साहब-कमाल^८
दो चपातीके वरक़मे सब वरक़ रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक़ रोशन हुए

वो तो अब मर्दे-ख़ुदा हैं कूत^९ जिनका नूर है
वो मलायक़ हैं, वहाँ रोटीका क्या मज़कूर^{१०} है
दिल हमारा तो फ़क़त रोटीका अब रज़ूर^{११} है
हम शिकम-बन्दोंका^{१२} यारो बस यही दस्तूर है

^१ सत्य के प्रकाश ^२ मूरज और चाँद ^३ मध्या और ऊषा ^४ व्यवस्था
^५ पन्ने ^६ सात परत आकाशकी और सात परत पृथ्वीकी ^७ ईश्वर
^८ कमालवाले ^९ आहार, ख़ोराक ^{१०} जिक़ ^{११} रज करनेवाला ^{१२} पेटके पुजारी

दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

पेटमे रोटी पड़ी जब तक तो यारो खैर है
गर न हो फिर गैर क्या अपने ही जीसे बैर है
खाते ही दो तर निवाले आसमाँपर सैर है
आसमाँ क्या फिर तो खासे ला मकाँकी^१ सैर है
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

जब तलक रोटीका टुकड़ा हो न दस्तरख्वानपर
न नमाजोमे लगे दिल और न कुछ कुरआनपर
रात दिन रोटी चढ़ी रहती है सबके ध्यानपर
क्या खुदाका नूर बरसे है पड़ा हर नानपर
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

गर न हों दो रोटियाँ और एक प्याला दालका
खेल फिर बिगड़ा फिरे याँ हालका^२ और कालका^३
गर न हो रोटी तो किसका पीर^४ किसका बालका^५
वस्फ़ किस मुँहसे करूँ मैं नानके अहवालका
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

पेटमें रोटी न थी जब तक दो आलम था सियाह
जब पड़ी रोटी तो पहुँची अर्शके ऊपर निगाह

^१ शून्य ^२ मनोदशा ^३ बातचीत ^४ बूढ़ा ^५ बालक

खुल गये पर्दे थे जितने माहीसे ले ताब-माह
बया करामत है फ़कत रोटीमे यारो बाह बाह
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

यू चमकता है पड़ा हर आन गिर्दा नानका
जान आती है लियेसे नाम दस्तरखानका
चाँदका टुकड़ा कहें मैं या कि टुकड़ा नानका
रूह नाचे है बदनमे नाम सुनकर ख़वान^१का
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

हुस्न जितने है जहाँमे सब फिरे है ख़वानमे
खूबियाँ जितनी है आकर सब भरी है नानमे
आशिक-ओ-माशूक भी टिकियाके है दरम्यानमे
फँस रहे है सबके दिल रोटीके दस्तरख़वानमे
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

जो मुरीद अपना किसी दरवेशको करता है पीर^२
यानी कुछ देखे तजल्लोकी^३ करामत दिलपज़ीर
खाते ही दो रोटियाँ दिल हो गया बदरे-मुनीर^४
कोई रोटीसा नहीं अब पीर-ओ-मुरशिद ए 'नज़ीर'
दो चपातीके वरकमे सब वरक रोशन हुए
इक रकाबीमे हमे चौदह तबक रोशन हुए

^१ थालमे ^२ गुरू ^३ ज्ञानकी ज्योति ^४ चमकता चाँद

आदमी नामा

दुनियामे पादशह है सो है वह भी आदमी
और मुफ़लिस-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी
ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी
निअमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी
टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी

अब्दाल कुम्ब ग़ौस' वली आदमी हुए
मुनकिर' भी आदमी हुए और कुफ़के' भरे
क्या क्या करिश्मे कश्फ़-ओ-करामातके लिये
हत्ता' कि अपने जोह्द'-ओ-रियाज़तके' जोरसे
ख़ालिकसे जा मिला है सो है वो भी आदमी

फ़िरअौनने' किया था जो दावा खुदाईका
शदाद' भी बहिश्त बनाकर हुआ खुदा
नमरूद' भी खुदा ही कहाता था बरमला
ये बात है समझनेकी आगे कहूँ मैं क्या
याँ तक जो हो चुका है सो है वो भी आदमी

१ बड़े बड़े वली, पहुँचे हुए फकीर २ नास्तिक ३ नास्तिकतासे भरे
४ यहाँ तक ५ पूजा पाठ ६ तपस्या

७, ८, ९ इन तीनोंने अपनेको ईश्वर कहलाना चाहा परन्तु बड़ी
बुरी तरह मरे

याँ आदमी ही नार^१ है और आदमी ही नूर
याँ आदमी ही पास है और आदमी ही दूर
कुल आदमीका हुस्न-ओ-कबह^२में है याँ जहूर
शैतों भी आदमी है जो करता है मक्र-ओ-जोर
और हादी^३ रहनुमा है सो है वो भी आदमी

मस्जिद भी आदमीने बनाई है याँ मियाँ
बनते हैं आदमी ही इमाम^४ और खुतबा^५खाँ
पढ़ते हैं आदमीही कुरआन और नमाज याँ
और आदमी ही उनकी चुराते हैं ज़तियाँ
जो उनको ताड़ता है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी पै जानको वारे है आदमी
और आदमी पै तेगको मारे है आदमी
पगड़ी भी आदमीकी उतारे है आदमी
चिल्लाके आदमीको पुकारे है आदमी
और सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी

चलता है आदमी ही मुसाफ़िर हो लेके माल
और आदमी ही मारे है फाँसी गलेमें डाल
याँ आदमी ही सैद^६ है और आदमी ही जाल
सच्चा भी आदमी ही निकलता है मेरे लाल
और झूटका भरा है सो है वो भी आदमी

^१आग

^२भलाई बुराई

^३हिदायत देनेवाला, पथप्रदर्शक

^४नमाज पढ़ानेवाला, नेता

^५खुतबा पढ़नेवाला

^६शिकार

याँ आदमी ही शादी है और आदमी ही ब्याह
 क़ाज़ी वकील आदमी और आदमी ग़वाह
 ताशे बजाते आदमी चलते हैं ख़वामख़ाह
 दौड़े हैं आदमी ही तो मिशअल ज़लाके राह
 और ब्याहने चढ़ा है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी नक़ीब हो बोले हैं बार-बार
 और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार
 हुक्का सुराही जूतियाँ दौड़े बग़लमे मार
 काँधे पे रखके पालकी हैं दौड़ते कहार
 और उममे जो पड़ा है सो है वो भी आदमी

बैठे हैं आदमी ही दुकाने लगा-लगा
 और आदमी ही फिरते हैं रख सर पे ख़ोंचा
 कहता है कोई "लो" कोई कहता है "लारे, ला"
 किस-किस तरहकी बेचे हैं चीज़े बना-बना
 और मोल ले रहा है सो है वो भी आदमी

तबले मजीरे दायरे सारंगियाँ बजा
 गाते हैं आदमी ही हर इक तरह जाबजा
 रंडी भी आदमी ही नचाते हैं गत लगा
 और आदमी ही नाचे हैं और देख फिर मज़ा
 जो नाच देखता है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी ही लाल-ओ-जवाहर हैं बेबहा
 और आदमी ही ख़ाकसे बदतर हैं हो गया
 काला भी आदमी है कि उलटा हो जूँ तवा

गोरा भी आदमी है कि टुकड़ा है चाँदका
 बदशक्ल बदनुमा है सो है वो भी आदमी
 इक आदमी है जिनके ये कुछ जर्क बर्क^१ है
 रूपैके जिनके पाँव है सोनेके फ़र्क^२ है
 भ्रमके तमाम गर्बसे ले ता-ब-शर्क^३ है
 किमख्वाब ताश शाल दोशालोंमे ग़र्क है^४
 और चीथड़ों लगा है सो है वो भी आदमी
 हैरान हूँ यारो देखो तो क्या ये सवांग है
 और आदमी ही चोर है और आपी थांग^५ है
 है छीना भपटी और कही बांग तांग^६ है
 देखा तो आदमी ही यहाँ मिस्ले-रांग^७ है
 फ़ौलादसे गढ़ा है सो है वो भी आदमी
 मरनेमे आदमी ही कफ़न करते है तयार
 नहला धुला उठाते है काँधे पै कर सवार
 कल्मा भी पढ़ते जाते है रोते है ज़ार-ज़ार
 सब आदमी ही करते है मुर्देके कारोबार
 और वो जो मर गया है सो है वो भी आदमी
 अशराफ़ और कमीनेसे ले शाह ता बज़ीर
 ये आदमी ही करते है सब कारे दिलपज़ीर
 याँ आदमी मुरीद है और आदमी ही पीर
 अच्छा भी आदमी ही कहाता है ए नज़ीर
 और सबमे जो बुरा है सो है वो भी आदमी

^१तड़कीले भड़कीले जूते ^२'पश्चिम से लेकर पूरब तक' ^३डुबे हैं
^४चोरोंको पनाह देनेवाला ^५तू तकार ^६रांगेकी भाँति

जुदाई

जहाँमे नाम तो सुनते थे हम जुदाईका
वले^१ न देखा था दर्द-ओ-अलम जुदाईका
दिया फ़लकने^२ हमे भी ये सम^३ जुदाईका
बुरा है मर्गसे^४ एक-एक दम जुदाईका
ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका
घड़ी-घड़ीमे उठे हैं तड़पके दिलसे आह
जिगरके टुकड़े निकलते हैं अशक़के हमराह
जो कोई शक़ल मेरी देखता है अब वल्लाह
यही कहे हैं वो सीनेसे सर्द भरकर आह
“ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका”
मचे न क्योके मेरे दिलमे दाद और बेदाद
कि थे जो ऐश-ओ-तरब सब वो हो गये बर्बाद
न जीको चैन न आँखोंको सुख न दिल है शाद
भला मैं किससे अब इस जुल्मकी क़हूँ फ़रियाद
ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका
कभी तो यारके आनेकी राह तकता हूँ
ग़लीमे उसकी कभी जाके सर पकटता हूँ

^१ परन्तु

^२ आस्मान

^३ ज़ह्ल

^४ मृत्यु

कभी दिवाना हो जंगलमे जा भटकता हूँ
निकलती जान नहीं और पड़ा सिसकता हूँ
ग़ज़ब है क़ह है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

फिरूँ हूँ दस्त-ओ-बयाँबामे^१ रात दिन ग़मनाक^२
जलाता आहूँके शोलेसे सब ख़स-ओ-ख़ाशाक^३
ख़राब हाल जिगर ख़स्ता और ग़रीबों चाक
ये जिसपर आन पड़े ग़म वो क्या जिये फिर ख़ाक
ग़ज़ब है क़ह है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

मेरी जो चश्मसे दिन रात आँसू बहते हैं
तो जान-ओ-दिल मेरे क्या-क्या अज़ाब सहते हैं
जो आशाना हैं मेरे मुझको देख रहते हैं
सब अपने हैफ़से^४ मलमलके हाथ कहते हैं
ग़ज़ब है क़ह है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

जो मैकदेकी तरफ़को कभी क़हूँ हूँ गुज़र
तो देख मुझको परीशों ख़राब ख़स्ता-ओ-ख़वार
प्याला चश्मका आँसूसे भर हर इक मयख़वार
जिगरसे खींचके आह और यही कहे हैं पुकार
“ग़ज़ब है क़ह है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका”

^१ जंगल वियावान

^२ दुखी

^३ घासफूस

^४ अफ़सोस

कभी चमनको जो घबराके हूँ निकल जाता
तो वां भी हाय ज़रा दिल नहीं है ठहराता
जिधरको जाऊँ उधर ग़म ज़िगरको है खाता
अजब खराबी है कुछ हाय बन नहीं आता
ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

जो कोई हिज़्रमे रोता था आशिक़े-महरूम^१
मैं हँसके कहता था दिलमे अबस ये हं मग़मूम^२
मची जो मुझ पै भी आकर फिराक़ की ये धूम
वो उसका दर्द मुझे हाय अब हुआ मालूम
ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

जो कोई पूछे है “क्या तुझ पै दुःख पड़ा ऐसा
कि जिस सबबसे तू फिरता है इस कदर शैदा
मैं उसको जिस घड़ी देता हूँ अपना हाल सुना
तो भरके आँखोंमे आँसू यही वो है कहता
ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
ख़ुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

न भूक लगती है न नौद मुह दिखाती है
जो दिन पिये है लहू रात मुझको खाती है
न दिल लगी न कोई चीज़ मुझको भाती है
कलेजा टूटे है और छाती उमड़ी आती है

ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
 खुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका
 न सुध है सैरकी मुभ्क़ो न अनजुमनकी ख़बर
 न याद बाग़की है और न शह्र बनकी ख़बर
 न ध्यान जिस्मका और कुछ न पैरहनकी ख़बर
 न होश दिलका है न मुभ्क़ो तन बदनकी ख़बर
 ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
 खुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका
 जो मुभ्क़ पै आन पड़ा दिन मियाह मत पूछो
 हुआ हूँ हिज़्रमे ऐसा तबाह मत पूछो
 सिवाये मर्ग़ नहीं अब निबाह मत पूछो
 जो जुल्म मुभ्क़ गुज़रता है आह मत पूछो
 ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
 खुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका
 जुदाई हाथ मुहब्बतकी क्या बुरी है शै
 कि दिल न बज़ममे बहले न ख़ुश लगे है मैं
 'नज़ीर' हिज़्रके अब ग़ममें रोड़ये ताक़
 बहुत बड़ा है ये आशिक़के हक़मे दुःख है हैं
 ग़ज़ब है क़ह्ल है यारो सितम जुदाईका
 खुदा किसीको न दिखलाये ग़म जुदाईका

दीद बाज़ी

(आँख लड़ाना)

फबता है उसको यारो दम आशिक्रीका भरना
 हो याद जिसको सौ सौ गुल फूलका कतरना
 जिस घाट हुस्न उतरे उस घाट ही उतरना
 जिस ढबका हुस्न देखा उस ढब ही कर गुज़रना
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबां^१की दीद करना
 देखा जो हुस्न भारी शह जोर या जबाड़ा^२
 तो पहलवान बनकर खोदा वहीं अखाड़ा
 डंड पेल भान मुगदर लेज़िम^३से खमको भाड़ा
 इस पेचसे ही गुलरू^४ बैठेको धर पछाड़ा
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना
 जो हुस्न था चमकता क्रातिलका मिस्ले-कत्ता^५
 तो मकड़ी बाज़ बनकर फेका फरी भी गतका
 बांक और पटा हिलाया मेहनतसे होके लत्ता
 रादत ही बनके मारा उस पर भी अपना हत्ता
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

^१ सुन्दरी

^२ भारी भरकम,

^३ व्यायामका एक यंत्र

^४ सुन्दर मुखड़ेवाली

^५ चमकती तलवार

देखा जो हुस्न बांका तो बनके टेढ़े बाँके
तेग-ओ-सिपर तपंचे बांधे हैं सब जहाँके
कर खाना जंगी उससे खाये बदन पै टाँके
टाँके तो खाये लेकिन फंके भी खूब फाँके
सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

तस्वीर-सी किसीकी मूरत जो दी दिखाई
तो बनके फिर मसव्विर तस्वीर ही बनाई
गलियोंमें सैर देखी मेलोंमें जा लगाई
इस शकलसे ही अक्सर की हुस्नकी कमाई
सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

लक्क^१की तरह दिलको जिस हुस्नने मड़ोड़ा
तो पाल कर कबूतर^२ उससे ही दिलको जोड़ा
दिखला मुखीका पट्टा या शिस्त रूँका जोड़ा
कैसा ही पर खड़ा था पर मूठसे न छोड़ा
सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

देखा जो हुस्न यारो, जूँ लाल या अंगारा
तो लाल चीनीका ही फिर पालना बिचारा
कल या कि जाल रोका और लालको उतारा
उस लालके ही ढबमें उसपर भी जाल मारा

^१ लक्का कबूतर ^२ कबूतरोकी एक जाति ^३ लाल मुनिया

सौ मक्क-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना
 बाजारी हुस्न देखा तो करके दिलफ़िगारी^१
 पिंजरे बनाये खासे रंगीन हल्के भारी
 डाले हिन्डोले उसमे रंगीन जर निगारी
 उन पिंजरों ही में करनी अपनी दुकानदारी
 सौ मक्क-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना
 अच्छा लगा जो दिलको सीमीं बदन^२ पियारा
 तो कीमियागरीका^३ फिर ठकठका संवारा
 दिखलाके चांदी सोना जैसे चमकते तारा
 पारा ही था तो उसको इस ढबमे मार उतारा
 सौ मक्क-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना
 जमुना पै जबकि देखे इस हुस्नके तनापे
 तो बनके बाम्हन उस जा छापे तिलक ही छापे
 चंदन दिखाये हरदम दरपन दिखाके भापे
 उस घाटपर भी आखिर अपने ही छापे छापे
 सौ मक्क-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना
 जादू जो हुस्न देखा तो सीखे जादू टोने
 बीरोंके तई जगाके बैठाया कोने-कोने

^१ अपने दिलमें घाव पैदा करके

रूपहले, चाँदीसे बदनवाला

^२ कीमिया बनानेका, रसायन द्वारा चाँदी सोना बनानेका

पढ़ खोपरीके काजल चावल सिंदूर मौने
जादूमे देख डाले काफ़िर^१ कई सलोनै
सौ मक्क-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना
देखा जो हुस्ने-क्राबिल तो रेखता^२ बनाये
कुछ मुकरियां बनाई और कुछ कबित बनाये
सखियोंकी बहस डाली और खंड भी जमाये
जब भूलने न पाये फिर तो मज्ने उड़ाये
सौ मक्क-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना
जो हुस्न शेर देखा तो रीछको निकाला
और बनके रीछवाले सोंटा कड़ा संभाला
कुश्तीसे खड़खड़ाया और आपको उछाला
उस रीछसे भी कितने गुलरूको देख डाला
सौ मक्क-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना
खिड़कीका हुस्न देखा तो फिर नचाके बंदर
बकरा भी ला बिठाया इस कामका समन्दर
जब डुगडुगी बजाई कूचा गलीके अन्दर
लड़के हज़ारों बोले “आओ मियां क़लन्दर”
सौ मक्क-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना
पाया जो रंग भोला तो बनके रंग भरिये
छल्ले अंगूठी ढाले सांचेकी करके भरिये

बोला कोई जो उसमे कुछ तो खुदासे डरिये
तो उससे हंसके कहना कुछ बात यां न करिये
सौ मक-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

देखा जो हुस्न कोई बलदार लह्ना खाया
तो बन गये सपेरे और सांपको जिलाया
तोंबी बजाके हरदम सांपोंका फन हिलाया
उस सांपके ही फनसे अपना भी मन मनाया
सौ मक-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

देखा जो हुस्न सरकश सयाने ही हो पुकारे
धूनी फ़लीने लिक्खे और भूत जिन उतारे
फूँकी चुड़ैल खन्दी देवों पै हाथ मारे
इक छोटे मन्तरामे कैसे किये नजारे
सौ मक-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

जो हुस्न बाला देखा तो मकड़ियां बनाईं
डिबियोंमे डाल मक्खी और मकड़ियां लड़ाईं
कुछ चीनियां मंगाईं कुछ पुतलियां नचाईं
इन पुतलियोंकी खातिर क्या पुतलियां लड़ाईं
सौ मक-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

हर इक पलंग उतारा शीशेमे जड़के माशा
ककड़ीके फूल कतरे और संगतरा तराशा

मूलीका हंस बगला गाजरका मोर बाशा
देखा हरइक बहाने इस हुस्नका तमाशा
सौ मक्र-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

मेलोंमे आम जामुन सेब-ओ-अनार बेचे
सैरोंमे डाल मूठे पापड़ आचार बेचे
घाटों पे जा चबेने नक़द-ओ-उधार बेचे
चकलोंमे बनके माली फूलोंके हार बेचे
सौ मक्र-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

गर आ पड़ी किसी दिन कुछ सीतला बुराई
तो बेचकर बजाया के दिलकी सरबराई
फिर बन गये पुजारी कर हुस्नकी उगाई
इस सीतलाकी मतमे अपनी ही मत गंवाई
सौ मक्र-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

होलीकी फिर बहारे आ पहुंचीं दाये बाये
तो बनके जोगी चेले बांधी अजब हवाये
आजाद बेनवा हो फिर की निदा सदाये
उस हाल काल ही से दीं हुस्नको दुआएं
सौ मक्र-ओ-फन बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
आशिकको हर तरहसे खूबांकी दीद करना

खूबीका लहू खाता देखा जो हुस्न लहरी
पाले बटेर तोते बगले बये गिलहरी

की बात वो ही जो कुछ उसके पसन्द ठहरी
 उसकी लहरकी देखी क्या क्या बहार गहरी
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना

देखा जो हुस्न स्याना तो बन गये दिवाने
 लागे हर इकको अपने दीवानापन जताने
 लड़कोंके संग खाने और शोर-ओ-गुल मचाने
 देखे हजार भ्रमके आखिर इसी बहाने
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना

देखी जो नर्म-ओ-नाज़ुक इस हुस्नकी कलाई
 मनिहार बनके चूड़ी हाथोमे खनखनाई
 बेचे बहुत खिलौने और जो जो बन है आई
 आखिर भिकारी बनकर की हुस्नकी गदाई
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना

लाज़िम है उसको यारो आशिक़ वही कहावे
 जो इस तरहकी घातें कर हुस्नको बढ़ावे
 बहुरूपिया भी अपना बहुरूप भूल जावे
 आगे 'नज़ीर' क्या-क्या आशिक़की धुन बतावे
 सौ मक्र-ओ-फ़न बनाना सौ रंग-ओ-रूप भरना
 आशिक़को हर तरहसे खूबांकी दीद करना

खमसा बर गज़ल खुद

(अपनी गज़ल पर खमसा)^१

यूं तो अक्सर इधर आ जाते हैं इन्सान कई
चाक हो जाते हैं उन परसे गरेबान कई
पर कहूं क्या कि बना हुस्नके सामान कई
दैर^२से आज जो निकले बुते-जीशान कई
ले गये सब कई दिल कई ईमान कई
अपने हम-चश्म^३ तो यां खून गये हे रो रो
मैं भी लाया हूं पर इस कामको अब इस हदको
एक शम्मा^४ तो मेरे रोनेका ये हैं सुनलो
इतना रोया हूं कि अब लखते^५ जिगरके यारो
ढेर हैं चश्मसे ले ता सरे-दामान^६ कई
आह जो जो गये थे हसरते-दीदारमे मर
सब तड़पते थे वो बेताब ज़मीके अन्दर
आखिरश होके परीशों हमा तन चश्म-ओ-नज़र
अब तो टुक मुँहको दिखा यार कि नरगिस बनकर
निकले हैं खाके-चमनसे तेरे हैरान कई

^१ गज़लके दो मिसरो पर जब तीन मिसरे और जोड़ दिये जाते हैं तब वह खमसा हो जाता है ।

^२ मन्दिर ^३ अपनी जैसी आँखों वाले, अपन जैमे ^४ बहुत छोटा अंश

^५ जिगरके टुकड़े ^६ आँखसे लेकर दामन तक

आवे गर बादे-सबा उसकी गलीसे तो मिलूँ
 सौ तमझासे मैं नक्शे-क़दम आगोशमे लूँ
 चश्मे-हैरत-जदाको कपशके नालोंसे मलूँ
 उसके दामनसे लगूँ पाँव पड़ूँ साथ चलूँ
 खाक हूँ तो भी मेरे जीमे हूँ अरमान कई
 मान कहना मेरा ए शोख हठीली चंचल
 गोकि अब बुलबुल-ओ-कुमरीमे पड़ी है हलचल
 मुँह दिखानेमे गरीबोंके बस इतना न मचल
 आखिर आया है तो गुलशनमे भी टुक अब तो चल
 याँ भी रहते हैं तेरे चाकके-गरीबान कई
 पाना खाना है तेरा कल्लके आलमका निशान
 और खूबोंकी तरह अपने तू हँसनेका न जान
 देख कहता हूँ सितमगर मेरी इस अर्जको मान
 पान खा-खा न हँस इस क़द्र तू ऐ दुश्मने जान
 अभी भर जायेगे खूमे लब-ओ-दन्दान कई
 जबसे उस शोखकी अबरूने किया तेगको मात
 बेगुनाहोके सर ऊपर है निहायत आफ़ात
 अब कहूँ क्या मैं भला उस सितम-ओ-जुल्मकी बात
 नज़र आते हैं मुझे उसकी गलीमे दिन रात
 टुकड़े-टुकड़े कई, बिसमिल कई, बेजान कई
 ये वो जागह है कि इस जामे तू बन-उनके न आ
 और जो आवे तो रकीबोंके तई साथ न ला
 आह जागेगे तो फिर हथ्र करेगे बरपा
 जानकर गोरे-गरीबोंमे कयामत न मचा
 अभी सोय हूँ तेरे बे सर-ओ-सामान कई

जबसे उस खुसरू-ए-खूबाने^१ किया मुझको असीर
 जी भी है शाद मेरा दिल भी है सौ ऐश पजीर
 क्योंकि इस खाकनशीनीको न समझूं मैं सरीर
 बादशाहको न लिखा रुक्का कभी जिसने 'नजीर'
 उस शहे-हुस्नके आये मुझे फरमान कई

^१ रूपवानो या रूपवतियोंके राजा

ख्वाबका तिलस्म

यारो ज़रा सुनो ये अजब सैर है बड़ी
सहने-चमनमे अबकी आकर लगी झड़ी
पीकर शराब ऐशकी हरदम कड़ी-कड़ी
कल बेखबर जो रातको सोया मैं जिस घड़ी
उस ख्वाबमे मुझे इक इमारत नज़र पड़ी
आई नज़र जो मुझको वो नादिरमहल सरा
दिलमे परीके बागका मुझको यक़ीं हुआ
जब उस मक़ाँके पास मैं डरता हुआ गया
देखूँ तो उसका है दरेदौलत सरा खुला
आया ये दिलमे देखिये चलकर कोई घड़ी
पहुँचा मैं जब कि उस चमने-ज़रफ़शानमे
भूमके मक़ाँ जो उसके मेरे आन-आनमे
आलम सुनहरे पर्दोंमे और सायबानमें
क्या देखता हूँ जाके मैं हर इक मकानमे
सोनेकी कान है कि अभी फिरती है पड़ी
गुलशन कहीं चमन कहीं शीशा सुराही ज़ाम
फ़र्श-तिला^१ कहीं कहीं यकसर जड़तका काम
थी नकरई^२ ज़मीं तो सुनहरे तमाम बाम
ताक-ओ-रवाक^३ उसके चमकते थे यों मदाम^४
गोया कि ईट-ईट जवाहरकी है जड़ी

^१ सोनेका फर्श ^२ रुपहली ^३ ताक और खिड़कियाँ ^४ सुन्दरी

देखी जो मैंने वाँ ये तिलस्मातकी हवा
आलम जवाहरातका हर जा भमक रहा
उसकी चमक-भमककी बहारे कहूँ मैं क्या
चमका जो वो मकाँ मेरी आँखोंमे नूरसा
हैरतसे अक्ल आनके चक्करमे जा पड़ी

ऐसा मकाँ तो मैंने न देखा था न सुना
दीवाना हो मैं चारों तरफ देखने लगा
चाहा कि देखूँ कोठेके ऊपर नज़र उठा
इतनेमे एक तरफसे जो पर्दा-सा उठ गया
बिजलीसी एक चमक गई आँखोमे उस घड़ी

देखी जो मैंने हाय ये काफ़िरसी महलक्रा^१
ऊपर नज़र गई जो मेरी सरसे ता-ब-पा^२
सूरत वो कह्ल चाँदका टुकड़ा-सा बेबहा
और हुस्नका बयान तो होता नही ज़रा
नक़शा वो जिसके पाँव पै लोटे परी पड़ी

खूँरेज़ अबरू जानकी क़ातिल हर इक निगाह
मिज़गाँ वो बर्छियोंको लिये तुल रही सिपाह
मंहदीसे उँगलियोंने किये खूने-बेगुनाह
आँखोंमें खिच रहा था वो काजल ग़ज़ब मियाह
पड़ जाये जिससे दिलमें फ़रिश्तोंके हड़बड़ी

ज़ुलफ़ें वो मुश्के नाबसी चेहरा वो चाँद-सा
जूगनूँ रहा गलेमें सितारा-सा जगमगा

^१ चाँद-सी शकल वाली ^२ सिरसे पाँव तक

गहनेका वस्त्र^१ या कि बदनकी कहूँ सफ़ा^२
 जाता था सुख जोड़ेमे तन यूँ भ्रमक दिखा
 गोया शफ़रूमे आनके बिजली चमक पड़ी
 रखे थी उस घड़ी तो ये आलम वो महजबीं
 शायद कि इस तरहकी न होगी परी कहीं
 हसरतसे आनकर मेरी आँखोंने वाँ जुँहीं
 देखी जो इस बहारकी काफ़िर वो नाज़नीं
 दिल लोट पोट हो गया जाँ ग़शमे जा पड़ी
 क्या-क्या कहूँ मैं शोखके आलम बनावका
 तस्वीर बन रही थी लगा सरसे ता-ब-पा
 उस दम बँधी थी उसकी ग़ज़ब आनकर हवा
 काफ़िर खड़ी हुई थी अजब ढबसे बन-बना
 इक हाथमे था आइना इक हाथमे छड़ी
 आखिर खड़ी हुई थी जो वाँ नागहाँ वो शोख
 लेती थी हर निगाहमे आशिककी जाँ वो शोख
 कुछ चुलबुली निगाह थी कुछ अँखड़ियाँ वो शोख
 करती थी सैर चारों तरफ़की जो वाँ वो शोख
 इतनेमें फिरती उसकी नज़र मुझ पे आ पड़ी
 उसकी निगहके आनेका मैं क्या करूँ बयाँ
 बिजली थी या कि तीर थी गोली थी या सनाँ
 मेरी तरफ़को दौड़कर आते ही नागहाँ
 मेरी नज़र भी दौड़के उसकी नज़रसे वाँ
 ऐसी लड़ी कि खूब लड़ी खूब ही लड़ी

बारे नज़रके लड़ते ही कुछ कम हुआ हिजाब'
 उलफ़तकी आके दोनों तरफ़से खिची तनाब
 इतनेमे देख-देखके वो रश्के-माहताब
 इक बार खिलखिलाके हँसी और उतर शताब
 काफ़िर वो मेरे पास ही आकर हुई खड़ी
 कहने लगी कि “तूने बुलाया है क्यों मुझे
 दे ख्वाबको दुआ कि न पाता तू यों मुझे”
 चाहतमें अपनी डूबा हुआ देखा जो मुझे
 हँसकर लिपट गलेसे लगी कहने यों मुझे
 “आ इस महलमे चलके करे ऐश दो घड़ी”

उस गुलबदनसे जब कि मिली मुझको आके दाद
 मारे खुशीके कुछ न रही तनबदनकी याद
 क्योंकर भला न ऐश-ओ-तरब दिलको हो ज़ियाद
 मेरी तो उस परीसे यही ऐन थी मुराद
 सुनते ही दिलकी खुल गई हर एक फुलभड़ी

पाला पड़ा जो मुझको उस आबेहयातसे
 जान आ गई बदनमे मेरे उसकी बातसे
 आखिरको ले चढ़ी मुझे कोठे पै घातसे
 दो चार जाम मुझको पिला अपने हातसे
 सौ नाज़से पलंग पै मेरे पास आ पड़ी

ईधर तो जोशे-हुस्न और उधर हुस्न और जुनूँ
 नाज़-ओ-अदाकी होने लगी आके धपधपूँ

उन इशरतोंमें आह नसीबोंको क्या कहूँ
चाहा मैं उस परीसे जो कुछ और कुछ कहूँ
इतनेमे हाथ यार मेरी आँख खुल पड़ी

ये हादसा^१ जो मुझ प पड़ा आके यकबयक
आँखोंसे मेरी उस घड़ी आँसू पड़े टपक
नींद उड़ गई करार गया जल गई पलक
जागा किया 'नज़ीर' मैं फिर आह सुबह तक
मलमलके हाथ रातकी काटी घड़ी-घड़ी

हुस्न-ओ-जमातको गनीमत समझो

अपने गमखवारोंसे कोई आन हँस ले बोल ले
दर्दमन्दोंका निकाल अरमान हँस ले बोल ले
फिर कहाँ ये दिलबरी ये शान हँस ले बोल ले
दम गनीमत है अरे नादान हँस ले बोल ले
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

आज तुझको हक़ने दी है हुस्न-ओ-खूबीकी बहार
चाहनेवालोंसे कर ले कुछ सलूक-ओ-मेह्ल-ओ-प्यार
कौदना बिजलीका और जोबनका मत गिन अएतबार
काठकी हाँडी नहीं चढ़ती है प्यारे बार बार
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

अब तो मुंह गुल है पियारे फिर धतूरा आख है
आज ये गुलशन खिला है कलको सूखा साख है
जो उठा शोला भभूका आखिरशको राख है
चार दिनकी चाँदनी है फिर अंधेरा पाख है
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

इस क़दर मत कर मेरी जाँ अपने जोबनपर गुमाँ
ये नहीं रहता सदा काफ़िर किसीके पास हाँ

जब गिरे दाँत और पड़ें चेहरेके ऊपर भुर्रियाँ
फिर ये हँसना बोलना और फिर ये अचपलियाँ कहाँ
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

ऐसा कोई हुस्नवाला आह ! तू हमको बता
जिसकी खूबीका हमेशा एकसा आलम रहा
क्यों खफ़ा होता है हमसे याद रख ए दिलरुबा
हाथ आता है नहीं काफ़िर ये जब जोबन गया
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

क्या हमारा हाले-दिल खूबी तुझे कहती नहीं
या हमारी चाह तेरे नाज़को सहती नहीं
आह खेती हुस्ने-काफ़िरकी हरी रहती नहीं
नाव कागज़की है प्यारे ये सदा बहती नहीं
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

कैसे-कैसे खूबरू याँ हो गये हैं मेरी जाँ
अपने गमख़वारोंसे क्या क्या कर गये हैं खूबियाँ
तू जो रुठा रुठा हमसे रहता है ना मेहरबाँ
देख पछतावेगा गाफ़िल हुस्नपर मत रख गुमाँ
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

हुस्नका आलम सितमगर हर घड़ी मिलता नहीं
गुल भी खिल एक बारी ए जाँ फिर कभी खिलता नहीं

तुझसे तेरा रुठना हरदमका अब भिलता नहीं
दूध और दिल जब फटा प्यारे ये फिर मिलता नहीं
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

आज तो आशिकका सर है जान तेरा पाव है
मिन्नते होती है और तेरे नहीं कुछ भाव है
अब ये माशूकीका सिक्का आज तेरे नाव है
भूल मत इसपर मियाँ ये ढलती फिरती छाव है
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

दिल गरीबोंके जो प्यारे तुझसे अब दुःख पायेगे
लेके एक दिन तुझको भी खूबाँ यूँ ही कलपायेंगे
बातको हँसनेको दे दे भिड़कियाँ तरसायेंगे
पांडेजी पचतायेगे वो ही चनेकी खायेंगे
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

अपने-अपने वक्तमें क्या-क्या परीख बन रहे
चाँद-से मुखड़े रहे और गुल-से उनके तन रहे
ना किसीका धन रहे और ना सदा जोबन रहे
ना सदा फूले तरङ्ग^१ और ना सदा सावन रहे
मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

अब तो चेहरेपर है तेरे हुस्न-ओ-खूबीकी झलक
 स्वाह तू हँस बोल हमसे स्वाह गुस्सा हो झिड़क
 लेके जब जाती रहेगी ये झमक और ये चमक
 फिर जो बोलेगा तो हर डक यूँ कहेगा चल न बक
 मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
 हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

अब 'नज़ीर' आगे तेरे रहता है हाज़िर सुब्ह-ओ-शाम
 प्यारसे हँस बोल प्यारे पी मये उलफ़तका जाम
 फिर कहाँ ये दिलबरी ये ऐशकी बाते मदाम
 कुछ न होयेगा रहेगा आखिरश अल्लहका नाम
 मान ले कहना मेरा ए जान हँस ले बोल ले
 हुस्न ये दो दिनका है मेहमान हँस ले बोल ले

परीका सरापा

(नख शिख वर्नन)

खूँरेज^१ करिश्मा नाज-ओ-सितम गमजोकी भुकावट वैसी है
मिजगाँकी^२ सनों नजरोकी अनी अबरूकी खिचावट वैसी है
ऐयार नजर मक्कार अदा त्योरीकी चढ़ावट वैसी है
क्रत्तालनिगह^३ और डिस्ट गजब आँखोंकी लगावट वैसी है
पलकोंकी भपक पुतलीकी फिगत मुरमेकी घुलावट वैसी है

जो काफिर इसका आलम है वो आलम हूर कहाँ पावे
गर पर्दा मुँहसे दूर करे खुरशीदको^४ चक्कर आ जावे
जब ऐसा हुस्न भभूका^५ हो दिल ताब भला फिर क्या लावे
वो मुखड़ा चाँदका टुकड़ा-सा जो देख परीको गश आवे
गालोंकी दमक चोटीकी भूमक रगोंकी खिलावट वैसी है

थी जोर अदासे सर ऊपर संजाफ^६ दुपट्टेकी उलटी
बलदार लटे तस्वीरजबीं जकड़ी मेढी^७ नीची कंधी
दिल पेच न खावे अब क्योंकर और देख न उलझे कैसे जो
वो रात अँधेरी बालोंकी वो माँग चमकती बिजली-सी
जुल्फोंकी खुलत पट्टीकी जमत चोटीकी गुंघावट वैसी है

^१कातिल, खून बहानेवाला

^२पलक

^३कातिल निगाह

^४सूर्य

^५आगके समान लाल, दहकता

^६गोटदार, भालरदार

^७चोटी

बेदद सितमगर बेपरवा बेकल चंचल चटकीलीसी
दिल सलत कयामत पत्थरसा और बाते नर्म रसीलीसी
डोरोंकी बान रंगीलीसी काजलकी आन कटीलीसी
वो आँखे मस्त नशीलीसी कुछ कालीसी कुछ पोलीसी
चितवनकी दगा नज़रोंकी कपट सीनोंकी लड़ावट वैसी हँ

इस काफ़िरबीनी और नथके अन्दाज़ कयामत शान भरी
और घेरे चाह जनखन्दाँमे^१ सौ आफ़तके तूफ़ान भरी
वो नर्म साफ़ सितारासे और मोतीसे दामान भरी
वो कान जवाहर कान भरे कनफूलोंवाली जान भरी
बुन्दोंकी हिलत भुमकोंकी भुकत बालीकी हिलावट वैसी हँ

चेहरे पर हुस्नकी गर्मीके हर आन भूमकते मोतीसे
ख़ुश रंग पसीनेके क्रतरे मौ बार झलकते मोतीसे
हँसनेकी अदामे फूल झड़े, बातोंमे टपकते मोतीसे
वो पतले-पतले होंठ ग़ज़ब वो दाँत चमकते मोतीसे
पाँवोंकी रंगावट क़ह्ल सितम धड़ियोंकी जमावट वैसी हँ

तक्ररीर बयाँसे बाहर हँ वो काफ़िर हुस्न अहाहाहा
कुछ आप नये कुछ हुस्न नया कुछ होश जवानीका उसका
लपकें झपके उन बाहोंकी यारो में आह कहूँ क्या-क्या
वो बाँके बाज़ू होश रुबा आशिक़से खेले बाँकपटा
पहुँचीकी पहुँच पहुँचे प ग़ज़ब बाँकोंकी बँधावट वैसी हँ

वो गोरे-गोरे हाथ ग़ज़ब वो नर्म कलाई नाज़ भरी
कुछ शोख़ कड़ोंकी झंकारें कुछ झनकी चूड़ी चाँदीकी

^१ गाल या ठोड़ीमे बननेवाले गढे

ये आलम देखके आशिकका सीनेमे न तड़पे क्योंकर जी
वो प्यारी प्यारी अंगुस्ते^१ वो पोरे नाजुक-नाजुकसी
मेहदीकी रंगत फ़ंदककी^२ बनत छल्लोंकी छलावट वैसी है

कुछ नाज़-ओ-अदाकी मगरूरी कुछ जोर-ओ-जफ़ा कुछ बाँकपना
कुछ आमद हुस्नके मौसमकी कुछ काफ़िर जिस्म रहा गदरा
ये शोर जवानी उठतीका आता है उमंडकर जू दरिया
वो सीना उभरा जोश भरा वो हुस्नका आलम भूम रहा
शानोंकी अकड़ गर्दनकी मुडत मोँढोंकी खिचावट वैसी है

इस गोरे नाजुक सीनेपर वो गहनेके गुलज़ार^३ खिले
चम्पेकी कली हीरेकी जड़ी तोड़े जगनू हँकल बढ़ी
दिल लोटे तड़पे, हाथ मले और जाय नज़र हरदम फिसली
वो पेट मलाईसा काफ़िर वो नाफ़^४ चमकती तारासी
शोखीकी खुलावट और सितम, शर्मोंकी छिपावट वैसी है

हर आन निराली हर इकसे उस शोखपरीकी महबूबी
कुछ नाज़-ओ-अदाकी मरगूबी^५ कुछ शर्म-ओ-हयाकी महबूबी
अब गहनेकी तारीफ़ करूँ या काफ़िर जोड़ेकी खूबी
पोशाक सुनहरी इत्र भरी सर पाँव जवाहरमें डूबी
जुगनूकी दमक हीनाकी सफ़ा कुर्तीकी फँसावट वैसी है

वो काफ़िर धज जी देख जिसे सौ बार क्रयामतका लरजे
पाज़ेब कड़ी पायल घुंगरू कड़ियाँ^६ भड़ियाँ गजरी तोड़े
हर जुबिशमे सौ भंकारे हर एक कदमपर सौ भमके

^१ उगलियाँ ^२ एक लाल कपड़ेके डुपट्टेका नाम जिसपर गोटा
किनारी लगी हो ^३ वाटिका ^४ नाभि ^५ आकर्षण

वो चंचल चाल जवानीकी ऊँची एड़ी नीचे पंजे
 कफशोंकी खटक दामनकी भटक ठोकरकी लगावट वैसी है
 कातिल हर आन नया आलम काफ़िर सर आन नई भूमके
 बाँकी नज़रें तिरछी पलके भोली सूरत मीठी बातें
 दिल बस कनेरके लाखों ढब जी लेनेकी सौ-सौ घातें
 हर आन फबन हर वक्त सजे हरदममे बदले लाख धजे
 आँखोंकी लगावट क़ह्ल सितम बातोंकी रखावट वैसी है
 तस्वीरका आलम नख सिखमे छब तस्वी साफ परीकीसी
 कुछ चीन जबीकी ऐठ रही और होंठोंमे कुछ गालीसी
 बेदरदी सस्ती बहुतेरी और मेह्ल-ओ-मुहब्बत थोड़ीसी
 भठी ऐय्यारी नाक चढ़ी भोली व सयानी पक्कीसी
 ठट्ठोंकी उड़ावट और ग़ज़ब कहकहकी हँसावट वैसी है
 नज़रोंमे साफ़ उड़ाये दिल इस तौरकी काफ़िर ऐय्यारी
 और हट जावे सौ कोस परे गर बात कहो कुछ मतलबकी
 कोहनी मारे चुटकी ले ले छोड़े भिड़के देवे गाली
 हर आन “चे खुश” हरदम “अच्छा” हर बात हँसीकी चुहल भरी
 रम्ज़ोंका^१ ज़िला^२ ग़म्ज़ोंका^३ जुगत^४ फबतीकी फबावट वैसी है
 ये होश कयामत काफ़िरका जो बात कहो वो सब समझ
 रूठे मचले सौ स्वांग करे बातोंमे लड़े नज़रोंमे मिले
 ये शोखी और ये बेताबी इक आन कभी निचली न रहे
 चंचल अचपल मटके चटके सर खोले ढाँपे हँस-हँस दे
 बाहोंकी भटक घूँघटकी अदा जोबनकी दिखावट वैसी है

^१, ^२, ^३, ^४ इशारो और नाज नखरोकी जिला जुगत, दो अर्थों
 बातको ज़िला जुगत कहते हैं ।

इक शोर क्यामत साथ चले निकले काफ़िर जिसदम बनठन
 बलदार कमर रफ़्तार ग़ज़ब दिलका क़ातिल जीका दुश्मन
 मज़कूर करूँ मैं अब यारो उस शोख़का क्या-क्या चंचलपन
 कुछ हाथ हिलें कुछ पाँव हिले उछले बाजू फड़के सब तन
 गाली वो बला ताली वो सितम उँगलीकी नचावट वैसी है
 जो ऐसा हुस्नका दरिया हो किस तौर न लहरोंमे बहिये
 गर मेह-ओ-मुहब्बत हो बेहतर और जोर-ओ-जफ़ा हो तो सहिये
 दिल टूट गया है ग़श होकर बस और तो आगे क्या कहिये
 मिल जाये 'नज़ीर' ऐसी जो परी छातीसे लिपटकर सो रहिये
 बोसोंकी चपक बग़लोंकी लपट सीनोंकी मिलावट वैसी है

क्रिस्सा हंस

दुनियाकी जो उलफ़तका हुआ उसको सहारा
और उसने खुशीको मेरी खातिरमे उतारा
देखी जो यह सफलत तो मेरा दिल ये पुकारा
आया था किसी शह्रसे इक हंस बिचारा
इक पेड़ पै जंगलके हुआ उसका गुजारा

चंडूल अगन अबलक़े छुपान बने दय्यर
मीना व बये किलकिले बगले भी समन बर
तोते भी कई तौरके टोइयाँ कोई लहबर
रहते थे बहुत जानवर उस पेड़के ऊपर
उसने भी किसी शाख पै घर अपना सँवारा

बुलबुलने किया उसकी मुहब्बतमे खुश आहंग
और कूकले कोयलने भी उलफ़तको लिया संग
खंजनमे कलंगोंमे भी चाहतकी बजी चंग
देखा जो तय़रोंने उसे हुस्तमे खुश रंग
वो हंस लगा सबकी निगाहोंमे पियारा

सी मुर्ग भी सौ दिलसे हुए मिलनेके शायक़
गढ़ पंख भी पंखोंके हुए भलनेके लायक़
सारस भी हवासिल भी हुए उसके मुआफ़िक़

बाज-ओ-लगड़-ओ-जरी व शहीं हुए आशिक
शिकरोंने भी शक्करसे किया उसका मदारा

कुछ सजक-ओ बड़नक्के व कुछ टनटन व बरें
पंडखीसे लगा टूटर-ओ-कुमरी व हरीवे
गोगाई बगीरे व लटोरे व पपीहे
कुछ लाल चिड़े पोदने पिढ़े ही न ग्रश थे
पडरी भी समझती थी उसे आँखका तारा

चाहतके गिरफ्तार बटेरे लवे तीतर
कुबकोंके तदरूबोंके भी चाहतमे बँधे पर
हुदहुद भी हुए हितके बढ़्य्या इधर ऊधर
जाग-ओ-जगन-ओ - तूती - ओ - ताऊस - ओ - कबूतर
सब करने लगे इसकी मुहब्बतका इशारा

शकल उसकी वही जीमे खपी शाम चडेके
दी चाह जता फिर उसे भाँपोने भी भपसे
हरियल भी हुए उसके बड़े चाहनेवाले
जितने गरज उस पेड़ पे रहते थे परिन्दे
उस हंसपर उन सब-सबने दिल व जानको वारा

ख्वाहिश ये हुई सबकी कि हरदम उसे देखे
और उसकी मुहब्बतसे जरा मुँहको न फेरें
दिन रात इसे खुश रखे नित मुख उसे देवें
सोहबत जो हुई हंसकी उन जानवरोंमें
यक चन्द रहा खूब मुहब्बतका गुजारा

सब होके खुश उसकी मए-उल्फ़त लगे पीने
और पीतसे हर एकने वहाँ भर लिये सीने
हर आन जताने लगे चाहतके करीने
उस हंसको जब हो गये दो चार महीने
इक रोज़ वो यारोंकी तरफ़ देख पुकारा

“याँ लुत्फ़-ओ-करम तुमने किये हम पै हैं जो-जो
तुम सबकी ये खूबी है कहाँ हमसे बयाँ हो
तक्रसीर कोई हमसे हुई होवे तो बख़्शो
लो यारो हम अब जावेगे कल अपने वतनको
अब तुमको मुबारक रहे ये पेड़ तुम्हारा

“अबतक तो बहुत हम रहे फ़ुसंतसे, हमआग़ोश
अब यादे-वतन दिलकी हमारे हुई हमदोश
जब हर्फ़ जुदाईका परिन्दोंने किया गोश'
इस बातके सुनते ही जो हर एकके उड़े होश
सब बोले “ये फ़ुरकत तो नही हमको गवारा”

बिन देखे तुम्हारे हमे कब चैन पड़ेगे
इक आन न देखेगे तो दिल गमसे भरेंगे
गर तुमने ये ठहराई तो क्या सुखसे रहेंगे
हम जितने हैं सब साथ तुम्हारे ही चलेंगे
ये दर्द तो अब हमसे न जावेगा सहारा

फिर हंसने ये बात कही उनसे कि “ए यार
कुछ बस नहीं अब चलनेकी साअतसे हैं नाचार”

आँखें हुई अइकोसे परिन्दोंकी गुहरबार
इसमें जो शबे कूचकी हुई सुबह नमूदार^१
पर अपना हवा-पर वहीं उस हंसने मारा

वो हंस जब उस पेड़से वाँको चला नागाह
मुँह फेरके ईधरसे वतनकी जुँहीं ली राह
देखा जो उसे जाते हुए वाँसे तो कर आह
सब साथ उड़े उसके जो थे यार हवा ख्वाह
हर एकने उड़नेके लिये पंख पसारा

और हंसकी उन सबको रफ़ाकत^२ हुई ग़ालिब^३
जब वाँसे चला वो तो हुई बेबसी ग़ालिब
कुलफ़त^४ थी जो फ़ुरक़तकी वो सबपर हुई ग़ालिब
दो कोस उड़े थे जो हुई मांदगी ग़ालिब
फिर परमे किसीके न रहा क़ूवत-ओ-यारा

पर उनके हुए तर जुँहीं दूरीकी पड़ी ओस
रोये कि रफ़ाक़तकी करे क्योंके क़दमबोस
थक-थकके लगे गिरने तो करने लगे अफ़सोस
कोई तीन कोई चार कोई पाँच उड़ा कोस
कोई आठ कोई नौ कोई दस कोसमें हारा

कुछ बन न सके उनसे रफ़ीकीके जो वाँ कार
और इतने उड़े साथ कि कुछ होवे न इजहार
जब देखी वो मुश्किल तो फिर आख़िरके तई हार

^१प्रकट

^२साथियोंका स्नेह

^३दोस्ती जीत गई

^४दुख

कोई याँ रहा कोई वाँ रहा कोई हो गया नाचार
कोई और उड़ा आगे जो था सबमें करारा

थी उसकी मुहब्बतकी जो हर एकने पी मय
समझे थे बहुत दिलमे वो उल्फ़तको बड़ी शय
जब हो गये बेबस तो फिर आखिर ये हुई रय
चीले गिराँ कौव्वे गिरे और बाज़ भी थक गये
उस पहली ही मंज़िलमे किया सबने किनारा

दुनियाकी जो उल्फ़त है तो उसकी है ये कुछ राह
जब शकल ये होवे तो भला क्योंके हो निर्बाह
नाचारी हो जिस जामे तो वाँ कीजिये क्या चाह
सब रह गये जो साथके साथी थे 'नज़ीर' आह
आखिरके तई हंस अकेला ही स्थिरा

कौव्वे और हिरनकी दोस्ती

इक दशतमे^१ सुना है कि इक खूब था हिरन
बच्चा ही था अभी न हुआ था बड़ा हिरन
फिरता था चौकड़ीका दिखाता मजा हिरन
देखा जो एक कौव्वेने वो खुशनुमा हिरन
दिलको निहायत उसके वो अच्छा लगा हिरन

और बाते करके कौव्वेने उसको लगा लिया
दममे हिरन भी कौव्वेकी उन्फतमें आ गया
कौव्वे हिरनमें ठहरी जो गहरी मुहब्बत आ
कौव्वा जिधर-जिधरको खुशी होके जाता था
फिरता था उसके साथ लगा जा बजा हिरन

इक गीदड़ उस हिरनके लिये आके नाबकार
बोला “हजार जानसे मैं तुमप हूँ निसार
मुझको भी अपना जान गुलाम और दोस्तदार”
और दिलमे ये कि कीजे किसी तौर इसे शिकार
उसके दगा व मकसे वाकिफ़ न था हिरन

गीदड़ ये कहके मकसे जिस दम गया उधर
कौव्वा हिरनसे कहने लगा करके शोर व शर
“ये सख्त मक़बाज़ है कर इससे तू हज़ार^२

इक दिन दगासे तुझको ये पकड़ेगा फ़ितनागर^१
 सुनकर ये बात कौव्वेकी चुप हो रहा हिरन

दिन दूसरे हिरन कने गोदड़ फिर आ गया
 कौव्वेको रोता देख ये बोला वो पुरदगा^२
 “मैं आज देख आया हूँ, क्या खेत इक हरा
 तुम खाओ उसको चलके तो हो शाद दिल मेरा”
 सुनते ही उसके साथ उछलता चला हिरन

जब खेतपर ये लेके गया उसको बदसगाल
 वाँ पहले देख आया था इक दो हिरनका जाल
 ले पहुँचा जब हिरनके तई खेतपर शयाल^३
 जाते ही वाँ हिरनने दिया मुँहको उसमे डाल
 मुँह डालते ही जालमे वाँ फँस गया हिरन

वाँ फड़फड़ाके कौव्वा भी बस आया नागहाँ^४
 गोदड़को देके गाली हिरनसे कहा कि “हाँ
 तड़पे मत इसमे वरना तू होवेगा नातवाँ”
 कौव्वेकी बात सुनते ही हिम्मतको बाँध वाँ
 जैसे कि गिर पड़ा था वहीं फिर उठा हिरन

गोदड़ लगा जब आने हिरनकी तरफ़ भपट
 कौव्वा पुकारा “मार तू सींग इक जो जावे हट”
 या इक खुरी तू ऐसी लगा पांवकी भपट
 जावे जो उसके लगते ही गोदड़का पेट फट
 सुनते ही फिर तो सींग हिलाने लगा हिरन

^१षडयंत्र रचनेवाला

^२धोखेवाजीसे भरा

^३सियार

^४अकस्मात्

गीदड़ने खूब कौव्वेको दीं जलके गालियां
सय्याद वां हुवा था किसी कामको रवां
इसमें शिकारी आके हुआ दूरसे अयां
कौव्वा पुकारा “लेट जा दम बंद करके हां”
दम बन्द करके अपना वहीं गिर पड़ा हिरन

गीदड़ने उसको देखके इक जाके भाड़ी ली
सय्याद उस हिरनको पड़ा देख उस घड़ी
अफ़सोस करके दामकी रस्सी वो खोल दी
कौवा पुकारा “भाग अरे वक़्त है यही”
सुनते ही वांसे चौकड़ी भर कर उड़ा हिरन

सय्यादने जो देखा हिरन उठ चला भपाक
जल्दीसे दौड़ पीछे हिरनके वो सीना चाक
सोंटेको फेक मारा जो फुर्तीसे उसने ताक
भागा हिरन वहीं लगा गीदड़के आ खटाक
सर उसका फूटा और वो सलामत रहा हिरन

गीदड़ने उस हिरनका जो चेता था वां बुरा
पाई उसीने अपनी बंदीकी वहीं सज़ा
था ये तो नख़्ख़ मंने उसे नज़्म^१में किया
पहुंचा ‘नज़ीर’ जब वो खुशी होके अपनी जा
कौव्वेके साथ फिर वो बहुत खुश रहा हिरन

जन्म कन्हैयाजी

हैं रीत जनमकी यूं होती जिस घरमे बाला होता है
उस मंडलमे हर मन भीतर सुख चैन दो बाला होता है
सब बात बिथाकी भूले हैं जब भोला भाला होता है
आनंद मंदीले^१ बाजत है जब भवन उजाला होता है
यों नेक नछत्तर लेते हैं, इस दुनियामे संसार जनम
पर उनके और ही लच्छन हैं, जब लेते हैं औतार जनम

सुभ साअतसे यों दुनियामे औतार गर्भमे आते हैं
जो नारद मुनि हैं ध्यान भले सब उनका भेद बताते हैं
वो नेक महूरतसे जिस दम इस सिश्टिमे जनमे जाते हैं
जो लीला रचनी होती है वो रूप ये जा दिखलाते हैं
यों देखनेमे और कहनेमे वो रूप तो बाले होते हैं
पर बाले ही पनमे उनके उपकार निराले होते हैं

ये बात कही जो मैंने, अब यूं उसको तू अब ध्यान लगा
हैं पंडित पुस्तक बीच लिखा, था कंस जो राजा मथुराका
धन ढेर बहुत बल तेज निपट सामान अनेक और डील बड़ा
गज और तुरंग अच्छे नेके अंबारीहाँदे जीन सजा
जब बन ठन ऊंचे हस्तीपर वो बाने बांध निकलता था
सब साज झलाझल करता था और संग कटक दल चलता था

इक रोज जो अपनी भुज बल पर वो कंस बहुत मगहर हुआ
और हंसकर बोला दुनियामे है दूजा कौन बली मुझ-सा

^१वाजेका नाम

इक बान लगाकर पर्वतको चाहूं तो अभी दूं पलमे गिरा
इस देसके बड बल जितने हैं हैं कौन जो मुझसे होवे सिवा
जो दुष्ट कोई आ युद्ध करे कब मों^१ पर वा का वार चले
वो सामने मेरे ऐसा हो जूं चींटी हाथी पाव तले

वो ऐसे ऐसे कितने ही जो बोल गर्बके कहता था
सब लोग सभाके सुनते थे क्या ताब जो बोले कोई जरा
था एक पुरुष वो यूं बोला "तू भूला अपने बलपर क्या ?
जो तेरा मारनहारा है सो वो भी जनम अब लेवेगा
तू अपने बलपर ए मूरख इस आन अबस हंकार लिया
वो तुमको मार गिरावेगा यूं जैसे भुंगा मार लिया"

ये बात सुनी जब कंसने वां तब सुनकर उसके होश उड़े
भौं^२ मनके भीतर आन भरा और बोल गरब सगरे बिसरे
यों पूछा वो किस देशमें है और कौन भवन आकर जन्मे
कौन उसके मात पिता होवे जो पाले उसको चाहत से
वो बोला मथुरा नगरीमे इक रोज जन्म वो पावेगा
जब होगा सयाना तब तुझको एक पलमें मार गिरावेगा

ये बात सुनाई कंसको फिर और आठ लकीरे वां खींचीं
बसदेव पिताका नांव कहा और देवकी माता ठहराई
उन आठ लकीरोकी बाते फिर कंसको उसने समझाई
सब छोरा छोरी देवकीके हैं जगमें होते आठ यूं हीं
बल तेज गरबमे तूने तो सब कारज ज्ञान बिसारा है
जो पाछे रेखा खींची है वो नेरा मारन हारा है

इस बातको सुनकर कंस बहुत तब मनमें अपने घबराया
जब नारद मुनि उसके पास गये तब उसने उनसे भेद कहा
तब नारद मुनिने भी उसको कुछ और तरहसे समझाया
फिर कंसको वां इस बात सिवा कुछ और न मारग बन आया
जो अपनी जान बचानेका कर सोच ये उसने फंद किया
बुलवा बसदेव और देवकीको इक मंदिर भीनर बंद किया

जब कैद किया उन दोनोंको तब चौकीदार दिये बिठला
इक आन न निकसन पावे ये फिर उन सबको ये हुक्म दिया
सामान रसोईका जो था सब उसके पास दिया रखवा
और द्वार दिये उस मंदिरके तब भारी ताले भी जडवा
हुशियार लगे यूं रहने वां नित चौकीके देने हारे
क्या ताब जो कोठे छज्जे पर इक आन परिन्दा पर मारे

भौ बैठा था जो कंसके मन, वो भरकर नींद न सोता था
कुछ बात सुहाती ना उसको नित अपनी पलक भिगोता था
उस मन्दिरमे उन दोनोंके जब कोई बालक होता था
कंस आन उसे भट मारे था, मन मात-पिताका रोता था
इक मुद्दत तक उन दोनोंका उस मंदिरमें ये हाल रहा
जो बालक उनके घर जनमा, सो मारता वो चंडाल रहा

फिर आया वां इक वक्त जो आये गर्भमे मांके मनमोहन
गोपाल मनोहर मुर्लीधर श्री किशन किशोरन कंवल नयन
घनश्याम मुरारी बनबारी गिरधारी सुन्दर श्याम बरन
प्रभुनाथ बिहारी कान लला सुखदाई जगके दुख भंजन
जब साअत परगट होनेकी वां आई मुकुट धरेंध्याकी
अब आगे बात जनमकी है जय बोलो किशन कन्हैया की

था नेक महीना भादोंका और दिन बुध गिनती आठन की फिर आधी रात हुई जिस दम और हुवा नच्छत्तर रोहनी भी सुभ साअत नेक महरतसे वां जनमे आकर किउन जभी उस मंदिरकी अधियारीमे जो और उजाली आन भरी बसदेवमे बोलों देवकी जी मत डर भौमनमे घेर करो इस बालकको तुम गोकुलमे ले पहुंचो और मत देर करो

जो उसके तुम ले जानेमे यां टुक भी देर लगाओगे वो दुष्ट इसे भी मारेगा पचताने ही रह जाओगे इस आन संभलकर तुम इसको जो गोकुलमे पहुंचाओगे इस बातमे ये फल पाओगे जो इसकी जान बचाओगे वां गोकुल बासी जो इसको ले अपनी गोद संभालेगा कुछ नाम वो इसका रख लेगा और मेह दयासे पालेगा

जो हाल ये वां जा पहुंचेगा तो इस का जी बच जावेगा जो कर्म लिखी है तो फिर भी मुख हमको आन दिखावेगा जिस घरके बीच पलेगा ये वो घर हमको बतलावेगा हम इससे मिलने जावेंगे ये हमसे मिलने आवेगा ना काम हमे कुछ दावेसे ना भगड़ा और परीखेसे जब देखनेको मन भटकेगा सुख पावेंगे उसके देखेसे

है आधी रात अभी तो हां ले जाओ इसे तुम हाल उधर लपटा लो अपनी छातीसे दे आवो जाके औरके घर मन बीच उन्होंके था डर ये दिन होवेगा तो कंस आकर इक आनमें उसको मारेगा रह जावेंगे हम आंसू भर ये बात न थी मालूम उन्हें ये बालक जग निस्तारेगा कब मार सकेगा कंस इसे, ये कंसको भी आपी मारेगा

जब देवकीने बसुदेव से वां रो रोककर तब ये बात कही
 वो बोले क्योंकर ले जाऊं है बाहर तो चौकी बंठी
 और द्वार लगे हैं ताले कुल कुछ बात नहीं मेरे बसकी
 तब देवकी बोलीं ले जाओ मन ईशरकी रख आस अभी
 वो बालकको जब ले निकले सब सांकर टपटप छूट गये
 थे ताले जितने द्वार लगे उस आन झड़ाझड़ टूट गये

जब आये चौकीदारोंमे तब वां भी ये सूरत देखी
 सब सोते पाये उस साअत हर आन जो देते थे चौकी
 जब सोता देखा उन सबको हो निर्भो निकले वांसे भी
 फिर आये यमुना तीर जुंही फिर जमुना देखी बहुत चढ़ी
 ये सोच हुआ मन बीच उन्हें पैर इस जलमे कैमे धरिये
 है रैन अंधेरी संग बालक इस बिपतामे अब क्या करिये

यों मनमें ठहरा फिर चलिये फिर आप ही मन मजबूत हुआ
 भगवान दया पर आस लगा वां जमुना जी पर ध्यान धरा
 यों जूँ जूँ पावं बढ़ाते थे वो पानी चढ़ता आता था
 ये बात लगी जब होने वां बसदेव गये मनमे घबरा
 जब पांव बढ़ाये बालकने जो आपसे और भीगे जलमे
 जब जमनाने पग चूम लिये जा पहुंचे पार वो इक पलमे

जब आन बिराजे गोकुलमे जब फाटक वां भी पाये खुले
 तब वांसे चलते चलते वो फिर नंदके द्वारे आ पहुंचे
 वां नन्द महलके द्वारे भी सब देखे पटपट दूर खड़े
 जो चौकीवाले सोते थे अब कौन उन्हें रोके टोके
 जब बीच महलके जा पहुंचे सब सोते वां घरवाले थे
 हर चार तरफ उजियाली थी जो सांभमे दीवे बाले थे

इक और अचंभा ये देखो जो रात जनम स्त्रीकिशन की थी उस रात जसोदाके घर भी जन्मी थी यारो इक लड़की वां सोते देख जसोदाको और बदलीकर इस बालककी उस लड़कीको वो आप उठा ले निकले आये मथरा जी जब लड़की लाये मन्दिरमे सब ताले मंदिर लाग उठे जो चौकी देनेवाले थे वो भी फिर उस दम जाग उठे

जब भोर हुआ तब घबराकर सुध कंसने ली उस मंदिरकी जब ताले खुलवा बीच गया तब लड़की जनमी इक देखी ले हाथ फिराया चक्कर दे तो पटके वो बिन पटके ही यो जैसे बिजली कौदे हैं जब छूट हवापर जा पहुँची ये कहती निकली “ए मूरख, क्या तूने सोच विचारा है वह जन्मता अब तो सीस मुकुट जो तेरा मारनहारा है”

जब कंसने वाँ ये बात सुनी, मन बीच बहुतसा लजयाया जो कारज होनेवाला है वो टालेसे कब है टलता सौ फ़िक्र करो सौ पेच करो सौ बात सुनाओ हासिल क्या हर आन वही याँ होता है जो माथेके है बीच लिखा हैं कहते बुद्ध जिसे अब याँ वो सोच बड़े ठहराती है तकदीरके आगे पर यारो तदबीर नहीं काम आती है

अब नन्दके घरकी बात सुनो वाँ एक अचंभा ये ठहरा जो रातको जन्मी थी लड़की और भोरको देखा तो लड़का घोड़नाले छूटीं नाच हुआ और नौबतका गुल शोर मचा फिर किशन गरगने नाम रखा सब कुंबेके मिल बैठे आ नन्द और जसोदा और कवात करने वाँ हीरा फेर लगे पकवान मिठाई मेवेके नर नारी आगे ढेर लगे

सब नारी आई गाँवकी और पास पड़ोसिन आ बैठीं
कुछ ढोल मजीरे लाती थीं कुछ गीत जचाके गाती थीं
कुछ हरदम मुख इस बालकका बलिहारी होकर देख रहीं
कुछ थाल पंजीरीके रखतीं कुछ सोंठ सुंठौरा करती थीं
कुछ कहती थीं हम बैठे हैं नेग आजके दिनका लेनेको
कुछ कहतीं हम तो आये हैं आनन्द बधावा देनेको

कोई घुट्टी बैठी गर्म करे, कोई डाले असपंद और भूसी
कोई लाई हँसली और खड़वे कोई कुर्ता टोपी मेवा घी
कोई देखे रूप उस बालकका कोई माथा चूमे मेह भरी
कोई भौवोंकी तारीफ़ करे कोई आँखोंकी कोई पलकोंकी
कोई कहती उम्र बढ़ी होवे ए बीर तुम्हारे बालककी
कोई कहती ज्याह बहू लाओ इस आस मुरादोंवालेकी

कोई कहती बालक खूब हुआ ए बहना तेरी नेक रती
ये बाले उनको मिलते हैं जो दुनियामे हैं बड़ भागी
इस कुम्बेकी भी शान बढ़ी और भाग बढ़े इस घरके भी
ये बातें सबकी सुन-सुनकर ये बात जसोदा कहती थी
ये बीर ये बालक जो ऐसा अब मेरे घरमे जन्मा है
कुछ और कहूँ मैं क्या तुमसे भगवानकी मोपर कृपा है

थी कोने-कोने खुशवक्ती और तबले ताल खटकते थे
कोई नाच रही कोई कूद रही कोई हँस-हँसके कुछ रूप सजे
हर चार तरफ़ आनन्दे थीं वाँ घरमे नन्द जसोदाके
कुछ आँगन बीच बिराजे थीं कोई बैठी कोठे और छज्जे
सौ खूबी और खुशहाली ही दिखलाती थीं सामान खड़ी
सच बात है बालक होनेकी है दुनियामे आनन्द बढ़ी

फिर और खुशीकी बात हुई जब रीत हुई दोकान्दोंकी रखवाई दूधकी मटकी फिर और डाली हल्दी बहुतेरी ये उसपर फेंके भर-भरकर वो उसपर डाले घड़ी-घड़ी कोई पूछे मुख और बाहनको कोई सिखरनी फेंके और मठड़ी इस विधिकी भी रंगरलियोंमें रूप और हुआ नर नारीका और तनकी अबरन यों भींगे जो रंग हो केसर क्यारीका

सुखमंडलमे ये धूम मची और हर नेगी और जोगी भी कुछ नाचें भांड भगीते भी कुछ हिजड़ें पावे बेल बड़ी आनन्द बधावे बाज रहे नरसिंगे सरना और तुरई रंगीन सुनहरे पालने भी ले हाथ खड़े कितनेपर भी हर आन उठाती थीं मानिक क्या गिनती रूपै सोनेकी नन्द ओर जसोदाने ऐसी की शादी बालक होनेकी

जो नेगी जोगी थे उनको उस आन निपट खुशहाल किया पहराये बाने रेशमके और जर भी बख्शिश बहुतेरा और जितने नाचनेवाले थे असबाब उन्हें भी खूब दिया मेहमान जो घर आये थे सब उनका भी आदर-मान किया दिन रात छट्टीके होनेतक, मन खुश दिल लोग लुगाई का भर थाल रूपै और मुहरें दीं, जब नेग चुकाया दाईका

नन्द और जसोदा बालकका, वाँ हाथों छाँवमे थे रखते नित प्यार करें तन मन वारे सुथरे अबरन गहने बनके जी बहलाते मन परचाते और खूब खिलौने मँगवाते हर आन भुलाते पालनेमें वो ईधर और ऊधर बंठे कर याद 'नजीर' अब हर साअत उस पालनेकी और भूलेकी आनन्दसे बंठो चैन करो जै बोलो कान भंडोलेकी

हरिकी तारीफ़

मैं क्या-क्या वस्त्र कहूँ यारो उस शाम बरन औतारीके
सीकिशन कन्हैया मुर्लीधर मनमोहन कुंजबिहारीके
गोपाल मनोहर साँवलिया घनशाम अटल बनवारीके
नन्दलाल दुलारे सुन्दर छबि ब्रजचंद मुकुट भलकारीके
कर धूम लुटइय्या दधिमाखन रछोर नवल गिरधारीके
बनकुंज फिरैय्या रास रचन सुखदाई कान्हमुरारीके
हर आन दिखाये रूप नये हर लीला न्यारी-न्यारीके
पत लाज रखइय्या दुखभजन हरभक्ती भक्ते अधारीके
नित हरिभज हरिभज रे बाबा जो हरिसे ध्यान लगाते हैं
जो हरिकी आसा रखते हैं हरि उनकी आस बजाते हैं

जो भगती हैं सो उनको तो नित हरका नावँ सहाता हैं
जिस ज्ञानमे हरिसे नेह बढे वो ज्ञान उन्हें खुश आता हैं
नित मनमे हर-हर भजते हैं हर भजना उनको भाता हैं
सुख मनमे उनके लाता हैं दुःख उनके जीसे जाता हैं
मन उनका अपने सीनेमे दिन रात भजन ठहराता हैं
हर नामकी सुमरन करते हैं मुख चैन उन्हें दिखलाता हैं
जो ध्यान बँधा है चाहतका वो उनका मन बहलाता हैं
दिल उनका हर हर कहनेसे हर आन नया सुख पाता हैं
हरनामके जपनेसे मनको खुश नेह जतनसे रखते हैं
नित भक्त जतनमे रहते हैं और काम भजनसे रखते हैं

जो मनमें अपने निश्चय कर हैं द्वारे हरके आन पड़े
हर बक्त मगन हर आन खुशी कुछ सोच नहीं मनमे लाते

हर नाम भजनकी परवाह है और काम उसीसे है रखते है मनमे हरिकी याद लगी हर सुमरनमें खुश रहते कुछ ध्यान न ईधर ऊधरका हर आसापर है मन धरते जिम कामसे हरिका ध्यान रहे है काम वही हरदम करते कुछ आन अटक जब पडती है मन दीच नही चिन्ता करते नित आस लगाये रहते है मन भीतर हरकी किरपासे हर कागजमे हर कृपासे वो मनमे बात निहारत है मनमोहन अपनी कृपासे नित उनके काज संवारत है

सीकेशनकी जो जो कृपा है कब मुझसे हो उनकी गिनती है जितनी उनकी किरपाये इक ये भी किरपा है उनको मजकूर करूं जिस किरपाका वो मने है इस भाँत सुनी जो इक बस्ती है जनागढ़ वाँ रहते थे मेहता नसी थी नरसीकी उस नगरीमे दूकान बड़ी सर्राफीकी व्योपार बड़ा सर्राफीका था बस्ता लेखी और बही था रूप घटा और फर्श बिछा प्रतीत बहुत और साख बड़ी थे मिलते-जुलते हर इकसे और लोग थे उनसे बहुत खुशी कुछ लेते थे कुछ देते थे और बहियाँ देखा करते थे जो लेन देनकी बातें थी फिर उनका लेखा करते थे

दिन कितनेमे फिर नरसीका सीकीशन चरनसे ध्यान लगा जब भक्त हरीके कहलाये सब लेखा जोखा भूल गया सब काज बिसारे काम तजे हर नावें भजनसे मन लागा जा बैठे साधु और सन्तोमे नित सुनते रहते किशन कथा था जो कुछ दूका बीच रखा वो दरब जमा और पूजीका मधुपेमके होकर मतवाले सब साधुवोको हर नावें दिया

हो बैठे हरके द्वारेपर सब मीत कुटुमसे हाथ उठा
सब छोड़ बखेड़े दुनियाके नित हर सुमरनका ध्यान लगा
हर सुमिरनसे जब ध्यान लगा फिर और किसीका ध्यान कहाँ
जब चाहतकी दूकान हुई फिर पहली दो दूकान कहाँ

क्या काम किसीसे उस मनको जिस मनको हरकी आस लगी
फिर याद किसीकी क्या उसको जिस मनसे हरकी सुमरन की
सुख चनसे बैठे हर द्वारे सन्तोष मिला आनन्द हुई
व्योपार हुआ जब चाहतका फिर कंसी लेखी और बही
न कपड़े लत्तेकी परवा ना चिन्ता लुटिया थालीकी
जब मनको हरकी पीत हुई फिर और ही कुछ परतीत हुई
धुन जितनी लेन और देनकी थी सब मनको भूली और बिसरी
नित ध्यान लगा हर कृपासे हर आन खुशी और खुशवक्ती
थी मनमे हरकी पीति भरी और थेली करतब रीते थे
कुछ फिक्र न था सन्देह न था हर नाम भरोसे जीने थे

नित मनमे हरकी आस धरे खुश रहते थे वाँ तो नरसी
इक बेटी आलख जन्मी थी मो दूर कहीं वो व्याही थी
और बेटीके घर जब शादी वाँ ठहरी बालक होनेकी
तब आई ईधर ऊधरसे सब नारियाँ उसके कुंबेकी
मिल बैठों घरमे ढोल बजा आनन्द खुशीकी धूम मची
सब नाचीं गाई आपसमे हँ रीत जो शादीकी होती
कुछ शादीकी खुशवक्ती थी कुछ सोंठ सोंठौरेकी ठहरी
कुछ चमक भमक थी अबरनकी कुछ खूबी काजल मेहदीकी
है रस्म यही घर बेटीके जब बालक मुंह दिखलाता है
तब उस बालककी छोछकका ननिहालसे भी कुछ आता है

वाँ नारियाँ जितनी बैठी थीं समधियानेमे आ नरसीके जब नरसीकी वाँ बेटीसे ये बोलीं हँसकर ताना दे कुछ रीत नहीं आई अब तक ए लाल तिहारे मैकेसे और दिलमे थीं ये जानतीं सब वो क्या हूँ और क्या भेजेंगे तब बोली बेटी नरसीकी उन नारियोंके आकर आगे “वो भगती है, बैरागी है, जो घरमे था सो लो बंठे” वो बोलीं “कुछ तो लिख भेजो” ये बोली “क्या उनको लिखिये कुछ उनके पास धरा होता तो आप ही वो भिजवा देते जो चिट्ठीमे लिख भेजोगे वो बाँच उसे पछतावेंगे इक दमड़ी उनके पास नहीं वो छूछक क्या भिजवावेंगे”

उन नारियोंको तो करनी थी उस वक्त हँसी वाँ नरसीकी बलवाके लिखइय्या जल्दीसे ये बात उन्होंने लिखवा दी “सामान है जितने छूछकके सब भेजो चिट्ठी पढते ही वो चीजे इतनी लिखवाई बन आयें न उनमे एक कभी कुछ जेठ जेठाईका कहना कुछ बाते सास और ननदोंकी कुछ देवरानीकी बात लिखी कुछ उनकी जो जो थे नेगी थी एक टहलनी घरकी जो सब बोलीं “तू भी कुछ कहरी” वो बोली उनसे हँसकर “वाँ मँगवाऊँ क्या मैं पत्थर जी” वो लिखना क्या था वाँ लोगो मन चुहल हँसीपर धरना था वाँ चीजोंके लिख भेजनेसे शर्मिन्दा उनको करना था

जब चिट्ठी नरसी पास गई तब बाँचते ही धबरासे गये पछताये मनमे और कहा ये हो सकता है क्या मुझसे ये एक नहीं बन आता है हँ जो जो चिट्ठी बीच लिखे है ये तो काम कठिन इस दम वाँ क्योंकर मेरी लाज रहें

वो भेजे इतनी चीजोंको याँ कुछ भी हो मकदूर जिसे कुछ छोटीसी ये बात नहीं इस आन भला किससे कहिये इस वक्त बड़ी नाचारी है कुछ बन नहीं आता क्या कीजे फिर ध्यान लगा हरि आसापर और मनको धीरज अपने दिये वो टूटीसी इक गाड़ी थी चढ उसपर बे विसवास चले सामान कुछ उनके पास न था रख श्यामकी मनमे आस चले

हरि नाम भरोसा रख मनमे चल निकले वाँसे जब नरसी गो थैलेमे कुछ चीज न थी पर मनमे हरिकी आसा थी थी सरपर मलीसी पगड़ी और चोली जामेकी मसकी कुछ जाहिरमे असबाब न था कुछ सुरत भी लजियार्या थी थे जाते रस्ते बीच चले थी आस लगी हरि किरपाकी कुछ इस दम मेरे पास नहीं वाँ चाहिये चीजे बहुतेरी वाँ इतना कुछ लिख भेजा है मैं फिक्र कल्ले अब किस किसकी जो ध्यानमे अपने लाते थे कुछ बात नहीं बन आती थी जब उस नगरीमे जा पहुँचे सब बोले नरसी आये है और लानेकी जो कुछ बात कहो इक टूटी गाड़ी लाये है

कोई बात न आया पूछनेको जब जाते देखा नरसीको और जितना जितना ध्यान किया कुछ पास न देखा उनके तो जब बेटीने ये बात सुनी कह भेजा क्या क्या लाये हो जो छूछकके सामान किये सब घरमे जल्दी भिजवा दो दो हँस-हँस अपने हाथोसे याँ देना है अब जिस जिसको ये बोले तब उस बेटीसे हरि कृपा ऊपर ध्यान धरो था पास हमारे क्या बेटी अब लानेको कुछ मत पूछो कुछ ध्यान जो लानेका होवे सीकिशन कहो, सीकिशन कहो

इस आन जो हरिने चाहा है इक पलमे ठाठ बनावेंगे
है जो-जो याँसे लिख भेजा इक आनमे सब भिजवावेंगे

सीकिशन भरोसे जब नरसी ये बात जो मुँहसे कह बंटे
बया देखते हैं वाँ उतरे हैं सब ठाठ दो उस जा आ पहुँचे
कुछ छकड़ोंपर असबाब कसे कुछ भैंसोंपर कुछ ऊँट लदे
थे हँसुली खडवे मोनेके और ताशकी टोपी और कुर्ते
कुल कपड़ोंपर अम्बार हुए और ढेर किनारी गोटोके
कुछ गहने भ्रमके चार तरफ कुछ भ्रमके चीज भलाभलके
था नेगमे देना एक जिसे सो उमको बीम और नीम दिये
अब बाह बाहकी धूम मची और दोर अहाहाके ठहरे
थी वो जो टहलनी उनके हाँ वो भूली जिसदम ध्यान पड़ी
सो उसके लिये फिर ऊपरसे इक सोनेकी सिल आन पड़ी

वा जिसदम हरिकी किरपाने यो नरसीकी तप लाज रखी
उम नगरी भीतर घर घरमे जब नरसीकी तारीफ हुई
बहुतेरे आदर मान हुए और नाम बजाईकी टहरी
जो लिपि भेजी थी तानेसे हरि मायासे दो साँच हुई
सब लोग कुटुम्बके शाद हुए खुश वक्त हुई फिर बेटी भी
वो नेगी भी खुशहाल हुए तारीफे कर-कर नरसीकी
वाँ लोग सब आये देखनेको और द्वारे ऊपर भीड़ लगी
ये ठाठ जो थे सब छूछकके सब बस्ती भीतर धूम पड़ी
जो हरिसे काम रखे उनका फिर पूरा क्योंकर काम न हो
जो हरदम हरिका नाम भजे फिर क्योंकर हरिका नाम न हो

सीकिशनने वाँ जब पूरी की सब नरसीके मनकी आसा
इक पलमे कर दो दूर सभी जो उनके मनकी थी चिन्ता

ये ऐसी छल्लक ले जाते सो इनमे था मकदूर ये क्या
 ये आदर मान वहाँ पाते ये इनसे कब हो सकता था
 जो हरि कृपाने ठाठ किया दो एक न इनसे बन आता
 ये इतनी जिसकी धूम मची सो ठाठ वो था हरि किरपाका
 ये किरपा उनपर होती है जो रखते हैं हरिकी आसा
 हरि किरपाका जो वस्त्र कहें वो बातें हैं सब ठीक बजा
 हैं शाह 'नज़ीर' अब हरदम वो जो हरिके नित बलिहारी हैं
 सीकेशन कहो सीकेशन कहो सीकेशन बड़े औतारी हैं

तवकुल या तर्क-तमा

(संतोष या मोहमायाका त्याग)

ले सध्न-ओ-कनाअत साथ मियाँ सब छोड ये बाते लोभ भरी
जो लोभ करे उस लोभीकी नहीं खेती होती जान हरी
सन्तोष तवकुल हिरनोने जब हिंसकी खेती आन चरी
फिर देख तमाशे क्रुदरतके और लूट बहारे हरी भरी
जब आसा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी हरी

टुक अपनी हिम्मत देख मियाँ तू आप बड़ा दातागै है
पर हिंस तमाके करनेमे अब तेरा नाम भिकारी है
हर आन मरे है लालचपर हर साअत लोभ अघारी है
ए लालच मारे लोभ भरे सब हिंस-ओ-हवाकी ख़्तारी है
जब आसा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी हरी

गर हिंस-ओ-हवा-ओ-लालचकी है दौलत तेरे पास धरी
तू खाक समझ इस दौलतको क्या सोना रूपा लाल जरी
हाथ आया जब सन्तोख दरब तब सब दौलतपर धूल पड़ी
कर ऐश मजे सन्तोखी बन जय बोल मुरलियावाले की
जब आशा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी हरी

इस हिंस-ओ-हवाके बीजोंको जो लोभी दिलमे बोते हैं
वो चिन्ता मारे लोभ भरे नित ख़वार हमेशा होते हैं

जो हाथ पसारे लालचकर वो माथा कूटके रोते हैं
और हाथ जिन्होंने खींच लिया वो पाँव पसारे सोते हैं
जब आसा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी हरी

इस लोभपुरीकी गलियोंकी जब मुंहपर तेरे धूल पड़ी
बेचैन रहेगा हर साअत आराम न होगा एक घड़ी
चल लोभके सरपर जूती मार और लोभी तनपर मार छड़ी
कर सुमिरन कुंजबिहारीकी जे बोल मुकुटकी घड़ी-घड़ी
जब आसा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

ये शहद बुरा है लालचका इस मीठेको मत खा प्यारे
ये शहद नहीं ये जल्ल निरा इस जल्ल उपर मत जा प्यारे
जो मक्खी इसमे आन फँसी फिर पंख रहे लिपटा प्यारे
सर पटके रोये हाथ मले हैं लालच बुरी बला प्यारे
जब आशा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

ये लोभ निरी पत खोता है इस लोभी लालच मारेकी
ये लोभ चमक खो देता है हर आन चमकते तारेकी
तू आन पटककर लालचपर बन सूरत लाल अंगारेकी
कर याद मदन मतवारेकी जय बोल कन्हैया प्यारेकी
जब आसा तिशना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

गर हिंस-ओ-हवाके फन्देमे तू अपनी उम्र गँवावेगा
ना खानेका फल देखेगा न पानीका सुख पावेगा

इक दो कपड़ेके तार सिवा कुछ साथ न तेरे जावेगा
ए लोभी बन्दे लोभ भरे तू भरकर भी पछतावेगा
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

इस हिंस-ओ-हवाकी भोलोगे हे तेरी शकल भिकारीकी
पर तुझको अब तक खबर नहीं हे लोभी अपनी ख्बारी की
सन्तोखी साथ सरद तर तज मिन्नत नर और नारीकी
ले नाम किशन मनमोहनका जै बोल अटल बनवारीकी
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

है जब तक तुझमे लोभ भरा तू चोर उचक्का तगडा है
है पेच पुरानी पगड़ीसे जो सरपर तेरे पगडा है
हर आन किसीसे किस्मा है हर वक्त किसीसे भगडा है
कुछ मीन नहीं कुछ मेख नहीं सब हिंस-ओ-हवाका भगडा है
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

अब दुनियामे कुछ चीज नहीं इस लोभीके निस्तारेकी
है कीचड़ उसपर लिपट रही सब हिंस-ओ-हवाके गारेकी
क्या कहिये वाकी बात 'नज़ीर' इस लोभी लोभ सँवारेकी
सब यारो मिलकर जय बोलो इस बात पे नन्ददुलारेकी
जब आसा तिश्ना दूर हुई और आई गत सन्तोख भरी
सब चैन हुए आनन्द हुए बमशंकर बोलो हरी-हरी

महादेवजीका ब्याह

पहले नाँदें गनेशका लीजे सीस नवाय
जासे कारज सिद्ध हो सदा महरत लाय
बोल बचन आनन्दके प्रेम^१ पीत और चाह
सुन लो यारो ध्यान धर महादेवका ब्याह
जोगी जंगमसे सुना वो भी किया बयान
और कथामें जो सुना उसका भी परमान
सुननेवाले भी रहे हँसी खुशी दिन रैन
और पढ़े जो याद कर उनको भी सुख चैन
और जिसने इस ब्याहकी महिमा कही बनाय
उसके भी हर हालमें शिवजी रहें सहाय
खुशी रहे दिन रात वो कभी न हो दिलगीर
महिमा उसके भी रहे जिनका नाम 'नजीर'

यूँ कहते हैं इस दुनियामे इक राजपती हीमाचल था
वो धर्मी अदली^१ नेक चतुर्मुख चन्द दिलावर भुज बल था
गढ़ कोट बड़े गिर पर्वतसे और फ़ौज सिपहका दंगल था
गज हस्ती ऊँचे भोल जरी अंबारी हौदे कुंजल था
रथ बहले म्याना लाल रथे चंडूल पै अतलस मखमल था
खुश रंग तरंगा तेज क्रदमपर ज़ीन भ्रमकता हर पल था
सब साज जड़ाऊ गज गाहें कोई चंचल था कोई कोतल था

हर बिस्तर चीर भलाभलका धन दौलत पल्लू आँचल था
 मुखराज जमुरंद लाल मनो मन मुक्ता भी बेअटकल था
 महलात सुनहरे रंग भरे दरबारे और सुख मंडल था
 कुल बर्तन सोने रूपेके और चेरा चेरीका दल था
 बागात बड़ी तैय्यारीके हर डालीपर गुल और फल था
 जर जेवर ठाठ असबाब बहुत और ऐश खुशीका मरदल था
 घर जगमग जगमग करता था सुख चैन आनन्द और मंगल था
 हर आन तरब हरदम चुहले जी जान हर इक ओंकात खुशी
 वो राजा भी हर वक्त खुशी और परजा भी दिन रात खुशी
 अब याँसे आगे सुनो खूबीसे रख ध्यान
 पारबतीके वस्त्रका जितना हुआ बयान

इस राजा हीमाचलके घरमे इक बाली सुन्दर ब्रेटी थी
 मुख उसका चंद्र गगनका था नाम उसका गौरापारबती
 लब लअले यमन और गुंचा दहन तन बर्गे-समन कद सर्व सही
 पोशाक भलकती ताश जरी अनगिनती पहने मनि मोती
 वो कठले कंगन कुन्दनके वो बाजू छल्ले और मुंदरी
 वो भाँभन बजती चाँदीकी और चौहरे घूंगरू चौरासी
 माँ बापकी प्यारी नाज़ भरी आँखों आगे निस दिन फिरती
 नित रहती हाथों छाँवोंमे और मानी आस मुगदोंकी
 सुख भोजन-----और मेवे पकवान मिठाई दूध दही
 सौ साठ सहेली साथ फिरे हम उमँ भी बाली भोली
 सब प्यार करे तन मन वारें संग खेलें जिसमे बहले जी
 सब गहनेमें सर पाँव लदे तन तन सोहा साल-ओ-चुनरी
 कोई उछले कूदे स्वांग करे कोई हँस-हँस करती अटखेली
 दिन रात हँसें और चैन करें हर आनकी खूबी खुश वक्ती

थी रहती गौरा पारबती इन रूप सरोयों अबरनमे
 सब तौर खुशीसे फिरती थीं नित अपने घर और आँगनमे
 अब यामे आगे मुनो उसकी ये तक्रीर
 जैसे गौराकी निम्बत की होती तदबीर

इक रात वो राजा रानी थे बंठे अपने मंडल मुख से
 मुख पान विराजे दोनोंके और हँस-हँस बाते करते थे
 वो बाली सुन्दर पारबती खुश बैठी आगे दोनोंके
 हर चेरी बाँधे हाथ खड़ी पोशाके पहने और गहने
 मुख देख दुलारी कन्याका यों बोले राजा रानीसे
 अब अपनी गौरा प्यारीकी कुछ फ़िक्र सगाईकी करिये
 तब बोली रानी राजासे कर जोड़ बहुत बिनती करके
 जो आपके मनमे सोच हुआ है वोही मनमे है मेरे
 तुम साहब हो तुम मालिक हो हैं सोभा सबकी अब तुमसे
 दो हुक्म पुरोहितको अपने रख ध्यान सगाईका उसके
 हो राजपती घर ऊँचा हो हर शहर नगरमे जा दूँडे
 वो बर भी ऐसा सुन्दर हो जो मेरी गौराको सोहे
 है जैसे गौरा चन्द्रमुखी बैसा ही बर उसका होवे
 ये बात जो ठहरी दोनोंमे रख मनमे उसके सोय रहे
 जब सुबह हुई तो राजाके मनमे था वो ही ध्यान भरा
 दरबारमे आये खुश होते सिगासन ऊपर पाँव धरा
 अब यामे आगे मुनो और बचन इस आन
 निम्बत गौराकी हुई जगमे जिस उनवान

जब राजा अपने महलोसे सिगासनपर बैठे आकर
 दरबार हुआ गुल लालासा सब हाज़िर नौकर औ चाकर

ये बात कही जब राजाने ले आवो पुरोहितको जाकर उस वक्त पुरोहित आ पहुँचे आशीरबचन रसना लाकर सर पाग बचाईकी सोहे और चन्दन रोली माथेपर तन जामा खासा मलमलका इकलाई रंगी पीतम्बर मुख पान गले मोती माला और मूगा मोना भी अक्सर खुश सूरत मीरत नेक बचन काबिल आकिल ओ दानिशवर मुख देख पुरोहितका अपने य राजा बोले खुश होकर तुम जाओ सगाई गौराकी अब ढूँढो अच्छी साअतपर हं जितने शहर फिरो उनमे ओर सेर करो मल्क और नगर जिस देसमे देखो राजपनी हो ऊँचा घर और दर सुन्दर ठहराओ सगाई गौराकी सुभ साअतसे तुम उसके घर जब ठहर चुके वाँ खड़ीसे दो उसकी हमको आन खबर जिस वक्त पुरोहितमे अपने ये राजाने फर्मान किया खुश हाल पुरोहितने होकर वाँ ढूँढनेका सामान किया

अब याँसे आगे सुनो बात पुरोहित मान चले सगाई ढूँढने गौराकी रख ध्यान हो शाद पुरोहित चलनेको इस शहरमे जब तय्यार हुए यों जल्द चले उस नगरीमे जूँ पवन सहरके वक्त चले हर दीप गये हर नगर गये हर शहर बसे हर देस फिरे पर एक न पाया ऐसा दर जो राजाके परसन्द पड़े मकदूर तलक तो देख फिरे और अपने बस तक ढूँढ चुके तदबीर बहुतसी की लेकिन जो चाहे सो तदबीर करे जो बात लिखी हो कर्मोमे हर तौर वही आकर होवे

जो चाहे फेंरे कोई उसे क्या बात जो तिल भर फेर सके
जब खींची बाग नसीबोंने फिर उसके आगे हार गये
वाँ फिरते-फिरते आखिरको कैलासके ऊपर जा पहुँचे
क्या देखे वाँ कैलास ऊपर शिव आप अकेले हैं बैठे
की अस्तुत और खुश वक्त हुए सुख पाये उनके दर्शनसे
जब मनकी सुख आनन्द हुई फिर थोड़ीसी वाँ केसर ले
कर टीका उसका जल्द बहुत खुश होकर माथेपर शिवके
जिस आन पुरोहित खींच चुके दो केसर टीका शादीका
फिर वाँसे अपने देस फिरे कर काज मुबारकबादीका

अब याँसे आगे सुनो इसका किया बयान
बात पुरोहितने कही राजासे जब आन
दिन कितनेमे वाँ राजासे इस टीकेकी आ बात कही
सुन नावें सदा शिवशंकरका हुई राजाके घर बहुत खुशी
सब खेश कुटुम^१ दिलशाद हुए और परजाको हुई खुशवक्ती
घर बार मंदीले ढोल बजा आनन्द खुशीकी धूम मची
कोई बोली हरदम खुश होकर हो आई सगाई गौराकी
कोई गोद चढ़ाकर कहती थी आ मेरी गौरा पारबती
कोई आँखें चूमे प्यार करे कोई दौड बलाये लेती थी
जब घर-घरमे मशहूर हुई य बात खुशी आनन्द भरी
तब राजाने हर पंडितसे वाँ लगन महरतकी पूछी
सब बोले माह महीनेकी सुभ साअत है और नेक घड़ी
दिन ठहरा ब्याहने आनेका शुभ साअत शादी लगन धरी
तब राजाने शिवशंकरको इस बातकी पत्री लिख भेजी
वो पत्री शिवके पास गई ले हाथ उन्होंने सब बाँची

^१ सगे सम्बन्धी

हो नादियापर असवार चले और आए नगरी राजाकी
वाँ आनके उतरे ब्याहनेको था उस जा इक मैदान बड़ा
खुश वक्त नवीले चाव भरे कर जोगीका सामान बड़ा

अब याँसे आगे सुनो ये बर्नन इस आन
जब वाँसे शिवने किया योगीका सामान
वाँ जाने दूँके कौन उन्हें थे ये तो उतरे जोगी बन
तिरसूल चत्र था काँधेपर था राख भरा सब मुख और तन
इक मैली गद्दी पीठ परी और आख धतूरेका भोजन
वो संख पदम था माल मताअ वो घटा खप्पर भोलीधन
जलपान करे वाँ शिव जिससे वो तो बना तोंबीका बर्नन
और सीस लटाएँ बिखर रहीं मृगछालाका डाले आसन
मुख राख भरा और लाल आँखें कनमुंदरे करमें इक सुमिरन
इक जोगी बनमे शिवजीका था दूल्हाका यही जोर बर्नन
वो राख मली जो मुख तनपर वो राख न थी वो था उबटन
और लाल मुहाना बागा था वो गेरुआ रंगा पैराहन
वो सुमरन थी यो पटुँचेपर जो बाँधे दूल्हा हाथ कंगन
वो सीन लटाएँ यों बिखरी जूँ बाँधे सेहरा नेक लच्छन
वो मुंदरे कानो बीच पड़े यूँ जैसे मोतीका हो कानन
वो लडियाँ सेलीकी ऐसी जूँ जेवर होवे जेबे-बदन
कुछ ठाठ न बाजा गाजा था और कोई संग न साथी था
वो आप सदा शिव दूल्हा थे और नादिया बैल बराती था

अब याँसे आगे सुनो उस योगीकी बात
लोगोंने जिस दम सुनी मले हर एकने हात
वाँ लोग बगत आनेके थे दिन रात सभी मुश्ताक़ बड़े
मालूम न था ये दूल्हा है थे राह खुशीके सब तकते

हर चार तरफ खुशबक्तीसे कुछ बैठे थे कुछ फिरते थे
 वाँ सबने जोगी जान उन्हें हर देस नगर फिरते रहते
 यू उनसे पूछा जोगीजी कोई देखी रात बरात आते
 उस वक्त सदा शिव हँस बोले हैं ब्याहने हम हीं तो आये
 ये बात सुनी जब लोगोंने तब सुनकर सबके होश गये
 दिल सुस्त हुए और मन भी खट्टे फिर जाकर आगे राजाके
 ये बात कही उस जोगीकी तब राजा भी हैरान हुए
 तहकीक^१ किया तो ठीक वही तक्रदोरसे रोये हाथ मले
 सब महलो मन्दिर शोर मचे ये भाग थे कैसे गौराके
 कोई माथा कूटे सीस धुने कोई आँसू हर दम भर लाये
 कोई देखके सूरत गौराकी रो देवे ठंडी साँस भरे
 कोई बोले कर्मो लिखइध्याने जो कर्म लिखी हो सो होवे
 वाँ जिन जिनने ये बात सुनी अफ़सोस उसे फिलफ़ौर हुआ
 जो चाहा था कुछ और ही था ओर परगट याँ कुछ और हुआ

अब याँसे आगे सुनो ध्यान इधरको लाय

आजुर्दा^२ जीसे हुई पारबतीकी माय

रो भीक इधर माँ गौराकी सुन जोगीपर यों उठ बोली
 ये कंसी बिपता आन बनी किस मुशकिलने सूरत खोली
 ये मेरी गौरा पारबती बाली नेकी सुन्दर भोली
 ये पाली धन और दोलतकी ये फूल तराजूकी तोली
 मुख जिसका चमके चाँदनमे और मिस्री होटोमे घोली
 वो अलके मुखपर छूट रही कस्तूरीने जिससे बूली
 हर कंगन जिसका बेश बहा^३ हर पहुँची जिसकी अनमोली
 सो पल्ले बाँधी ऐसेके जो पहने कंठा और भोली

^१ छान बीन ^२ तुरन्त ^३ उदास ^४ बहुमूल्य

तन राख मले गुदड़ी ओढ़े खा आख धतूरेकी गोली
केस बिखोरे लाल नयन जो लाल महावरकी गोली
ने महल मकाँ ने ज़र जेवर ने बहल म्याना रथ डोली
चढ़ बैल बजाता संख फिरे बन परबत खाता भकभोली
अब लाज गई कुलमे मोरी सब दुश्मन बोले कल बोली
तबबीर नहीं कुछ बन आती तकदीर जो होनी थी हो ली
थी मेरी गौरा प्यारीकी ये बात छटीकी रात लिखी
कुछ और न हो होवन्त वही जो माथेमे हो बात लिखी

अब याँसे अगे सुनो शिवने जब उस आन
अपनी मायासे किये क्या क्या वहाँ सामान
तब राजाने भी रिस खाकर दरबार पुरोहित बुलवाये
जब आये तो ये बात कही ये कैसा टीका कर आये
सब लोगोंने भी नाँव धरे तब चुप हो शिवके पास आये
लजियाना देख पुरोहितको बाँ ठाठ ये शिवने दिखलाये
जो बावने भाडे खार-ओ-खसक^१ और बादल पानी छिड़काये
बानात कनातें शमियाने दल बादल तम्बू तनवाये
नमगीरे^२ भालर मोतीके किमख्वाब मशज्जर^३ भलकाये
कुल फ़र्श हरीर और देबाके खुश रंग चमकते बिछवाये
मुक्केश ज़रीके लच्छे भी फिर जागह जागह लटकाये
गुल इत्र गुलाब और पान धरे कस्तूरी अम्बर रखवाये
भर थाल इलायची लौंगोंके फिर खूब तरहसे चुनवाये
चंगेर धरें सौ जेब भरें और तरा हाथी भी गुंधवाये
हर चार तरफ़ तय्यारीके असबाब तरबके ठहराये

^१ काँटे तिनके

^२, ^३ रेसमी कपड़ोंके नाम

जो ठाठ बड़े हैं शादीके इक पल भरमें सब भ्रमकाये
आकासके देवता जितने हैं बन खूब बराती आन भरे
वो पहला भी मैदान भरा और वैसे सौ मैदान भरे

अब याँसे आगे सुनो खुश होकर इस आन
जैसे शिव दूल्हा बने, उसका किया बयान
जब बैठे शिवकी शादीमें कुल तंतीस कोट जो हैं देवता
विशुन आप थे आये और ब्रह्मा और इन्दर नारद मुनि उस जा
और शुक्कर और बृहस्पति भी और नाँव सनीचर हैं जिनका
वो रूप सरूप और पोशाके वो ऊँची शानें जेबफ़ज़ा
उस वक़्त खुशीसे मसनदपर शिव बैठे बनकर यों दूल्हा
मुख पानकी लाली कर मेहदी और आँखों बीच लगा कजरा—
हर तार चमकता चीरेका और ताश सुनहरीका बागा
उस तारज़रीके चीरेपर जो मेह चमकता मुकट धरा
हर कान मुरस्सा' कुन्दन थे और मुखपर सोनेका सेहरा
वो सेहरा मुखपर यों चमके जूँ सूरज होवे किरन भरा
वो मोती भाल गले झलके और उनमे लालोंकी माला
वो बाँक जड़ाऊ बाज़ूपर और कंगना पहुँचे भ्रमक रहा
जब बैठे शिव यूँ दूल्हा बन सब परियोंका वाँ नाच हुआ
और करना सरना झाँझ बजे नक्कारा गूँजे शोर मचा
ये ठाठ बनाकर दिखलाया जब शिवने माया अपनीका
हर चार तरफ़ आनन्द हुए गुल शोर हुआ खुशवक्तीका

अब याँसे आगे सुनो इस शादीके तौर
देख इसे जीसे खुशी लोग हुए हर ठौर

ये धूम मची वाँ आपसमें क्यों लोगो कैसा ये जोगी
हम समझे इसको जोगी थे और निकला ये तो राजपती
नर नारी निकले छोड़ मंदिर रख मनमे चाह तमाशेकी
और बुढ़िया बूढ़े तिफ़ल जवाँ और कुबड़े लँगड़े बहरे भी
सब देखनेको वो आन भरे सौंठठ हुए और भीड़ लगी
ये बात सुनी जब राजाने तब चढ़कर कोठेपर जल्दी
जब देखा तो वाँ कोसोंतक है जोर बरात आकर उतरी
खुशवक्त हुए खुशहाल हुए बर आई सब मनता मनकी
हुई महलों मन्दर बीच खुशी और ऐश-ओ-तरबकी धूम मची
दिल शाद हुए सब कुंबेके माँ गौराकी भी शाद हुई
मुँह देखके खुश हो बेंटीका और माथा चूमे घड़ी-घड़ी
कोई पारबतीके पाँव छुवे कोई होवे हर दम बलिहारी
कोई धन धन भाग कहे रह रह कोई वारी हो सौ सौ बारी
अब चाव यही वो चाह यही जो देखे सूरत दूल्हाकी
थे जेसे जोगी देख उन्हें वाँ राम दिलसे पामाल हुए
जब ठाठ ये देखे शादीके सब शाद हुए खुशहाल हुए

अब याँसे आगे सुनो भोजनके सामान
जिसकी है तारीफ़से मीठा हुआ बयान
जब राजाने यह हुक्म किया तैय्यारी हो अब भोजनकी
मँगवाये मंदे लाखों मन और मेवे मिसरी शक्कर घी
हलवाई हज्जारों आ बैठे कर गरम कढ़ाव रख थाली
कर खोये सुथरे दूध मंगा, और डाली चीनी शकर तरी
फिर डाला ख़ूब गुलाब उसमें और डाली डलिया मिसरीकी
अंबार लगाये पेड़ोंके और ढेर गुलाबी और बर्फी
फिर लड्डू भी तय्यार किये दे क्रन्द बहुत बादाम गरी

बुराकि मुँगदर^१ और खुमें भी खुश रंग इमिती बीरबली
 वो खूब जलेबी और खजले वो खेवर बालू साई भी
 सब इतने वाँ तैय्यार हुए जो ठाँव न रखनेको पाई
 की अर्ज ये जाकर राजासे, सब जिन्स वो अब तय्यार हुई
 टुक देखो तुम भी आन उसे जो है कितनी और है कमी
 जो हुक्म हुआ था इतनी तो सौ खूबीसे बनवा डाली
 जब राजाने भी आँख उठा हर जिन्स बहुत सुथरी देखी
 मगरूर^२ हुए ये कह मनमे जिस आन बरानी आवेगे
 सब अपने मन भर खावेगे और ढेर पड़े रह जावेगे

अब याँसे आगे सुनो ऐश खुशीकी बात
 जैसे-जैसे ठाठसे शिवकी चढ़ी बरात
 जब रात हुई तब शिवशंकर खुशवक्तीसे असवार हुए
 सब आगे पीछे दूल्हाके दिल शाद बराती साथ चले
 फ़ानूस रंगीं झिलमिलियाँ और झाड़ बड़ी गुलकारीके
 हर आन जडाऊ चँवर ढले और सीसके ऊपर छतर फिरे
 वो परियाँ नाचे तल्लोंपर पोशाके गहने भ्रमक रहे
 नक्कारे नौबत तबल निशाँ अलगूजे बजते और डफले
 हरसरनामे धुन पीं पीं की और करना तुरई भोंभ बड़े
 करौं धों से धू धू बाज रहे और ताशे बजते कड़कड़से
 मिरदंग मंदीले ताल बजे और सारे घुंगरू भी झनके
 वो ढाल धमाधम शोर करे और झपने भी झमझम करते
 वो हाथी कुंजल और मकने अंबारी हौंदे और बँगले
 वो झूमते चलते क़दम-क़दम और बजते जाते घंटा ले

^१ मुँगदल

^२ अभिमानमे भर उठे

वो भाड़ मशालें पंजशाखे सब रोशन ऊँचे मशालोंके
वो सहारा भूमका कोसों तक हर ठौर उजाली जा पहुँचे
वो घोड़े म्याने घोड़ बहले रथ ऊँचे पहिये ढलते थे
सब बाजे बजते जाते थे और हौले-हौले चलते थे

अब याँसे आगे सुनो चले जो भोला नाथ
और बराती भी हुए ऐसे उनके साथ
फिर और हज़ारों साथ चले जो भूत प्रेत और राक्षस थे
डील ऊँचे उनके ब्रज नमन और सोस भी उनके गुम्मतसे
हर पगड़ उनका सौ मनका और मोटे रस्सोंके पटके
और पगड़ोंपर तुरोंकी तरह थे साखू बरके बर रखे
कोई नंगे सर वो बाल उसके जूँ बाँस बड़े दस दस गजके
कोई मुंड कोई हंड और कोई बिन पाँव नाचे और कूदे
कोई हाथी रखे काँधेपर कोई ऊँट बगलमे दबकाये
कोई अरना भैंसा गोद लिये कोई गेडा सरपर बिठलाये
कोई साँप गलेमे लिपटायें फन उनके दमपर दम चूमे
कुछ लम्बे सोंटे लोहेके कुछ हाथ लिये भारी लकड़े
कोई गावे फाड़ गला अपना कोई नृत करे चकफेरीके
कोई शोर करे खुशहालीसे यों जैसे हाथी चिघाड़े
कोई हाथ नचावे रह रहकर कोई नयन खुशीसे मटकावे
कोई लम्बे-लम्बे डग रखे कोई दस-दस गजकी जस्त करे
कुछ रंग अजब कुछ ढंग नये सब हँस-हँस धज दिखलाते थे
थे धूम मचाते रस्तेमे हर आन उछलते जाते थे

अब याँसे आगे सुनो शादीके अतवार^१
चले सदा शिव जिस तरह पारबतीके द्वार

^१ढंग, तरीके

जब देखा वाँके लोगोंने वो कोसों फैला उजियाला
 वो सरनाकी आवाज सुनी और नक्कारोंका शोर सुना
 सब बोले बरात अब आती है ये शोर उजाला है-उसका
 तब राजाने भी भेज दिया हरकारेपर वाँ हरकारा
 वो आते जाते जल्द बहुत जो देखते वाँ सो कहते आ
 कोई कहता अब वो आ पहुँचे कोई कहता आये अब उस जा
 कोई कहता बहुत बराती है और साथ लिये है ठाठ बड़ा
 कोई कहता इतने हाथी है कुछ छोर नहीं जिनका मिलता
 कोई कहता घोड़े हाथी है अंबोह रथोंका है आता
 ये बातें सुनकर राजाने घर आके मनके बीच कहा
 याँ लोग बहुतसे आते है खेमाके बीच कहाँ ये जा
 ये भीड़ कब उसमें मिल बैठे कुछ बन नहीं आता करिये क्या
 परधान खड़े थे जो आगे जब उनसे अपना भेद कहा
 ये ठाठ जो अब याँ आता है कुछ तुमने इसका फ़िक्र किया
 वो बोले क्या तदबीर करें और क्या-क्या इसका ध्यान करें
 आ जावे इतना ठाठ जहाँ वाँ किस-किसका सामान करें

अब याँसे आगे सुनो बातें हैं ये ठीक
 आये शिव जिस तरह वाँ द्वारेके नजदीक
 जिस आन बरात आई दरपर ये खूबी ठहरी जेब भरी
 वो परियाँ नाचों तल्लोंपर झनकारें मार मजीरोंकी
 वो डंके लगते घोंसेपर धुन करना सरनाकी ऊँची
 दरवाजे कोठे गूँज रहे आवाज सुहानी उनकी थी
 वो तबल बजों और डफ़लें भी नकारे ताश और तुरई
 वो बुहल-ओ-तबले^१ झलनी बाजे और घर-घरमें आवाज गई

^१झोल नगाड़े

कुल जेब^१ बराती चार तरफ़ और बीच सवारी दूल्हाकी सब छज्जे-छज्जे कोठोंपर वाँ देखी जीनत और खूबी सब वाह करें और चाह करें और ठाठको देखे घड़ी-घड़ी हों देखके सूरत दूल्हाकी वाँ सौ दिलसे वो बलिहारी वो आते थे जो साथ लदी और आतशबाजी भी छूटी महताब अनार और फुलभरियाँ हथफूल हवाई खूब कड़ी इक पहर तलक दरवाजेपर बाँ फूल रही फुलवारीसी सब हाथी घोड़े बेल उछले, गुल शोर हुआ और धूम मची सब शाद हुए खुश वक़्त हुए ये देख तमाशे खूबीके कर वस्फ़ बहुत बलिहार हुए उस दूल्हाकी महबूबीके

अब याँसे आगे सुनो शादीके रस और जिसकी हर इक रस्मसे जी खुश हो फ़िलफ़ौर जब राजाके दरवाजेपर हुई आन बरात इस तौर खड़ी सब बाजे बाजे देर तलक और छूटी आतशबाजी भी जब समधी आये मिलनेको और समध मिलावेकी ठहरी उस वक़्त बुलाया दूल्हाको तू होवे जीनत मन्दिरकी वो चाँदसा मुख वो सर सेहरा वो पहुँचे कँगना तार जरी वो रूप सुहाना जब देखा हुई सबके मनके बीच खुशी कोई बोला दूल्हा खूब मिला इस दूल्हाके में बालिहारी कोई बोली में इस दूल्हापर अब वारूँ भर भर मन मोती कोई देखके होती शाद बहुत कोई वारके पानी पीती थी छन कहकर उस जा दूल्हाने ली नेग अशर्फी बहुतेरी इस तौर कहे छन खूबीसे जो हर इक मुँहको देख रही सब महलों मन्दर बीच हुई आनन्द खुशी और खुश वक़्ती

^१सजे हुए

जब बैठे दूल्हा मन्दिरमें मन बीच खुशीकी बात लिये
जनमासे बीच बरात उतरी वो ठाठ खुशीका साथ लिये

अब याँसे आगे सुनो इस सूरतकी बात
जनमासेमे जिस तरह बैठी आन बरात
जब जनमासेके बीच गये कुछ बैठे जा दालानोंमे
कुछ आँगनमे कुछ बैठकमे कुछ बैठे बालाखानोंमें
कुछ आन बिराजे ड्योढ़ीमे मशगूल खुशीकी बातोंमे
कुछ बाहर आकर बैठ रहे कुछ बैठे रथ और म्यानोंमे
हर ठौर बजे करना सरना और तुरई तबल भी महलोंमे
हर जानिब धूँ धूँ बाज रहे नकारे रस्ते कूचोंमें
और बाजे नौबत भाँझ बड़ी और शादीकी रँगरलियोंमे
कुछ बात न समझे कान धरी उन बाजोंमे उन धौंसोंमे
कुछ म्याने रथ और घोड़े बहले ला आन खड़ी कीं राहोंमें
कुछ घोड़े उछले बैल लड़े कुछ हाथी भूले गलियोंमे
थे जितने वाँ बाज़ार बने कुछ उतरे उन बाज़ारोंमे
और जितने वाँ थे बाग़ लगे कुछ उतरे जा उन बाग़ोंमे
जब ठौर न पाई बस्तीमे कुछ उतरे शह्र सवादोंमें
वाँ डेरे तम्बू तान लिये और बैठे खुश वीरानोंमें
वो थे वाँ जिस जिस तौर उपर कुल फ़रहतके आहंग^१ हुए
गुल शोर हुए और नाच हुए और राग हुए और रंग हुए

अब याँसे आगे सुनो इसका भी बिस्तार
जिस सूरतसे आनकर ठहरी वाँ ज्योनार
जिस वक़्त बराती बैठ चुके तब राजाने वाँ लोगोंको
ये हुक्म किया अब खूबीसे इन सबको जाकर भोजन दो

^१ खुशीके सामान

सब चाकर नौकर जल्द चले और जनमासेमें आकर वो यों बोले अब सब किरपाकर ज्योनार मंदिरके बीच चलो अब तुम भी जेमो और उनको दिलवावो जिन्हें दिलवानी हो मुकते ढेर मिठाईके दरकार हों जितने उतने दो इस बातको सुनकर हँस बोले है खूब पर इतनी बात सुनो ये दो बालक जो बैठे है तुम पहले इनको जेमवा दो वो गोद उठाकर खुश होते ज्योनारमें लाये दोनोंको थे जितने वाँ अम्बार लगे और ढेर मिठाईके थे जो इक डेढ़ निवाला कर बैठे फिर मचले अब कुछ और रखो हैरान हुए और चुप रह गये मन बीच बहुत शमिन्दा हो मगरूर हुए थे कहकर यों जा भोजनके अम्बार करे सो उसकी तो ये शक्ल हुई अब काहेको ज्योनार करें

अब याँसे आगे सुनो खुश होकर ये शान
जैसे दूल्हाके हुए फेरोंके सामान
जब साअत आई फेरोंकी तब ठहरी उस जा ये खूबी
घर बीच बुलाया दूल्हाको और फेरोंकी तथ्यारी की
कुछ बैठे लोग इधर ऊधर सब अपने मनके बीच खुशी
जो फ़र्श मुकरर है उसपर आ बैठे दूल्हा दूल्हन भी
जब दूल्हा दूल्हन मिल बैठे तब रीत हुई गँठजोड़ेकी
वो पंडित आये हवन किया सब लाकर उसकी चीज रखी
सब पंडित बैठे बेद, पढ़े कोई बैठे डाले शक्कर घी
गनेशकी पूजा करके वाँ फिर पूजा की नोप्रहोंकी
भर थाल जवाहर नेग मिले लीं जल्दी सो उसे और नेगी
और ले ले नेग दुआएँ दें सब दूल्हा दूल्हनको नेगी
सुभ साअत नेक महरतसे वो दूल्हा दूल्हन रूप भरी

इस तौर फिरे मिल आपसमें हैं रीत जो होनी फेरोंकी
जब फेरे चार हुए आकर कुल ऐश-ओ-तरबकी धूम मची
हर चार तरफ़ चमकी भूमकी खुश हाली खूबी खुश वक्ती
हर मनमे सौ सौ ऐश भरे और फ़रहतसे पहचान हुई
हैं जगमें जो आनन्द खुशी वो जाहिर सब उस आन हुई

अब याँसे आगे सुनो और बचन दो चार

आये बाहर शाद हो दूल्हा जिस अतवार
वो फेरे भी जिस वक्त हुये इस खूबी और खुश वक्तीसे
जो रस्मे और मुऐय्यन थीं उनसे भी सब शाद हुए
दस रोज़ हुए फिर टहलैमे और चाव बर आये सब दिलके
शिव बाहर आये मंडलसे जूँ सूरज वक्त सहर निकले
वो चीरा सरपर चमक रहा वो मुकुट जडाऊ भी दमके
तन बागा भलके हर साअत और लालोंकी माला चमके
कुछ कानों मोती चमक रहे कुछ बाँक भूमकते बाजूके
सौ ज़ेब भूमकसे खुश होते आ मसनदपर अपने बंटे
वो खूबी सु भाव दूल्हाकी सब देखें वाँके लोग खड़े
सब होकर खुश ये बात कहें ये दूल्हा ऊपर ठाठ बड़े
वो देखें अपनी आँखोंसे हों जगमें भाग बड़े जिनके
वो राजा रानी शाद बहुत और लोग खुशी सब कंबूके
वो चेरा चेरी भी खुश दिल और नौकर चाकर खुश फिरते
उस नगरीके तालअ चमके उन लोगोंके भी बरत खुले
जिस तौर हुई वो खुश हाली कब उसकी हालत जाय कही
हर चार तरफ़ खुश वक्तीके गुल शोर हुए और धूम हुई

अब याँसे आगे सुनो बात खुशी आमेज
जो जो राजाने दिया उस जा दान दहेज

जिस आन हुए शिव चलनेको तब लाकर ये असबाब धरे
 पोशाकें रंगीं जेब भरीं हर तार बड़ा जिनका भ्रमके
 जर जेवरके वां ढेर लगे जो बाहर होवे गिनतीसे
 वो मोती हीरे अनमोले वो लाल जमुरंदके डिब्बे
 वो कलसे बट्टे चाँदीके वो थाल कटोरे सोनेके
 वो फ़र्श सुनहरे नक्श भरे जो बिछते महलों बीच बड़े
 वो चीरे खूब लिबासोंके और गिनतीमें थे बहुतेरे
 वो चेरियाँ अच्छी सूरतकी सर पाँव तलक जेवर पहरे
 वो कुंजन भोल भलकनीके अंबारी जिनपर और हीदे
 वो घोड़े गुलगूँ मिस्ल हवा जरदोजी जिनपर जीन बँधे
 चूँडल भलकते वो जिनपर बानात जरीके थे पद
 वो हथ बहले और घोड़ बहले सब ठाठ चमकते जिनके थे
 वो रंगीं भालरदार रथे वो बैल बहुत जिनके ऊँचे
 ये ठाठ रखा दरवाजेपर और ब्रुगदी वोभ उठानेके
 थे जितने शादी व्याह नियत सामान जो वाँ तय्यार हुए
 हर ठाठके वाँ दरवाजेपर हर जानिब सौ अंबर हुए

अब याँसे आगे सुनो राजाने उस आन
 जो बाते शिवसे कहीं उनका किया बयान
 ये ठाठ कि धन दौलतके तब राजा शिवसे यूँ बोले
 कुछ बन नहीं आया जो हमसे मन बीच हुए हम शरमिन्दे
 किस लायक हूँ जो देते हम असबाब तुम्हारे लायकके
 तुम अपने जुगमें ऐसे हो जो पालते हो लाखों हमसे
 है भाग हमारे बहुत बड़े जो चरन तुम्हारे हम देखे
 इस नगरीमें इस मंडलमें तुम आये अपनी कृपासे
 तुम थाम न लेते जो हमको फिर कहिये क्योंकि हम थमते

जो कृपा तुमने हमपर की कब अस्तुति इसकी हो हमसे हम चीज नहीं कुछ गिननेकी और तुम हो लाखों खूबीके इस आन दया जो आपने की वो देखी काहेको हमने हर वक्त हमारी बाँह रहो कर कृपासे अपनी गहते मन बीच हुए हम बहुत खुशी और भाग हमारे जाग उठे तुम लाज हमारी रखनेको हर आन रहो कृपा करते जो मनमे थी सो बात कही अब और कहें क्या हम आगे जब राजाने ये बात कही और हरदम अधिक अधीनीकी तब शिवने हँसकर राजाके वाँ मनकी बहुत तसल्ली की

अब याँसे आगे सुनो मन ईधरको। लाय

पारबती वाँ जिस तरह घरसे हुई बिदाय

जब शिवने वाँ यह हुक्म किया तय्यारी हो अब चलनेकी और आप मंदिरके बीच गये तो होए बिदा वाँ दूल्हनकी ये बात बिदाकी सुनते ही वाँ गौराकी माँ यों बोली सब तौर तुम इसके मालिक हो ये चेरी मने तुमको दी मन इसका बहुत रखियो खुशी मत मैला कीजो इसका जी प्यारी है मनकी मेरे और रोशनी मेरी आँखोंकी यों कहकर बोली गौरासे मिल मुझसे मेरी पारबती जब गौरा प्यारी दौड गले वाँ अपनी माँके आ लिपटी वो माँ भी रोई देख उसे और रोई जितनी थीं घरकी माँ देखके रोई गौराको कर प्यार उसे यों कहती थी तू आँखें रो रो लाल न कर मैं तेरे मुखकी बलिहारी कुछ अपने मनके बीच न ला मैं तुझको जल्द बुलाऊँगी फिर आखिर वाँ इस रोतीको कर प्यार बहुत सा घड़ी-घड़ी चंडूल मँगाकर ड्योढ़ीपर वाँ सबने रोती बिठलाई

